E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 142 | प्रयागराज, शुक्रवार 18 सितम्बर, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

रिपोर्ट- ट्रम्प-जिनपिंग की मुलाकात से पहले ताइवान में सकते में, जापान-साउथ कोरिया को चिंता, चीन से डील के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति नरम न पड़ जाएं

वॉशिंगटन डीसी। ट्रम्प और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की 24 सितंबर को होने वाली मुलाकात से पहले ताइवान में डर बढ़ गया है। ताइवान को आशंका है कि चीन के साथ कोई बड़ा आर्थिक समझौता करने के लिए ट्रम्प उसके मुद्दे पर नरम रुख अपना सकते हैं। जापान और साउथ कोरिया समेत अमेरिका के सहयोगी देशों को भी यही चिंता सता रही है। रॉयटर्स के मुताबिक, ट्रम्प ने मई में ताइवान को अमेरिकी हथियारों की बिक्री को चीन से डील के लिए 'सौदेबाजी का जरिया' बताया था। अब जिनपिंग फिर ताइवान का मुद्दा ट्रम्प के सामने उठा सकते हैं। ऐसे में ताइवान को डर है कि ट्रम्प चीन से कोई बड़ी डील निकालने के चक्कर में कहीं उसके मुद्दे पर पीछे न हट जाएं। अमेरिका के किसी नरम बयान से भी बीजिंग को ताइवान पर दबाव बढ़ाने का हौसला मिल सकता है।ताइवान का मामला समझिए- ताइवान चीन के करीब स्थित एक द्वीप है। वहां अपनी सरकार है

और लोग अपने नेताओं को चुनाव के जरिए चुनते हैं। ताइवान खुद को अलग तरीके से चलाता है, लेकिन चीन उसे अपना हिस्सा मानता है। चीन चाहता है कि ताइवान एक दिन उसके साथ मिल जाए। बीजिंग ने यह भी साफ कर रखा है कि जरूरत पड़ी तो वह इसके लिए सैन्य ताकत का इस्तेमाल कर सकता है। दूसरी तरफ, अमेरिका ताइवान को हथियार देता है ताकि वह अपनी सुरक्षा कर सके। लेकिन अमेरिका ने यह साफ नहीं किया है कि अगर चीन ताइवान पर हमला करता है, तो अमेरिकी सेना सीधे उसकी मदद के लिए युद्ध में उतरेगी या नहीं। यही वजह है कि ताइवान को लेकर अमेरिका का रुख हमेशा से थोड़ा अस्पष्ट रहा है। वॉशिंगटन चीन को खुलकर चुनौती भी नहीं देता और ताइवान को अकेला भी नहीं छोड़ता। जापान को किस बात की चिंता है? ताइवान को लेकर सिर्फ वहां की सरकार ही चिंतित नहीं है। जापान भी ट्रम्प-शी की बैठक को करीब से देख रहा है। रॉयटर्स के मुताबिक, जापान चाहता है कि अमेरिका ताइवान को लेकर अब तक इस्तेमाल की जाने वाली कूटनीतिक भाषा पर कायम रहे। टोक्यो यह भी चाहता है कि बैठक में ताइवान का मुद्दा इतना न छाए कि दोनों देशों के रिश्ते में तनाव और बढ़ जाए। जापान के दो सीनियर नेताओं ने रॉयटर्स को बताया कि उनकी सबसे बड़ी चिंता यह है कि ट्रम्प चीन से अमेरिकी सामान खरीदने का बड़ा समझौता हासिल करने के बदले ताइवान के मामले में कोई रियायत न दे दें। अमेरिका में अगले साल मिडटर्म चुनाव होने हैं।

आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

जापान में 1 लाख लोग 100 साल से ऊपर, इनमें 88 फीसदी महिलाएं- सेहतमंद खाना, एक्टिव रहना और समय पर इलाज लंबी उम्र का राज

टोक्यो। जापान में 100 साल या उससे ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या पहली बार 1 लाख का आंकड़ा पार कर गई है। इनमें 88 फीसदी महिलाएं हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के मंगलवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, देश में अब 1,07,677 लोग ऐसे हैं, जिनकी उम्र कम से कम 100 साल है। इनमें महिलाएं 94.3 हजार और पुरुष 13.4 हजार हैं। पिछले साल की तुलना में 100 साल से ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या करीब 8 हजार बढ़ी है। हांगकांग यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के सोशल साइंस प्रोफेसर स्टुअर्ट गीटेल-बास्टेन के मुताबिक, जापान में लंबी उम्र के पीछे कई वजहें हैं। स्वस्थ खान-पान, रोजमर्रा की जिंदगी में सक्रिय रहना, सस्ती स्वास्थ्य व्यवस्था और नियमित स्वास्थ्य जांच इनमें अहम हैं। महिलाओं के ज्यादा जीने की 3 बड़ी वजहें- रिपोर्ट के मुताबिक, महिलाओं के पुरुषों से ज्यादा जीने के पीछे जीवनशैली भी एक वजह है। उस पीढ़ी के पुरुषों में धूम्रपान और शराब पीने की आदत ज्यादा थी। वे औद्योगिक और शारीरिक मेहनत वाले कामों में भी ज्यादा शामिल थे, जिसका लंबे

पुरुष थे। युद्ध में बड़ी संख्या में पुरुषों की मौत से उस पीढ़ी में महिलाओं का अनुपात बढ़ गया। 106 साल के सातो आज भी अपना काम खुद करते हैं-निगाता प्रांत के पहाड़ी इलाके ओसोनोगो गांव में रहने वाले तेत्सुओ सातो भी जापान के 1 लाख से ज्यादा 100+ उम्र वाले लोगों में शामिल हैं। सातो अब 107 साल के होने वाले हैं। वह अपने बेटे, बहू, कुत्ते और बिल्ली के साथ [illegible] शुरू कर दिए थे। कुनिको कहती हैं, 'हम बुढ़ापे में एक-दूसरे का ख्याल रखने लगे हैं।' दो दिन बाद सातो 107 साल के हो जाएंगे। उनकी सालगिरह के लिए परिवार की चार पीढ़ियों के एक दर्जन से ज्यादा सदस्य एक पारंपरिक हॉट स्प्रिंग होटल में जुटेंगे। यहां चार पीढ़ियों की साथ में तस्वीर भी ली जाएगी। सातो का मकसद 100 साल तक जीना था। अब वे 110 साल तक जीना चाहते हैं। 2070 तक 4 करोड़ से ज्यादा घट सकती है आबादी-जापान की आबादी 2008 में करीब 12.8 करोड़ के साथ सबसे ज्यादा थी। सरकारी अनुमान के मुताबिक 2070 तक यह घटकर करीब 8.7 करोड़ रह सकती है। यानी आने वाले दशकों में देश की आबादी 4 करोड़ से ज्यादा घट सकती है। फिलहाल जापान में हर एक बच्चे के जन्म पर करीब दो लोगों की मौत हो रही है। इसका सीधा असर देश की कामकाजी आबादी पर पड़ रहा है। काम करने वाले लोगों की संख्या घट रही है, जबकि बुजुर्गों की संख्या बढ़ रही है। इससे सरकार पर टैक्स और सामाजिक सुरक्षा का बोझ बढ़ रहा है। जापानी सरकार पिछले कई दशकों से लोगों को ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

बांग्लादेश में टॉर्च की रोशनी में मरीजों का हो रहा इलाज, 20 साल का सबसे बड़ा बिजली संकट,भारत के लिए अब मदद मुश्किल

ढाका। बांग्लादेश इस समय 20 साल के सबसे गंभीर बिजली संकट से जूझ रहा है। कई इलाकों में रोजाना घंटों कटौती हो रही है। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक, बारिशाल के एक अस्पताल में बैकअप जनरेटर का डीजल खत्म होने के बाद नर्सों को मोबाइल की टॉर्च की रोशनी में मरीजों की देखभाल करनी पड़ी। संकट के बीच बांग्लादेश को भारत से भी तत्काल बड़ी राहत मिलने की संभावना कम है, क्योंकि भारत पहले ही उसे 2,656 एमडब्लू से ज्यादा बिजली दे रहा है और अतिरिक्त बिजली उपलब्ध कराने के लिए भारत को अपनी उत्पादन क्षमता और ट्रांसमिशन व्यवस्था को भी देखना होगा। 2022 के मुकाबले चार गुना ज्यादा बिजली की कमी-बांग्लादेश में इस समय 3,000 से 3,500 मेगावाट बिजली कम पड़ रही है। यानी जितनी बिजली चाहिए, उतनी बन ही नहीं पा रही। अगस्त में देश में रोज औसतन करीब 13 हजार मेगावाट बिजली बनी, जबकि जरूरत 16 हजार मेगावाट से ज्यादा थी। यानी हर दिन करीब 3 हजार मेगावाट बिजली की कमी रही। 2022 में भी बांग्लादेश में बिजली का संकट आया था। तब कमी करीब 750 मेगावाट थी। यानी आज की कमी उस समय के मुकाबले करीब चार गुना है। बिजली पैदा करने के लिए प्लांट में ईंधन की कमी-बांग्लादेश में बिजली बनाने वाले प्लांट पर्याप्त हैं, लेकिन उन्हें चलाने के लिए जरूरी ईंधन की कमी हो गई है। खासकर

प्राकृतिक गैस की सप्लाई घटने से गैस आधारित प्लांट पूरी क्षमता से नहीं चल पा रहे। 2024-25 में बांग्लादेश की करीब 44फीसदी बिजली गैस से बनी थी। लेकिन देश में गैस का उत्पादन लगातार कम हुआ है। 2018-19 में घरेलू गैस उत्पादन 27.2 अरब घन मीटर था, जो 2024-25 में घटकर 19.6 अरब घन मीटर रह गया। कमी पूरी करने के लिए बांग्लादेश ने गैस का आयात बढ़ाया। इस दौरान आयात 143फीसदी बढ़कर 3.28 अरब से 7.98 अरब घन मीटर हो गया। एलएनजी टर्मिनल बंद होने से बिजली संकट बढ़ा-बांग्लादेश विदेशों से आने वाली गैस के लिए कॉक्स बाजार के मोहेशखाली में बने एलएनजी टर्मिनलों पर निर्भर है। 21 जुलाई को दो टर्मिनलों में से एक में आग लग गई और उसे बंद करना पड़ा। इससे गैस की कमी और बढ़ गई। अगस्त में रोज करीब 2,235 मिलियन क्यूबिक फीट गैस मिल रही थी, जबकि जरूरत 3,860 मिलियन क्यूबिक फीट की थी। हालांकि, 16 सितंबर को द डेली स्टार ने बताया कि देश में गैस का उत्पादन बढ़ने के बाद सप्लाई अब पहले जैसी हो गई है। कोयला प्लांट भी पूरी क्षमता से नहीं चल रहे-गैस की कमी के साथ कोयले से चलने वाले बिजली प्लांटों में खराबी ने भी संकट बढ़ा दिया है। बांग्लादेश में ऐसे प्लांटों की कुल क्षमता करीब 7,000 मेगावाट है, लेकिन कई प्लांट पूरी क्षमता से नहीं चल रहे। चीन के साथ मिलकर बनाए गए पाटुआखाली के दो 1,320 मेगावाट के प्लांटों में हर एक से सिर्फ 500 से 800 मेगावाट बिजली बन रही थी। वहीं, भारत के साथ मिलकर बने 1,100 मेगावाट के रामपाल प्लांट में बॉयलर खराब होने से उत्पादन घटकर 657 मेगावाट रह गया था। बिजली कटौती से गारमेंट इंडस्ट्री पर असर पड़ा-बिजली संकट का बड़ा असर बांग्लादेश के गारमेंट सेक्टर पर पड़ा है। देश के कुल मर्चेंडाइज एक्सपोर्ट में इस सेक्टर की हिस्सेदारी 80फीसदी से ज्यादा है।

किम जोंग की बहन- परमाणु हथियार छोड़ना ना समझी होगी,यह हमारी सुरक्षा की गारंटी-उत्तर कोरिया के पास 60 परमाणु हथियार

प्योंगयांग। उत्तर कोरिया ने एक बार फिर कहा है कि वह परमाणु हथियार छोड़ने वाला नहीं है। किम जोंग उन की बहन किम यो-जोंग ने गुरुवार को कहा कि उत्तर कोरिया अपने परमाणु हथियार बनाए रखेगा। ये हथियार देश की सुरक्षा के लिए जरूरी हैं। किम यो ने परमाणु हथियार छोड़ने के लिए मनाने की कोशिशों को 'बेवकूफी भरी बात' बताया। किम यो-जोंग का यह बयान वियना में चल रही अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) की जनरल कॉन्फ्रेंस के दौरान आया। ट्रम्प ने फिर बातचीत की इच्छा जताई- किम यो-जोंग का यह बयान ऐसे समय आया है, जब अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने उत्तर कोरिया के साथ फिर बातचीत शुरू करने की इच्छा जताई है। ट्रम्प अपने पहले कार्यकाल में किम जोंग उन से तीन बार मिल चुके हैं। ट्रम्प-किम जोंग की 3 मुलाकातें-जून 2018: ट्रम्प और किम जोंग उन की पहली मुलाकात सिंगापुर में हुई थी। यह पहली बार था जब किसी मौजूदा अमेरिकी राष्ट्रपति ने उत्तर कोरिया के नेता से आमने-सामने मुलाकात की। दोनों ने परमाणु हथियारों का खतरा कम करने और रिश्ते सुधारने पर बात की। फरवरी 2019: वियतनाम के हनोई में दोनों की दूसरी मुलाकात हुई। यहां परमाणु कार्यक्रम और प्रतिबंधों में राहत को लेकर सहमति नहीं बन सकी। जून 2019: दोनों नेताओं

की यह मुलाकात अचानक हुई। ट्रम्प दक्षिण कोरिया के दौरे पर थे और उत्तर-दक्षिण सीमा पर बने डिमिलिटराइज्ड जोन पहुंचे। यहां किम से मुलाकात के दौरान ट्रम्प ने उत्तर कोरिया की जमीन पर भी कदम रखा। वे उत्तर कोरिया की जमीन पर कदम रखने वाले पहले मौजूदा अमेरिकी राष्ट्रपति बने। हालांकि, इस मुलाकात के बाद भी परमाणु मुद्दे पर कोई बड़ा समझौता नहीं हो सका। हनोई मीटिंग के बाद उत्तर कोरिया ने बढ़ाई परमाणु ताकत-2019 की हनोई बैठक के बाद अमेरिका और उत्तर कोरिया के बीच परमाणु मुद्दे पर बातचीत आगे नहीं बढ़ी। इसके बाद उत्तर कोरिया ने परमाणु हथियार छोड़ने के बजाय अपने परमाणु और मिसाइल कार्यक्रम को और आगे बढ़ाया। प्योंगयांग ने अपने परमाणु हथियारों को सिर्फ बातचीत में इस्तेमाल होने वाली ताकत नहीं, बल्कि देश की सुरक्षा का स्थायी हिस्सा बना दिया। उसने कानून में भी परमाणु हथियारों को अपनी रक्षा नीति का हिस्सा बताया है। यानी उत्तर कोरिया का कहना है कि परमाणु हथियार उसकी सुरक्षा के लिए जरूरी हैं और वह इन्हें छोड़ने की नीति पर वापस नहीं जाएगा। किम यो-जोंग का ताजा बयान इसी रुख को दोहराता है। उत्तर कोरिया के पास कितने परमाणु हथियार? उत्तर कोरिया के पास परमाणु हथियारों की सही संख्या सार्वजनिक नहीं है। अलग-अलग देशों और संस्थानों के आकलन में इसकी संख्या अलग बताई जाती है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने अगस्त में दावा किया था कि उत्तर कोरिया के पास 57 परमाणु हथियार हैं। वहीं स्वीडन के रिसर्च संस्थान एसआईपीआरआई के मुताबिक उत्तर कोरिया के पास करीब 60 परमाणु हथियार हैं। दक्षिण कोरिया का अनुमान इससे ज्यादा है। उसके मुताबिक उत्तर कोरिया के पास 80 से 120 परमाणु हथियार हो सकते हैं। हालांकि, इन आंकड़ों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है। उत्तर कोरिया अपने परमाणु हथियारों की पूरी संख्या सार्वजनिक नहीं करता।

दावा- ट्रम्प सरकार ने हूती विद्रोहियों से सीक्रेट डील करि, अमेरिकी जहाजों पर हमला नहीं करेंगे हूती लड़ाके, बदले में सऊदी की मदद नहीं करेगा अमेरिका

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका ने यमन के हूती विद्रोहियों के साथ सीक्रेट डील की है। एक्सिओस की रिपोर्ट के मुताबिक इस डील के तहत हूतियों ने अमेरिका को भरोसा सऊदी गठबंधन के प्रवक्ता मेजर जनरल तुर्किये अल-मलिकी के मुताबिक, ड्रोन को स्थानीय समयानुसार मंगलवार शाम करीब 6:50 बजे मक्का के प्रतिबंधित हवाई

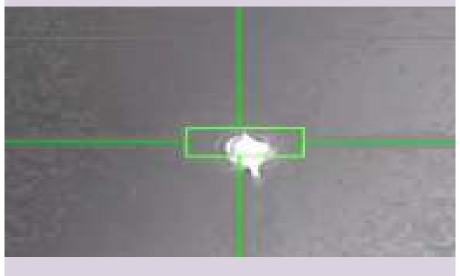

दिया है कि वे लाल सागर में अमेरिकी और अंतरराष्ट्रीय जहाजों को निशाना नहीं बनाएंगे। इसके बदले में अमेरिका यमन में हूतियों के खिलाफ सऊदी अरब की सैन्य मदद नहीं करेगा। अमेरिकी अधिकारियों और हूती नेताओं के बीच यह बातचीत पिछले हफ्ते ओमान की राजधानी मस्कट के अमेरिकी दूतावास में हुई थी। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने सोमवार को पुष्टि की कि अमेरिका हूतियों के सीधे संपर्क में है। सऊदी के जहाजों को अब भी निशाना बनाएंगे हूती -हूतियों ने कहा है कि लाल सागर में सऊदी के जहाजों और सऊदी का तेल ले जाने वाले जहाजों को वे अब भी टारगेट करेंगे। हूतियों की दलील है कि यमन पर सऊदी अरब की नाकेबंदी और सैन्य कार्रवाई के चलते उसके जहाजों को निशाना बनाना उनका अधिकार है। मामले से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक, 2025 में अमेरिका और हूतियों के बीच हुआ सीजफायर कायम है। हूतियो से सऊदी को अकेले लड़ना पड़ सकता है-पिछले हफ्ते हूतियों ने यमन के पश्चिमी हिस्से में लाल सागर के किनारे का बड़ा इलाका अपने कब्जे में ले लिया। सऊदी अरब को उम्मीद थी कि अमेरिका उसके साथ खड़ा होगा। लेकिन अमेरिका ने अब तक हूतियों के खिलाफ सऊदी के समर्थन में कोई सीधी सैन्य कार्रवाई नहीं की है। अमेरिका ने जरूर कहा है कि हूतियों की गतिविधियां बाब अल-मंदब स्ट्रेट से जहाजों की आवाजाही के लिए खतरा हैं। अमेरिका पहले से ईरान के साथ संघर्ष में उलझा हुआ है। ईरान हूतियों का समर्थन करता है। ऐसे में अगर अमेरिका यमन में सीधे उतरता है तो उस पर एक और सैन्य मोर्चे का दबाव बढ़ सकता है। सऊदी का आरोप- हूतियों ने मक्का पर ड्रोन से हमला किया-सऊदी अरब ने आरोप लगाया है कि हूतियों ने मक्का की तरफ ड्रोन भेजकर हमला करने की कोशिश की। इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यह उसके लिए 'रेड लाइन' है। सऊदी डिफेंस फोर्सेस ने ड्रोन नष्ट करने का दावा किया है। क्षेत्र के पास रोका गया। यमन की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकार और 57 देशों के संगठन ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन ने भी कथित हमले की निंदा की है। हूतियों ने सऊदी के आरोप को 'सदी का सबसे बड़ा झूठ' बताया-हूतियों ने मक्का पर ड्रोन हमले के आरोप को खारिज किया है। हूती लीडरशिप ने इसे 'सदी का सबसे बड़ा झूठ' बताया और कहा कि सऊदी अरब पहले भी ऐसे दावे करता रहा है। हूती उप विदेश मंत्री अब्दुल वहीद अबू रास ने पलटवार करते हुए सऊदी अरब पर ही मक्का और मदीना जैसे पवित्र स्थलों की गरिमा को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया। हूतियों ने सऊदी एफ-15 गिराने का भी दावा किया-हूतियों ने दावा किया कि उन्होंने मारिब के पास सऊदी अरब का एफ-15 लड़ाकू विमान गिराया है। साथ ही लाल सागर के बंदरगाह शहर यानबू में सऊदी तेल कंपनी अरामको के एक संयंत्र पर हमला करने का दावा किया। हूती वार्ता टीम के प्रमुख मोहम्मद अब्दुल सलाम ने कहा कि एफ-15 गिराने की बात इसलिए बताई गई है, ताकि पश्चिमी देश सऊदी की बातों में न आएं। हूती नेता बोले- पाकिस्तान-तुर्किये से मदद मांग रहा सऊदी-हूती पॉलिटिकल ब्यूरो के सदस्य मोहम्मद अल-फराह ने कहा कि सऊदी अरब यमन में मुश्किल स्थिति में फंस गया है। उनके मुताबिक, युद्ध और नाकेबंदी के बावजूद सऊदी अरब अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर पाया।अल-फराह ने कहा कि अब सऊदी अरब पाकिस्तान, तुर्किये, अमेरिका, इजराइल और मिस्र से मदद मांग रहा है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मक्का पर हमले का मुद्दा उठाकर सऊदी अरब मुस्लिम देशों को अपने साथ लाने की कोशिश कर रहा है-अमेरिका-इजराइल और अरब देशों ने भी सीक्रेट बैठक की-इजराइली अधिकारियों के मुताबिक, अमेरिका, इजराइल और कई अरब देशों के सैन्य प्रमुखों ने पिछले हफ्ते जर्मनी में सीक्रेट बैठक की।

सिंगापुर सरकार किताब पढ़ने के बदले देगी पैसे,रोजाना कम से कम 15 मिनट पढ़ना होगा- मकसदःस्मार्ट फोन और रील्स की लत छुड़ाना

सिंगापुर। सिंगापुर सरकार अब लोगों को किताब पढ़ने के लिए पैसे देगी। इसके लिए रोज कम से कम 15 मिनट किताब या लंबे लेख पढ़ने होंगे। पढ़ने का समय सरकारी वेबसाइट पर दर्ज करना होगा। इसके बदले रिवॉर्ड पॉइंट्स मिलेंगे, जिन्हें बाद में नकद इनाम में बदला जा सकेगा। सरकार का यह 5 साल का नेशनल रीडिंग मिशन लोगों को स्मार्टफोन, रील्स और छोटे वीडियो से कुछ समय दूर करके दोबारा पढ़ने की आदत डालने की कोशिश है। 15 मिनट पढ़ने पर मिलेंगे 20 कॉइन्स-योजना के तहत हर दिन 15 मिनट पढ़ने पर 20 वर्चुअल कॉइन्स मिलेंगे। एक दिन में सिर्फ एक बार रीडिंग टाइम दर्ज किया जा सकेगा। 50 दिन तक रोज 15 मिनट पढ़ने पर 1,000 कॉइन्स पूरे होंगे। इन्हें 1 सिंगापुरी डॉलर यानी करीब 76 रुपए के नकद इनाम में बदला जा सकेगा।सरकार ने इस साल कुल 75 लाख रीडिंग मिनट का लक्ष्य रखा है। लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए करीब 1.14 करोड़ रुपए के इनाम दिए जाएंगे। सरकार ने पढ़ने को गेम की तरह बनाया-इस योजना को सिंगापुर के नेशनल लाइब्रेरी बोर्ड (एनएलबी) ने शुरू किया है। लोग 'क्राउडटास्क एसजी' वेबसाइट पर रोज अपनी पढ़ाई का समय दर्ज करेंगे। लक्ष्य पूरा करने पर उनके खाते में कॉइन्स जुड़ते जाएंगे। इस तरह सरकार ने पढ़ने

को एक ऐसे रिवॉर्ड सिस्टम से जोड़ा है, जिसमें लोग रोज का लक्ष्य पूरा करके धीरे-धीरे नकद इनाम हासिल कर सकते हैं। रील्स और छोटे वीडियो से ध्यान हटाना मकसद-सरकार की चिंता लोगों के बढ़ते स्क्रीन टाइम को लेकर है। एनएलबी की प्रमुख मेलिसा टैम के मुताबिक, छोटे वीडियो से जानकारी तेजी से मिलती है, लेकिन लगातार बहुत सारी सूचनाएं देखने से दिमाग थक सकता है। इसके मुकाबले किताब या लंबा लेख पढ़ने में ज्यादा एकाग्रता की जरूरत होती है। इससे ध्यान लगाने, सोचने और कल्पना करने की क्षमता विकसित करने में मदद मिल सकती है। इसी वजह से सरकार ने शुरुआत के लिए रोज सिर्फ 15 मिनट का लक्ष्य रखा है। युवाओं में भी कम हो रही हॉबी रीडिंग-रिसर्च एनालिस्ट आइजैक निओ के मुताबिक, बच्चों और युवाओं पर पढ़ाई और परीक्षाओं का दबाव रहता है। इसलिए वे अक्सर परीक्षा की तैयारी के लिए पढ़ते हैं, लेकिन अपनी रुचि के लिए किताब पढ़ने की आदत कम हो रही है। निओ ने 2025 में 'मॉडर्न मेन्स बुक क्लब' शुरू किया था। इसका उद्देश्य युवाओं को दोबारा किताबों से जोड़ना था। विशेषज्ञ बोले- शुरुआत के लिए इनाम काम आ सकता है-मनोवैज्ञानिक चारिसा एनजी के मुताबिक, आर्थिक इनाम उन लोगों को पढ़ना शुरू करने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिन्हें पहले से कुछ रुचि है। हालांकि, जिन लोगों को पढ़ने में बिल्कुल दिलचस्पी नहीं है, उनके लिए केवल पैसे लंबे समय तक यह आदत बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे। पुस्तक विशेषज्ञों के मुताबिक, शुरुआत करवाने के लिए छोटा इनाम भी उपयोगी हो सकता है। कोई व्यक्ति पहले पैसे के लिए पढ़ना शुरू करे और बाद में उसे किताबों में खुद रुचि पैदा हो जाए। सरकार की योजना इसी बदलाव की कोशिश है।

भारत पर 100फीसदी टैरिफ लगाने का ट्रम्प का रास्ता साफ, रूस के तेल खरीदारों पर एक्शन हो सकता है, भारत 40फीसदी से अधिक खरीद रहा

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अब भारत पर 100फीसदी तक टैरिफ लगा सकते हैं। इससे संबंधित बिल अमेरिकी संसद में पास हो गया है। चूंकि भारत अपनी जरूरत का 40फीसदी से ज्यादा क्रूड ऑयल रूस से खरीद रहा है, इसलिए उस पर इस टैरिफ का खतरा है। अमेरिकी संसद के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स ने बुधवार को रूस से ज्यादा तेल खरीदने वाले 5 देशों पर 100फीसदी तक टैरिफ लगाने वाला बिल पास किया। पक्ष में 262 और विरोध में 159 वोट पड़े। सीनेट अगस्त में इसे 86-11 वोट से पास कर चुकी है। ट्रम्प के साइन करते ही यह कानून बन जाएगा। इसे आधिकारिक तौर पर लिंडसे ओ ग्राहम सैंक्शनिंग रशिया एंड ईरान एक्ट ऑफ 2026 नाम दिया गया है। रूस से ज्यादा कच्चा तेल खरीदने वाले 5 देशों की अमेरिकी लिस्ट में चीन, भारत, स्लोवाकिया, हंगरी और अजरबैजान शामिल हैं। अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि हर 180 दिन में इस लिस्ट का आकलन करेंगे। अमेरिका की तरफ से 100फीसदी टैरिफ पर भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा कि देश के हितों से समझौता नहीं करेंगे। बीते 2 साल में भारत का रूस से तेल आयात-यूक्रेन-रूस

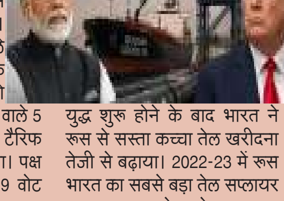

युद्ध शुरू होने के बाद भारत ने रूस से सस्ता कच्चा तेल खरीदना तेजी से बढ़ाया। 2022-23 में रूस भारत का सबसे बड़ा तेल सप्लायर बन गया। युद्ध से पहले भारत रूस से बहुत कम तेल खरीदता था, लेकिन बाद में यह बढ़कर रोजाना करीब 16 से 20 लाख बैरल तक पहुंच गया। अब भारत अपनी जरूरत के 40फीसदी से ज्यादा कच्चे तेल का आयात रूस से कर रहा है। इससे भारत रूस से तेल खरीदने वाले सबसे बड़े देशों में शामिल हो गया है। रूस के अलावा भारत के लिए 9 विकल्प-रूस के अलावा, भारत मुख्य रूप से इराक, सऊदी अरब, यूएई, कुवैत और कतर से तेल खरीदता है। इसके अलावा, नाइजीरिया, अंगोला, ब्राजील और अमेरिका से भी कच्चा तेल आयात करता है। यह बिल कानून बना तो भारत पर असर-पहली स्थितिः भारत रूस से तेल खरीदता रहे-अमेरिका के 100फीसदी टैरिफ का सीधा असर भारत के निर्यात बिल पर पड़ सकता है। इससे भारतीय सामान अमेरिका में महंगा हो जाएगा। अमेरिकी खरीदार सस्ता विकल्प ढूंढेंगे, जैसे बांग्लादेश, वियतनाम, मैक्सिको, चीन। नतीजतन भारत के टेक्सटाइल, जेम्स-ज्वेलरी, इंजीनियरिंग गुड्स, लेदर, समुद्री उत्पाद, केमिकल्स समेत कई चीजों के ऑर्डर घट जाएंगे। दूसरी स्थितिः भारत रूस को छोड़कर दूसरे देशों से तेल खरीदे तो-रूस से आने वाले तेल पर प्रतिबंध या टैरिफ का दबाव बढ़ता है तो भारत को दूसरे देशों से तेल खरीदना पड़ेगा। यह महंगा पड़ सकता है, जिससे भारत में पेट्रोल-डीजल महंगा हो सकता है। रूस के रक्षा क्षेत्रों पर भी प्रतिबंध लगेगा-बिल का नाम 'लिंडसे ओ. ग्राहम सैंक्शनिंग रूस एंड ईरान एक्ट ऑफ 2026' है। इस बिल में रूस के तेल और रक्षा से जुड़े कारोबार पर कड़े प्रतिबंध लगाने की बात कही गई है।

श्री शिव महापुराण कथा में राजनीतिक दिग्गजों का जमावड़ा, लाखों की भीड़ के बीच बढ़ा सियासी तापमान

उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, दोनों उपमुख्यमंत्रियों समेत दिग्गजों की मौजूदगी, केशव मौर्य ने मनोज पांडेय से आत्मीय संबंधों का किया उल्लेख, बोले-'अयोध्या-काशी हुई हमारी, अब कृष्ण जन्मभूमि की बारी'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली/ऊंचाहार। बुधवार को ऊंचाहार में चल रही पूज्य पं. प्रदीप मिश्रा जी की श्री शिव महापुराण कथा के छठवें दिन लाखों श्रद्धालुओं के जनसैलाब के बीच राजनीतिक दिग्गजों का जमावड़ा भी चर्चा में रहा। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, कैबिनेट मंत्री भूपेंद्र चौधरी, कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना, परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, वन मंत्री अरुण सक्सेना, राज्यमंत्री रजनी तिवारी, राज्यमंत्री सुरेश राही, मंत्री दयाशंकर मिश्रा 'दयालु' सहित अनेक मंत्री, जनप्रतिनिधि एवं विशिष्टजन कथा स्थल पहुंचे। लाखों शिवभक्तों की भीड़ के सामने कथा का मैदान छोटा पड़ गया। आसपास की गलियां, चौराहे और रास्ते श्रद्धालुओं से भर गए। दूर-दूर तक हर-हर महादेव के जयघोष गूंजते रहे। सुरक्षा और यातायात व्यवस्था संभालने में प्रशासन को पूरे दिन कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। व्यासपीठ पर पूज्य पं. प्रदीप मिश्रा जी के श्रीमुख से शिव महिमा का अमृत प्रवाह श्रद्धालुओं को भाव-विभोर करता रहा। उनकी कथा में भगवान शिव की भक्ति के साथ सेवा, संस्कार और सनातन मूल्यों का संदेश गूंजा। लाखों श्रद्धालु मंत्रमुग्ध होकर कथा श्रवण करते रहे। उनकी ओजपूर्ण वाणी ने पूरे कथा परिसर को शिवमय कर दिया और श्रद्धालुओं में भक्ति का भाव और गहरा होता गया। उनके प्रत्येक संदेश पर श्रद्धालुओं का उत्साह और हर-हर महादेव का जयघोष वातावरण को गुंजायमान करता रहा। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने पूज्य पं. प्रदीप मिश्रा जी की कथा का श्रवण किया और भगवान शिव की आराधना से जुड़े आध्यात्मिक संदेश की सराहना की। उन्होंने कैबिनेट मंत्री मनोज कुमार पांडेय के आयोजन संबंधी प्रयासों की भी प्रशंसा की। इसके बाद उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के संबोधन ने धार्मिक आयोजन के बीच राजनीतिक चर्चा को भी नई धार दे दी। उन्होंने अयोध्या और काशी का उल्लेख करते हुए 'अयोध्या-काशी हुई हमारी, अब कृष्ण जन्मभूमि की बारी' की बात कही। अपने संबोधन में उन्होंने कैबिनेट मंत्री मनोज कुमार पांडेय के साथ अपने आत्मीय संबंधों का उल्लेख करते हुए उनके द्वारा आयोजित श्री शिव महापुराण कथा की व्यापकता और व्यवस्थाओं की सराहना की। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कथा श्रवण कर पूज्य पं. प्रदीप मिश्रा जी का आशीर्वाद लिया और आयोजन की व्यापकता तथा श्रद्धालुओं की सहभागिता की सराहना की। व्यासपीठ से पूज्य पं. प्रदीप मिश्रा जी ने शिवभक्ति को जीवन में उतारने के साथ सेवा, संस्कार और सद्भाव का संदेश दिया। श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति और आयोजन की व्यवस्थाओं की भी उन्होंने सराहना की। कैबिनेट मंत्री मनोज कुमार पांडेय ने भावुक होते हुए कहा कि ऊंचाहार उनके लिए केवल एक क्षेत्र नहीं, बल्कि उनका अपना परिवार है। यहां की जनता ने उन्हें जो स्नेह और विश्वास दिया है, उसे वह जीवनभर नहीं भूल सकते। उन्होंने कहा कि यह आयोजन उनका नहीं, बल्कि ऊंचाहार की जनता और लाखों शिवभक्तों की श्रद्धा का आयोजन है। श्रद्धालुओं की सेवा और सुविधा को अपनी सबसे बड़ी जिम्मेदारी बताते हुए उन्होंने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस दौरान विधायक सुरेश कुमार, विधायक अरविंद कुमार सिंह, दरियाबाद विधायक राजमणि, प्रयागराज विधायक महेंद्र पाल सिंह, पिपराइच विधायक, एमएलसी प्रज्ञा त्रिपाठी, विधायक रामफेरन पांडेय, विधायक शशांक त्रिवेदी, विधायक महेश त्रिवेदी, विधायक अशोक कोरी, एमएलसी गोविंद नारायण शुक्ला, एमएलसी पवन सिंह चौहान, राज्यसभा सांसद नीरज शेखर, पूर्व मंत्री रामसकल गुर्जर, भाजपा क्षेत्रीय महामंत्री राजीव मिश्रा, पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष कमलेश मिश्रा, चेयरमैन नेहा अवस्थी, जिला पंचायत अध्यक्ष सीतापुर शिवकुमार गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष हरदोई अजीत सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष सीतापुर राजेश शुक्ला सहित तमाम विशिष्ट जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

छठवें दिन पूज्य पं. प्रदीप मिश्रा जी की शिवमय कथा, लाखों श्रद्धालुओं का जनसैलाब और राजनीतिक दिग्गजों की मौजूदगी ने ऊंचाहार की श्री शिव महापुराण कथा को भक्ति, श्रद्धा और राजनीतिक चर्चा का प्रमुख केंद्र बना दिया।

17 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक जनपद में चलेगा 'सेवा संकल्प अभियान,'सेवा दिवस-आशीर्वाद का दिया' थीम के साथ 17 सितम्बर को विभिन्न कार्यक्रमों का होगा आयोजन

सेवा संकल्प अभियान के तहत जनपद के प्रमुख स्थलों को विशेष रूप से दीपों से सजाया जाएगा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बुधवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार जनकल्याणकारी योजनाओं एवं सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने तथा प्रत्येक नागरिक को 'विकसित भारत-2047' के सामूहिक राष्ट्रीय संकल्प से जोड़ने के उद्देश्य से जनपद में 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर 2026 तक 'सेवा संकल्प अभियान' आयोजित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान केंद्र सरकार के 12 वर्षों एवं राज्य सरकार के 10 वर्षों के कार्यकाल में किए गए विकास कार्यों तथा जनकल्याणकारी योजनाओं से जनजीवन में आए सकारात्मक परिवर्तनों को प्रामाणिक एवं प्रभावी ढंग से जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही सेवा, सुशासन एवं गरीब कल्याण के अंतर्गत किए गए नीतिगत सुधारों, जनहितकारी कार्यों तथा देश एवं प्रदेश में हुए महत्वपूर्ण बदलावों की जानकारी आमजन तक पहुंचाई जाएगी। जिलाधिकारी ने बताया कि 'सेवा संकल्प अभियान' का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना है। अभियान के माध्यम से युवा,

महिला, किसान एवं वंचित वर्गों को आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण के सामूहिक राष्ट्रीय संकल्प से जोड़ते हुए उन्हें केंद्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से अधिक से अधिक लाभान्वित करने तथा योजनाओं के प्रति जागरूक किया जाएगा। जिलाधिकारी ने बताया कि थीम 'सेवा दिवस-आशीर्वाद का दिया' के अंतर्गत 17 सितम्बर को जनपद में विभिन्न सेवा एवं जनकल्याणकारी कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अवसर पर जनपद के सभी प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों तथा महिला एवं पुरुष जिला चिकित्सालय में मरीजों को फल वितरण किया जाएगा। विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण प्राप्त लाभार्थियों को टूल किट का वितरण भी किया जाएगा। इसी क्रम में प्रत्येक ग्राम पंचायत, शहरी वार्ड एवं मलिन बस्तियों में दिव्यांग कल्याण से संबंधित कार्यक्रम आयोजित कर दिव्यांगजनों को शासन की योजनाओं एवं सुविधाओं से जोड़ने का कार्य किया जाएगा। उन्होंने बताया कि अभियान के अंतर्गत केंद्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित परिवारों द्वारा 17 सितम्बर की शाम 07:00 बजे अपने-अपने घरों में दीप प्रज्वलित किए जाएंगे। यह दीप 'विकसित भारत-2047' के सामूहिक राष्ट्रीय संकल्प, सेवा, सुशासन एवं जनकल्याण की भावना का प्रतीक होंगे, इसके साथ ही जनपद के सभी सरकारी कार्यालयों, प्रमुख इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट, नदियों एवं घाटों, प्रमुख मंदिरों, विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा चिकित्सालयों में भी विशेष दीप प्रज्वलन कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। सेवा संकल्प अभियान के तहत जनपद के प्रमुख स्थलों को विशेष रूप से दीपों से सजाया जाएगा, इन प्रमुख स्थलों में गेंगासो घाट, गोकना घाट, डलमऊ घाट, संकटा देवी मंदिर, मनसा देवी मंदिर, चुरुवा मंदिर, भवरेश्वर मंदिर, अचलेश्वर मंदिर एवं बालेश्वर मंदिर सहित जनपद के अन्य प्रमुख स्थल शामिल हैं।

मातृभूमि योजना में 60 प्रतिशत अंशदान देकर गांवों में कराएं जनोपयोगी विकास कार्य

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने बताया कि उत्तर प्रदेश मातृभूमि योजना के अंतर्गत देश-विदेश में निवास करने वाला कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था जनपद के किसी भी गांव में विकास कार्य कराने के लिए योजना की कुल लागत का 60 प्रतिशत दान देकर विभिन्न जनोपयोगी कार्य करा सकता है। योजना की शेष 40 प्रतिशत लागत राज्य सरकार द्वारा वहन की जाएगी। उन्होंने बताया कि शासनादेश के अनुसार दानकर्ता के प्रस्ताव के अनुरूप निर्मित परियोजना पर शिलापट्ट लगाए जाने की भी व्यवस्था है। योजना का लाभ लेने के इच्छुक दानकर्ताओं के आवेदन के लिए https://mbhumi.upprd.in पोर्टल विकसित किया गया है।

नगर पंचायत सलोन अध्यक्ष पद के उप निर्वाचन की समय-सारिणी जारी, 13 अक्टूबर को होगा मतदान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। राज्य निर्वाचन आयोग, उत्तर प्रदेश की अधिसूचना के क्रम में जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत एवं नगरीय निकाय) रायबरेली सरनीत कौर ब्रोका ने जनपद रायबरेली में नगर पंचायत सलोन के अध्यक्ष के रिक्त पद पर उप निर्वाचन की समय-सारिणी जारी की है। उन्होंने कहा कि यह उप निर्वाचन मा0 न्यायालय के स्थगन आदेश से बाधित न होने की स्थिति में निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कराया जाएगा। अध्यक्ष पद पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षित है। जारी कार्यक्रम के अनुसार नामांकन पत्रों की प्राप्ति 18 सितम्बर से 24 सितम्बर 2026 तक प्रातः 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक, नामांकन पत्रों की संवीक्षा 25 सितम्बर 2026 को प्रातः 11 बजे से कार्य की समाप्ति तक, अभ्यर्थन वापसी 28 सितम्बर 2026 को प्रातः 11 बजे से अपराह्न 3 बजे तक, प्रतीक आवंटन 29 सितम्बर 2026 को प्रातः 11 बजे से कार्य की समाप्ति तक किया जाएगा। मतदान 13 अक्टूबर 2026 को प्रातः 7 बजे से सायं 5 बजे तक तथा मतगणना 15 अक्टूबर 2026 को प्रातः 8 बजे से कार्य समाप्ति तक होगी। रिटर्निंग अधिकारी द्वारा 18 सितम्बर 2026 को सार्वजनिक सूचना जारी की जाएगी तथा इसी दिन से नामांकन पत्रों का विक्रय किया जाएगा। नामांकन पत्रों का विक्रय एवं प्राप्ति, संवीक्षा, अभ्यर्थन वापसी, प्रतीक आवंटन तथा मतगणना की कार्यवाही संबंधित रिटर्निंग अधिकारी/सहायक रिटर्निंग अधिकारी द्वारा नगर पंचायत सलोन की तहसील मुख्यालय सलोन पर संपन्न कराई जाएगी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने रिटर्निंग अधिकारी एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारी को नगर पंचायत सलोन क्षेत्र में सार्वजनिक सूचना का व्यापक प्रसार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही कार्यालय एवं नगर पंचायत सलोन मुख्यालय के सूचना पट्ट पर सार्वजनिक सूचना चस्पा करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि उप निर्वाचन उत्तर प्रदेश नगर पालिका (सदस्यों, पार्षदों, अध्यक्षों और महापौरों का निर्वाचन) नियमावली, 2010 के प्रावधानों के अनुसार कराया जाएगा। निर्धारित समय-सारिणी के दौरान पड़ने वाले सार्वजनिक अवकाश दिवसों में भी संबंधित कार्यालय खुले रहेंगे और निर्वाचन संबंधी कार्य निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही संपन्न किए जाएंगे।

शासकीय अधिवक्ताओं के रिक्त पदों पर आवेदन आमंत्रित, 30 सितम्बर तक भेजे जा सकेंगे आवेदन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बुधवार को जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने बताया कि जनपद में शासकीय अधिवक्ताओं के रिक्त पदों के सापेक्ष नवीन आबद्धता के लिए विधि परामर्शी निदेशिका के प्रस्तर 7.03 के अंतर्गत पैनल गठित कर शासन को प्रेषित किया जाना है। इसके लिए जनपद रायबरेली में अपर जिला शासकीय अधिवक्ता (फौजदारी) का एक पद, सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता (फौजदारी) का एक पद तथा सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता (राजस्व) का एक पद रिक्त है।

उन्होंने बताया कि अपर जिला शासकीय अधिवक्ता (फौजदारी) पद हेतु न्यूनतम 10 वर्ष का विधि व्यवसाय करने वाले तथा 60 वर्ष से कम आयु के अधिवक्ता आवेदन कर सकते हैं।

वहीं सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता (फौजदारी) एवं सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता (राजस्व) पद हेतु न्यूनतम 07 वर्ष का विधि व्यवसाय करने वाले तथा 60 वर्ष से कम आयु के अधिवक्ताओं से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं।

इच्छुक पात्र अधिवक्ताओं के आवेदन निर्धारित प्रारूप पर पृथक-पृथक तीन प्रतियों में दिनांक 30 सितम्बर 2026 को अपराह्न 05:00 बजे तक स्पीड पोस्ट/रजिस्टर्ड डाक के माध्यम से जिलाधिकारी, रायबरेली के पदनाम पर भेजे जा सकेंगे। निर्धारित तिथि एवं समय के बाद प्राप्त आवेदन पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

आवेदन पत्र में मांगी गई सूचना अपूर्ण, अस्पष्ट अथवा त्रुटिपूर्ण पाए जाने पर आवेदन स्वतः

निरस्त माना जाएगा। आवेदन पत्र के प्रपत्र 'क' एवं 'ख' की सूचना देवनागरी लिपि (हिन्दी) में ए-4 साइज के कागज पर टंकित होना अनिवार्य है।

आवेदन ए-4 साइज के सीलबंद लिफाफे में भेजा जाए, जिस पर प्रेषक का नाम, पिता का नाम, पता,

मोबाइल नंबर तथा आवेदित पद का नाम स्पष्ट रूप से अंकित किया जाए।

आवेदन के साथ शैक्षिक अभिलेख, निवास प्रमाण पत्र, आधार तथा अधिवक्ता पंजीकरण/सीओपी संख्या की छायाप्रतियां आवेदक द्वारा स्वप्रमाणित कर संलग्न करना अनिवार्य होगा। निर्धारित प्रारूप एवं आवश्यक अभिलेखों के बिना अथवा अपूर्ण आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

खिलाड़ियों को अनुशासन में रहकर करनी चाहिए कड़ी मेहनत- राजकुमार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। संसू/नैनी। जैदी इनडोर क्रिकेट एकेडमी का स्थापना दिवस बुधवार को धूमधाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि इंडिया टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली के कोच और द्रोणाचार्य अवार्ड से सम्मानित राज कुमार शर्मा ने कैंडिल जला कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कि अनुशासन में रहकर कड़ी मेहनत करने से लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। खिलाड़ियों को चाहिए वे नियमित कड़ी मेहनत करे। विशिष्ठ अतिथि महापौर गणेश चंद्र केसरवानी ने खिलाड़ियों को प्रेरित किया।

एकेडमी के संचालक वरिष्ठ क्रिकेटर आशीष विष्टन जैदी ने अतिथियों का स्वागत किया।इस अवसर पर एल बी काला, शहनवाज, राजीव मिश्रा, जावेद, गिरधारी, विमलेश, विनीता जैदी, अनुज, करण आदि उपस्थित रहे।

अवैध रूप से आयातित कीटनाशी की बिक्री पर होगी वैधानिक कार्रवाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला कृषि रक्षा अधिकारी अखिलेश पाण्डेय ने जनपद के समस्त कीटनाशी विक्रेताओं को सूचित किया है कि ई-कॉमर्स प्लेटफार्म अथवा किसी भी प्रतिष्ठान पर अपंजीकृत, गैरकानूनी अथवा अवैध रूप से आयातित कीटनाशी 'साइक्लोसिनोन हर्बिसाइड' की बिक्री एवं वितरण किया जाना प्रतिबंधित है। यदि किसी प्रतिष्ठान पर उक्त कीटनाशी की अवैध बिक्री अथवा वितरण पाया जाता है, तो संबंधित विक्रेता के विरुद्ध कीटनाशी अधिनियम, 1968 एवं कीटनाशी नियमावली, 1971 में निहित प्रावधानों के तहत वैधानिक कार्रवाई प्रारम्भ कर दी जाएगी।

नगर पंचायत सलोन अध्यक्ष पद के उप निर्वाचन हेतु रिटर्निंग एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारियों की नियुक्ति

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बुधवार को राज्य निर्वाचन आयोग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ की अधिसूचना के क्रम में जनपद रायबरेली में नगर पंचायत सलोन के अध्यक्ष पद के रिक्त पद पर उप निर्वाचन निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार सकुशल, निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के लिए जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत एवं नगरीय निकाय) सरनीत कौर ब्रोका द्वारा रिटर्निंग ऑफिसर एवं सहायक रिटर्निंग ऑफिसर की नियुक्ति की गई है। निर्वाचन प्रक्रिया के लिए सुजीत राय, अधिशासी अभियंता, ग्रामीण अभियंत्रण सेवा को रिटर्निंग ऑफिसर तथा अखिलेश पाण्डेय, जिला कृषि अधिकारी, रायबरेली एवं अभय प्रताप सिंह, खाद्य सुरक्षा अधिकारी, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग, तहसील सलोन को सहायक रिटर्निंग ऑफिसर नियुक्त किया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने निर्देशित किया है कि नियुक्त अधिकारी राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित समय-सारिणी एवं आयोग द्वारा विहित प्रावधानों के अनुसार निर्वाचन की समस्त प्रक्रिया को सकुशल, निष्पक्ष एवं पारदर्शी रूप से सम्पन्न कराना सुनिश्चित करेंगे।

श्री विश्वकर्मा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। सादर अवगत कराना है कि आज दिनांक 17.09.2026 को सेनानायक श्री

राजेश कुमार श्रीवास्तव के कुशल निर्देशन एवं उप सेनानायक श्री उदय प्रताप सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में 42वीं वाहिनी पीएसी, प्रयागराज में श्री विश्वकर्मा पूजा का पर्व पूर्ण हर्षोल्लास एवं विधि-विधान से संपन्न हुआ। इस अवसर पर वाहिनी स्थित क्वार्टर गार्द में शस्त्रों का तथा परिवहन शाखा में वाहनों एवं उपकरणों का वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजन व हवन किया गया। कार्यक्रम के समापन के पश्चात उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रसाद वितरित किया गया। इस शुभ अवसर पर शिविरपाल श्री अरविन्द कुमार सिंह,निरीक्षक गोपनीय श्री संजीव सिंह यादव,सूबेदार मेजर श्री सुधांशु कुमार, एस.आई.एमटी श्री संजीव कुमार सिंह सहित वाहिनी के अन्य अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। अतः रिपोर्ट सादर सेवा में प्रेषित है।

हाईकोर्ट बार एसोसिएशन इलाहाबाद का चुनाव सकुशल सम्पन्न, अधिवक्ताओं में दिखा खासा उत्साह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन, इलाहाबाद का चुनाव आज शांतिपूर्ण एवं सकुशल वातावरण में सम्पन्न हुआ। चुनाव को लेकर अधिवक्ताओं में सुबह से ही खासा उत्साह और उमंग देखने को मिली। बड़ी संख्या में अधिवक्ताओं ने मतदान प्रक्रिया में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए अपने मताधिकार का प्रयोग किया।चुनाव के दौरान हाईकोर्ट परिसर में अधिवक्ताओं की सक्रिय भागीदारी और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रति उनकी प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई दी। मतदान को लेकर अधिवक्ताओं में विशेष उत्सुकता रही और पूरे दिन चुनावी माहौल बना रहा। बड़ी संख्या में अधिवक्ताओं ने चुनाव में सक्रिय सहभागिता निभाई और पूरी प्रक्रिया में उत्साहपूर्वक भाग लिया। उनके नेतृत्व में अधिवक्ताओं की एकजुटता और सक्रियता चुनाव के दौरान विशेष रूप से देखने को मिली। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन का चुनाव अधिवक्ता समुदाय के लिए महत्वपूर्ण अवसर माना जाता है। आज सम्पन्न हुए चुनाव में अधिवक्ताओं ने अपनी भागीदारी के माध्यम से बार की लोकतांत्रिक परंपराओं को मजबूत करने का संदेश दिया।

चुनाव सकुशल सम्पन्न होने पर अधिवक्ताओं में संतोष और उत्साह का माहौल रहा।

पर्व-त्योहार, धार्मिक आयोजनों के दृष्टिगत जनपद में 02 नवम्बर तक धारा-163 के तहत निषेधाज्ञा लागू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बुधवार को जिला मजिस्ट्रेट सरनीत कौर ब्रोका ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 की धारा-163 के तहत जनपद में लोक प्रशांति एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से निषेधाज्ञा जारी की है। आदेश के अनुसार यह निषेधाज्ञा 15 सितम्बर 2026 से 02 नवम्बर 2026 तक प्रभावी रहेगी। उन्होंने बताया कि जनपद में 17 सितम्बर को विश्वकर्मा पूजा, 25 सितम्बर को अनन्त चतुर्दशी एवं गणेश प्रतिमा विसर्जन, 27 सितम्बर से 10 अक्टूबर तक पितृ पक्ष, 02 अक्टूबर को महात्मा गांधी जयंती, 11 से 19 अक्टूबर तक शारदीय नवरात्रि एवं दुर्गा प्रतिमा विसर्जन, 20 अक्टूबर को दशहरा, 26 अक्टूबर को महर्षि वाल्मीकि जयंती तथा 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती सहित विभिन्न पर्वों के आयोजन होने हैं। पूर्णिमा/अमावस्या पर गंगा स्नान, विभिन्न आयोग एवं भर्ती बोर्ड की प्रतियोगी परीक्षाओं तथा प्राविधिक शिक्षा परिषद/विश्वविद्यालय की परीक्षाओं एवं परीक्षा पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के साथ संचारी रोगों की रोकथाम के लिए शासन के निर्देशों का अनुपालन भी कराया जाना है। आदेश के तहत सार्वजनिक स्थानों पर पांच से अधिक व्यक्तियों के एकत्र होने पर प्रतिबंध रहेगा। राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित गोपनीय एवं आंतरिक सूचनाओं तथा भारतीय सेना एवं सुरक्षा बलों के आवागमन अथवा आंतरिक खुफिया जानकारी को साझा करना प्रतिबंधित रहेगा। राजकीय एवं पुलिस कार्यालयों,

सुरक्षा बलों के स्थानों, सरकारी सर्वर, ईंधन डिपो एवं पम्प, विद्युत उपकेंद्र, दूरसंचार टावर, ओएफसी केबल, जलापूर्ति व्यवस्था, राजमार्गों, पुलों, रेलमार्गों, चिकित्सा एवं मेडिकल आपूर्ति, वित्तीय संस्थानों एवं एटीएम आदि के कार्यों में किसी प्रकार का गतिरोध उत्पन्न नहीं किया जाएगा। धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने, अफवाहों एवं धार्मिक उत्तेजना फैलाने, साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न करने वाले कृत्यों तथा लाठी-डंडा, ईंट-पत्थर, सोडा वाटर की बोतल आदि वस्तुओं को आघात पहुंचाने के उद्देश्य से एकत्र करने पर रोक रहेगी। धार्मिक स्थलों या मकानों पर रंग-कीचड़ डालने, साम्प्रदायिक विद्वेषपूर्ण नारे लगाने, अश्लीलता, नशे में अभद्र भाषा का प्रयोग, खतरनाक तरीके से वाहन चलाने तथा जबरन चंदा वसूली पर भी प्रतिबंध रहेगा। डीजे, साउंड एवं अन्य ध्वनि विस्तारक यंत्रों का निर्धारित ध्वनि सीमा से अधिक प्रयोग तथा रात्रि 10 बजे से प्रातः 6 बजे तक ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग प्रतिबंधित रहेगा। सार्वजनिक स्थानों पर म्यूजिक सिस्टम/लाउडस्पीकर का प्रयोग सक्षम स्तर की अनुमति के बिना नहीं किया जा सकेगा। गंगा स्नान अथवा अन्य आयोजनों में व्यक्तियों के आवागमन के लिए ट्रैक्टर-ट्रॉली एवं मालवाहक वाहनों का प्रयोग नहीं किया जाएगा। यात्रियों के आवागमन के लिए विधि मान्य सवारी वाहनों का ही प्रयोग किया जाएगा। धार्मिक यात्राओं एवं जुलूसों में अस्त्र-शस्त्र का प्रदर्शन, सड़क अवरोध, ट्यूबलाइट/बल्ब फोड़ना, तेज रफ्तार वाहन से स्टंट, अश्लील प्रदर्शन तथा साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वाले नारे या टिप्पणियां प्रतिबंधित रहेंगी। निषेधाज्ञा जनपद रायबरेली की सीमा में रहने वाले एवं आवागमन करने वाले सभी व्यक्तियों पर लागू होगी। आदेश का उल्लंघन भारतीय न्याय संहिता-2023 की धारा-223 के अंतर्गत दण्डनीय अपराध होगा।

यूपीआई सरचार्ज तोड़ेगा व्यापारियों की कमर, सरकार पुनर्विचार करे-: विकास जैन

अतिरिक्त शुल्क से छोटे और मध्यम व्यापारियों पर बढ़ेगा आर्थिक दबाव, परंपरागत बाजारों के अस्तित्व को लेकर जताई चिंता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। यूपीआई भुगतान पर सरचार्ज लगाए जाने की चर्चाओं के बीच उत्तर प्रदेश युवा व्यापार

मंडल ने इसका कड़ा विरोध किया है। व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष विकास जैन ने कहा कि देश में डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के लिए व्यापारियों ने खुले मन से यूपीआई को अपनाया है। ऐसे में यूपीआई लेनदेन पर अतिरिक्त शुल्क लगाने से व्यापारियों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ पड़ेगा। विकास जैन ने कहा कि वर्तमान समय में अधिकांश छोटे और मध्यम व्यापारियों के कारोबार में मुनाफे का मार्जिन पहले ही काफी कम हो चुका है। कई क्षेत्रों में व्यापारी महज 2-3 प्रतिशत के मार्जिन पर कारोबार करने को मजबूर हैं। ऐसे में यदि डिजिटल भुगतान पर अतिरिक्त सरचार्ज लगाया जाता है तो उसका सीधा असर व्यापारी की कमाई पर पड़ेगा।उन्होंने कहा, 'केंद्र सरकार डिजिटल भुगतान इसलिए लेकर आई थी कि आम नागरिक और व्यापारी को सुविधा मिले, न कि व्यापारियों की लागत बढ़े। व्यापारी पहले ही महंगाई, प्रतिस्पर्धा, किराए, कर्मचारियों के वेतन और अन्य व्यावसायिक खर्चों का सामना कर रहा है। ऐसे में यूपीआई पर अतिरिक्त शुल्क उसकी कमर तोड़ने का काम करेगा।' परंपरागत बाजारों की रौनक बचाना जरूरी- विकास जैन ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था में ऑनलाइन कारोबार के साथ-साथ परंपरागत बाजारों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। स्थानीय बाजार केवल खरीद-बिक्री के केंद्र नहीं हैं, बल्कि लाखों परिवारों की आजीविका उनसे जुड़ी हुई है। उन्होंने कहा, 'अगर परंपरागत बाजार कमजोर होंगे तो बाजारों की गलियां कैसे गुलजार रहेंगी? सामाजिक और सामुदायिक गतिविधियों में भी स्थानीय व्यापारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लोग आज भी चंदा-चिट्ठा, सामाजिक सहयोग और अनेक सार्वजनिक कार्यों के लिए अपने स्थानीय बाजार और व्यापारियों के पास जाते हैं। इसलिए पारंपरिक बाजारों को मजबूत करना भी उतना ही जरूरी है।' उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि यूपीआई व्यवस्था को सरल और कम लागत वाली बनाए रखा जाए तथा छोटे व्यापारियों पर किसी भी प्रकार का अतिरिक्त वित्तीय बोझ न डाला जाए। व्यापारी व्यापार बंद कर क्या करे : निखिल अग्रवाल उत्तर प्रदेश युवा व्यापार मंडल के प्रदेश उपाध्यक्ष निखिल अग्रवाल ने भी यूपीआई सरचार्ज के मुद्दे पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि व्यापारी लगातार बदलती व्यापारिक परिस्थितियों के बीच अपने कारोबार को बचाने का प्रयास कर रहा है। ऐसे में डिजिटल भुगतान पर अतिरिक्त लागत व्यापारियों के लिए नई चुनौती बन सकती है। निखिल अग्रवाल ने कहा, 'जब व्यापारी का मार्जिन ही दो-तीन प्रतिशत रह गया है तो अतिरिक्त शुल्क आखिर वह कहां से देगा? क्या व्यापारी अपना व्यापार बंद करके दूसरों पर निर्भर हो जाए? सरकार को जमीनी स्तर के व्यापारी की वास्तविक स्थिति को समझना होगा।' उन्होंने कहा कि डिजिटल भुगतान आज व्यापार की आवश्यकता बन चुका है और व्यापारी ग्राहकों की सुविधा के लिए यूपीआई स्वीकार कर रहा है। इसलिए इस व्यवस्था की लागत का बोझ छोटे व्यापारियों पर डालने के बजाय ऐसा समाधान निकाला जाना चाहिए जिससे ग्राहक और व्यापारी दोनों को सुविधा मिले। सरकार से पुनर्विचार की मांग-विकास जैन ने कहा कि उत्तर प्रदेश युवा व्यापार मंडल व्यापारियों की इस चिंता को सरकार के समक्ष मजबूती से उठाएगा। उन्होंने कहा कि संगठन वित्त मंत्रालय और संबंधित अधिकारियों के समक्ष व्यापारियों की समस्याओं को रखेगा और मांग करेगा कि यूपीआई भुगतान पर व्यापारियों से अतिरिक्त सरचार्ज न लिया जाए। उन्होंने कहा कि देश में डिजिटल अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के साथ-साथ छोटे दुकानदार, खुदरा व्यापारी और पारंपरिक बाजार भी मजबूत रहने चाहिए। डिजिटल इंडिया और मजबूत बाजार व्यवस्था एक-दूसरे के पूरक होने चाहिए, प्रतिस्पर्धी नहीं। व्यापार मंडल ने केंद्र सरकार से आग्रह किया है कि किसी भी नए शुल्क या चार्ज से पहले छोटे एवं मध्यम व्यापारियों पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभाव का व्यापक अध्ययन किया जाए और व्यापारी हित में निर्णय लिया जाए।

आईएमएस नोएडा में डिस्ट्रिक्ट प्ले क्रिएटर्स लीग का आगाज,फुटबॉल मुकाबलों में खिलाड़ी दिखाएंगे दमखम, विजेता टीम को मिलेगा पुरस्कार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-62 स्थित

आईएमएस नोएडा में गुरुवार को चार दिवसीय डिस्ट्रिक्ट प्ले क्रिएटर्स लीग का शुभारंभ हुआ। 17 से 20 सितंबर तक आयोजित होने वाली इस फुटबॉल प्रतियोगिता में खिलाड़ी अपनी खेल प्रतिभा और टीम भावना का प्रदर्शन करेंगे। प्रतियोगिता में कुल 15 मुकाबले खेले जाएंगे। अंतिम दिन सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबला आयोजित किया जाएगा। 7 वर्सेस 7 प्रारूप में आयोजित इस लीग में खिलाड़ियों के बीच रोमांचक मुकाबले देखने को मिलेंगे। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिदिन चार मैच खेले जाएंगे। लीग का उद्देश्य युवाओं को खेल के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करना तथा उनमें अनुशासन, टीमवर्क और प्रतिस्पर्धात्मक भावना को बढ़ावा देना है। आईएमएस नोएडा के वाइस प्रेसिडेंट चिराग गुप्ता ने कहा कि डिस्ट्रिक्ट प्ले क्रिएटर्स लीग युवाओं को अपनी खेल प्रतिभा को निखारने और बड़े मंच पर प्रदर्शन करने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान कर रही है। इस प्रकार के आयोजन खिलाड़ियों में आत्मविश्वास, अनुशासन और टीम भावना को मजबूत करते हैं। हमें उम्मीद है कि प्रतियोगिता में शामिल सभी टीमें पूरे उत्साह और खेल भावना के साथ प्रदर्शन करेंगी। अंतिम दिन होने वाले सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबले खिलाड़ियों के लिए अपनी क्षमता साबित करने का महत्वपूर्ण अवसर होंगे। चार दिवसीय इस प्रतियोगिता के दौरान खेल प्रेमियों में भी उत्साह देखने को मिलेगा।

खिलाड़ी बेहतर प्रदर्शन के लिए मैदान पर उतरेंगे और अपनी टीम को जीत दिलाने के लिए पूरा प्रयास करेंगे।

प्रतियोगिता का समापन 20 सितंबर को होगा।

गणेश जी के दरबार चंदापुर मंदिर में संपन्न 51 बार सिद्ध विनायक स्त्रोत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बाबा जगमोहनेश्वर धाम, चंदापुर मंदिर रायबरेली में आज दिनांक 17 सितंबर 2026 विश्वकर्मा पूजा दिवस पर 51 बार सिध्दीविनायक स्रोत का पाठ आचार्य पंडित अभिषेक मिश्रा द्वारा किया जाएगा मुख्य यजमान आनंद जायसवाल, सर्वेश दीक्षित द्वारा संकल्प लिया गया संपूर्ण कार्यक्रम व्यवस्था प्रभारी धर्मेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि 12 दिवसीय गणपत महोत्सव के अवसर पर मंदिर परिसर में लाइटिंग कराई गई है। नित्य प्रातः एवं शाम को प्रसाद का वितरण हो रहा है मंटू शुक्ला ने बताया विश्वकर्मा भगवान का

जन्म दिवस है जो ब्रह्मा जी के मानस पुत्र हैं जिन्होंने स्वर्ग लोक, पुष्पक विमान, सोने की लंका, भगवान श्री कृष्ण के लिए द्वारका, पांडव के लिए इंद्रप्रस्थ का निर्माण किया । कथा भगवान शिव के लिए त्रिशूल, भगवान विष्णु के लिए चक्र की संरचना किया था विश्व के सबसे पहले इंजीनियर विश्वकर्मा भगवान ही हैं। नित्य प्रात काल 9:00 बजे और रात्रि 7:30 बजे गणेश जी की आरती संपन्न होती है ।

आज की पूजन में रवि सोनी, मंटू शुक्ला, श्रीमती शिशिर, राहुल, कृष्णकांत त्रिपाठी, वैभव मिश्रा, डॉक्टर शकुंतला सिंह, डॉ किरण श्रीवास्तव, उपस्थित उल्लेखनीय रही।

बढ़ती खुदरा कीमतों पर लगाम की कवायद, नोएडा में रु35 किलो प्याज की बिक्री शुरू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। प्याज की बढ़ती खुदरा

कीमतों से आम उपभोक्ताओं को राहत देने के उद्देश्य से भारतीय राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ (एनसीसीएफ) ने नोएडा में बफर स्टॉक के प्याज की रियायती दर पर सीधी खुदरा बिक्री शुरू कर दी है। उपभोक्ताओं को प्याज रु35 प्रति किलोग्राम की दर से उपलब्ध कराया जा रहा है। एनसीसीएफ के इस बाजार हस्तक्षेप का उद्देश्य प्याज की उपलब्धता बढ़ाने के साथ-साथ स्थानीय बाजार में कीमतों को नियंत्रित करने और उपभोक्ताओं को उचित दर पर प्याज उपलब्ध कराना है। उत्तर प्रदेश में इस अभियान की शुरुआत नोएडा से की गई है। इसके तहत शहर के प्रमुख आवागमन केंद्रों, आवासीय इलाकों और व्यस्त व्यापारिक क्षेत्रों में एनसीसीएफ की विशेष मोबाइल वैन पहुंचाई जा रही हैं। इन मोबाइल वैन के माध्यम से उपभोक्ताओं को सीधे रियायती दर पर प्याज उपलब्ध कराया जा रहा है। एनसीसीएफ की योजना नोएडा के साथ-साथ आसपास के प्रमुख क्षेत्रों तक भी मोबाइल वैन के माध्यम से पहुंच बनाने की है। इसके लिए सेक्टर-18, सेक्टर-62, नोएडा मोड़, सेक्टर-4, सेक्टर-9 और सेक्टर-15 सहित कई प्रमुख स्थानों को अभियान में शामिल किया गया।

सोना शर्मा को जिलाध्यक्ष रायबरेली बनाये जाने पर खुशी का इजहार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज, अमेठी। सोना शर्मा को

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी का रायबरेली जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर राष्ट्रीय नाई महासभा शाखा जनपद अमेठी से जुड़े पदाधिकारियों ने खुशी का इजहार किया है। ज्ञातव्य है कि गत दिवस राजधानी में ओमप्रकाश राजभर राष्ट्रीय अध्यक्ष सुभासपा का 63वां जन्मदिन मनाया गया था जिसमें रायबरेली की पार्टी महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष को प्रमोशन देते हुए सुभासपा का रायबरेली का जिलाध्यक्ष बना दिया गया है।सोना शर्मा के इस प्रमोशन पर यानि जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर राष्ट्रीय नाई महासभा शाखा जनपद अमेठी व अन्य ने खुशी जाहिर किया है।

खुशी जाहिर करने वालों में महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष घनश्याम शर्मा, जिलाध्यक्ष रामबरन शर्मा,

महासचिव सजनलाल शर्मा, कोषाध्यक्ष राजकुमार शर्मा, उपाध्यक्ष पवन कुमार फौजी ,कार्यकारी अध्यक्ष राजनाथ शर्मा, गौरीगंज ब्लाक अध्यक्ष प्रदीप शर्मा, लक्ष्मी कान्त शर्मा रामनारायण शर्मा,विजय शर्मा, संतोष शर्मा, दिनेश शर्मा,आदि हैं।

एआईएमसीईए के तहत मनाई गई विश्वकर्मा जयंती

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) कौशांबी। आल इंडिया महापद्मनंद

कम्युनिटी एजुकेटेड एसोशिएशन कौशाम्बी यू पी के तत्वाधान में देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा जी की जयंती समारोह जिला कचेहरी परिसर मंझनपुर कौशाम्बी में मनाया गया, जिसमें नरदेव विश्वकर्मा एडवोकेट, उदित नारायण विश्वकर्मा एडवोकेट, अभयराज विश्वकर्मा एडवोकेट, मुकेश कुमार विश्वकर्मा,अमन शर्मा एडवोकेट,नीतेश एडवोकेट, सुरेंद्र एडवोकेट एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

अमरपाटन के गोरसरी बीट रामनगर में विचरण कर रहे जंगली हाथी ई5/सी4 को ट्रैंक्विलाइजेसन कर बांधवगढ टाईगर रिजर्व उमरिया ले जाया जाएगा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। बुधवार प्रधान मुख्य वन

संरक्षक एवं मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक डॉ. श्रीमती समीता रजौरा की अध्यक्षता में वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से एलीफेंट एडवाइजरी कमेटी की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें विषय विशेषज्ञों के साथ वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में वनमण्डल मैहर के परिक्षेत्र अमरपाटन में विचरण कर रहे नर हाथी E-5 के एनिमल विहैवियर की समुचित समीक्षा की गयी एवं विगत 10 दिनों से किये जा रहे गहन अनुश्रवण एवं पर्यवेक्षण के परिणामों का विश्लेषण किया गया क्षेत्र की संवेदनशील परिस्थितियों पर विचार किया गया। मानव वन्यप्राणी द्वंद की स्थिति को समाप्त करने के लिये उक्त नर हाथी को ट्रैंकुलाइज कर बांधवगढ टाईगर रिजर्व उमरिया ले जाने का निर्णय लिया गया। समुचित वैज्ञानिक प्रबंधन अंतर्गत स्टैण्डर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर का पालन करते हुए उक्त हाथी का ट्रांसलोकेशन बांधवगढ टाईगर रिजर्व में किया जाएगा। उक्त कार्य के लिए बुधवार को 02 और हाथी गोरसरी कैंप में ज्वाइन करेंगे इस प्रकार कुल 04 हाथियों के माध्यम से विषय विशेषज्ञ चिकित्सकों की देखरेख में नियमानुसार उक्त रेस्क्यू ऑपरेशन तत्काल किया जाएगा। आगामी 02-03 दिन मे हाथी का सफल रेस्क्यू किया जाएगा ,इसके लिए रेस्क्यू ऑपरेशन की पूरी तैयारी की जा रही है। शीघ्र ही उक्त हाथी बांधवगढ टाईगर रिजर्व स्थानांतरित किया जाएगा। इस अवधि में आम जनमानस, जन प्रतिनिधियों, इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया एवं समस्त प्रशासनिक अमले से अनुरोध है कि हाथी विचरण क्षेत्र में न्यूनतम सुरक्षात्मक दूरी एवं ग्रामीणों को पक्के भवन यथा पंचायत भवन/सामुदायिक भवन में स्थानांतरित करने एवं कानून एवं व्यवस्था बनाये रखने के लिए सक्रिय एवं त्वरित सहयोग की आवश्यकता है ताकि हाथी के द्वारा किसी भी प्रकार की जानहानि की पुर्नावृत्ति न हो।

अतः फ्रंट लाईन अधिकारियों को निर्देशित करने का कष्ट करें कि हाथी विचरण क्षेत्र में उपस्थित रहकर आवश्यक सहयोग एवं समन्वय करें ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति निर्मित न हो।

फसल हानि होने पर राजस्व पुस्तक परिपत्र के अनुसार क्षतिपूर्ति की जाएगी। विद्युत विभाग से अनुरोध है कि विचरण अवधि में विचरण क्षेत्र पर विद्युत का प्रवाह आवश्यकतानुसार बाधित रखें ताकि इलेक्ट्रोक्यूशन की न हो।

प्रधानमंत्री जी के जन्मदिवस पर सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत हुआ रक्तदान महादान

देवपुर, घोरावल एवं मेडिकल कॉलेज ब्लड बैंक में आयोजित शिविरों में लोगों ने बढ़-चढ़कर किया रक्तदान,रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देकर किया गया सम्मानित, जनप्रतिनिधियों ने बढ़ाया उत्साह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर सेवा

संकल्प अभियान के अंतर्गत जनपद सोनभद्र में विभिन्न प्रमुख स्थलों पर रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया। शिविरों में बड़ी संख्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया। इसी क्रम में देवपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आयोजित रक्तदान कार्यक्रम में रक्तदान करने वाले रक्तदाताओं को प्रदेश सरकार के समाज कल्याण राज्य मंत्री श्री संजीव कुमार गौड़ एवं अनुसूचित जनजाति आयोग के उपाध्यक्ष श्री जीत सिंह खरवार द्वारा रक्तदाता प्रमाण पत्र वितरित कर सम्मानित किया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घोरावल में माननीय विधायक घोरावल डॉ. अनिल कुमार मौर्य की उपस्थिति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान कर सेवा एवं मानवता का संदेश दिया। इस अवसर पर विधायक डॉ. अनिल कुमार मौर्य ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि रक्तदान मानव जीवन बचाने का पुनीत कार्य है। रक्त की आवश्यकता किसी भी व्यक्ति को कभी भी पड़ सकती है, ऐसे में स्वस्थ व्यक्तियों द्वारा किया गया रक्तदान जरूरतमंदों के लिए जीवनदायी साबित होता है। उन्होंने लोगों से आगे आकर नियमित रूप से रक्तदान करने तथा अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। वहीं मेडिकल कॉलेज ब्लड बैंक में आयोजित रक्तदान शिविर में सदर विधायक श्री भूपेश चौबे, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री नंदलाल गुप्ता, पूर्व सांसद श्री नरेंद्र सिंह कुशवाहा, पूर्व जिलाध्यक्ष श्री अजीत चौबे, पूर्व जिलाध्यक्ष श्री रमेश मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति में रक्तदाताओं ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया। इस अवसर पर समाज कल्याण राज्य मंत्री श्री संजीव कुमार गौड़ ने कहा कि रक्तदान महादान के समान है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जनपद के प्रमुख चिन्हित स्थलों पर रक्तदान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों में अधिक से अधिक लोग सहभागी होकर रक्तदान कर रहे हैं। रक्तदान जरूरतमंद मरीजों के जीवन को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सदर विधायक श्री भूपेश चौबे ने कहा कि रक्तदान मानव सेवा का महत्वपूर्ण कार्य है।

प्रधानमंत्री जी के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित सेवा संकल्प अभियान के तहत रक्तदान के लिए लोगों का आगे आना समाज में सेवा, सहयोग और संवेदनशीलता की भावना को दर्शाता है।

उन्होंने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए अन्य लोगों से भी इस पुनीत कार्य में सहभागी बनने का आह्वान किया। कार्यक्रमों के दौरान रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किए गए तथा रक्तदान के प्रति जन-जागरूकता का संदेश दिया गया।

अवैध कच्ची शराब के विरुद्ध आबकारी विभाग की कार्रवाई, 20 लीटर शराब बरामद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बुधवार को

आबकारी आयुक्त, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज के निर्देश के क्रम में अवैध शराब के निर्माण, बिक्री एवं तस्करी के विरुद्ध चलाए जा रहे प्रवर्तन अभियान के तहत उप आबकारी आयुक्त, लखनऊ प्रभार के मार्गदर्शन एवं जिला आबकारी अधिकारी, रायबरेली के नेतृत्व में आबकारी निरीक्षक क्षेत्र-1 प्रशांत कुमार ने हमराह टीम के साथ विभिन्न स्थानों पर दबिश दी। अभियान के दौरान सदर तहसील के थाना मिल एरिया अंतर्गत सरदार का पुरवा में कच्ची शराब बनाने के अड्डों एवं संदिग्ध घरों पर दबिश दी गई। कार्रवाई में कुल 20 लीटर (18 प्लस 2 लीटर) अवैध कच्ची शराब बरामद की गई तथा 80 किलोग्राम लहन बरामद कर मौके पर नष्ट कराया गया।

मामले में एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर थाना मिल एरिया में आबकारी

अधिनियम की सुसंगत धाराओं में एफआईआर दर्ज कर आवश्यक विधिक कार्रवाई की गई।

स्कूली वाहनों पर कार्रवाई, 15 का चालान और छह वाहन सीज, महिला कंडक्टर अनिवार्य, चालक का नाम और स्कूल का मोबाइल नंबर वाहन पर लिखना जरूरी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बुधवार को मिशन सेफ

फ्यूचर 3.0 के अंतर्गत स्कूली वाहनों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान में परिवहन विभाग ने कार्रवाई तेज कर दी है। 14 सितंबर से जारी अभियान के तीसरे दिन कुल 15 स्कूली वाहनों का चालान किया गया, जबकि छह वाहनों को सीज कर दिया गया। एआरटीओ प्रशासन कौशल कुमार सिंह के नेतृत्व में पीटीओ मनोज कुमार गुप्ता ने विभिन्न स्थानों पर स्कूली वाहनों की सघन जांच की। इस दौरान वाहनों के फिटनेस, प्रदूषण प्रमाणपत्र, बीमा, परमिट तथा वाहन चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस समेत अन्य जरूरी अभिलेखों की जांच की गई। चेकिंग के दौरान स्कूल प्रबंधन को स्पष्ट निर्देश दिया गया कि स्कूली बसों में महिला कंडक्टर की तैनाती अनिवार्य है। एआरटीओ कौशल कुमार सिंह ने कहा कि महिला सुरक्षा को लेकर शासन के स्पष्ट निर्देश हैं। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रत्येक स्कूली वाहन पर चालक का नाम, स्कूल का नाम और स्कूल का मोबाइल नंबर स्पष्ट रूप से अंकित होना चाहिए। इसके साथ ही स्कूल प्रबंधन को वाहन चालकों का चरित्र प्रमाणपत्र बनवाकर आवश्यक जांच-पड़ताल के बाद ही उन्हें वाहन संचालन की जिम्मेदारी देने के निर्देश दिए गए हैं। परिवहन विभाग ने स्कूल प्रबंधन से स्कूली वाहनों के सभी जरूरी दस्तावेज दुरुस्त रखने तथा सुरक्षा मानकों का अनिवार्य रूप से पालन करने की अपील की है।

दुद्धी में नवजात बालिका मिली, चाइल्ड हेल्पलाइन ने किया रेस्क्यू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बुधवार को को दुद्धी

तहसील के रजखड़ स्थित गुप्ता मोड़ के समीप एक नवजात बालिका शिशु लावारिस अवस्था में मिलने की सूचना प्राप्त हुई। मामले का संज्ञान लेते हुए परियोजना समन्वयक श्री मुकेश कुमार सिंह द्वारा तत्काल एक टीम गठित कर मौके पर भेजा गया। जिला प्रोबेशन कार्यालय के वरिष्ठ सहायक श्री राजेश सिंह के मार्गदर्शन में चाइल्ड हेल्पलाइन से श्रीमती सीमा शर्मा, श्री सत्यम चौरसिया एवं राजकीय

विशेष दत्तक ग्रहण इकाई से सुश्री ललिता शामिल रहीं। टीम द्वारा नवजात को सुरक्षित रेस्क्यू कर अपनी अभिरक्षा में लिया गया। तत्पश्चात नियमानुसार नवजात बालिका को बाल कल्याण समिति, सोनभद्र के समक्ष प्रस्तुत किया गया। समिति के आदेशानुसार बालिका को राजकीय बाल गृह (शिशु) में आवासित कराया गया है, जहाँ वह पूर्णतः सुरक्षित है।

'विकसित भारत क्विज' से राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनेंगे युवा, 30 सितम्बर तक करें प्रतिभाग

राष्ट्रीय स्तर पर चयनित युवाओं को प्रधानमंत्री के समक्ष अपने विचार एवं नवाचार प्रस्तुत करने का मिलेगा अवसर, 15 से 29 वर्ष के युवा ले सकेंगे हिस्सा, 22 भाषाओं में आयोजित हो रही प्रश्नोत्तरी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बुधवार को युवाओं को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ने तथा उनके नेतृत्व, नवाचार एवं रचनात्मक विचारों को राष्ट्रीय मंच प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित 'विकसित भारत क्विज' में जनपद के युवाओं से अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभाग करने की अपील की गई है। जिला युवा अधिकारी, मेरा युवा भारत, सोनभद्र ने 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग के पात्र युवाओं से इस राष्ट्रीय पहल में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया है। राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन वर्ष 1995 से प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद जी की जयंती के अवसर पर किया जाता रहा है। वर्ष 2025 में प्रधानमंत्री के निर्देशन में राष्ट्रीय युवा महोत्सव को नया स्वरूप देते हुए 'विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद' के रूप में आयोजित किया गया। इसी क्रम में 30वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव-विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद-2027 का आयोजन किया जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी का अवसर देने के साथ उनमें नेतृत्व क्षमता, नवाचार, रचनात्मक चिंतन एवं समाधान आधारित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना है। भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प के तहत आयोजित 'विकसित भारत क्विज' युवाओं को देश के भविष्य को आकार देने और 'विकसित भारत @2047'

की परिकल्पना से जुड़ने का अवसर प्रदान करेगी। यह प्रश्नोत्तरी 22 भाषाओं में आयोजित की जा रही है। पांच चरणों में होगा विकसित भारत युवा संवादः- प्रथम चरण–प्रश्नोत्तरी (17 अगस्त-30 सितम्बर 2026): विकसित भारत एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े विषयों पर प्रश्नोत्तरी में प्रतिभाग। द्वितीय चरण–निबंध लेखन (05-09 अक्टूबर 2026): चयनित युवा विकसित भारत से जुड़े विषयों पर अपने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत करेंगे। तृतीय चरण–जिला स्तरीय प्रतियोगिता (10-16 नवम्बर 2026): प्रतिभागी अपने विचारों, नवाचारों एवं समाधानों का प्रस्तुतीकरण करेंगे। चतुर्थ चरण–राज्य स्तरीय युवा संवाद (17 नवम्बर-07 दिसम्बर 2026): जिला स्तर पर चयनित युवा राज्य स्तर पर अपने विचार एवं कार्ययोजना प्रस्तुत करेंगे। पंचम चरण–राष्ट्रीय युवा संवाद (10-12 जनवरी 2027): राज्य स्तर से चयनित युवाओं को राष्ट्रीय मंच पर अपने विचार एवं नवाचार प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा। प्रतियोगिता में भविष्य का सुशासन, शहरी परिवर्तन एवं नागरिक सेवाएं, जलवायु सुरक्षा, सीमावर्ती एवं पर्वतीय क्षेत्रों का सतत विकास, जनसांख्यिकीय लाभांश, मानव संसाधन एवं युवा विकास, सतत औद्योगिकीकरण, प्राकृतिक संसाधन आधारित विकास, विनिर्माण, उद्यमिता एवं हरित विकास, जनजातीय नेतृत्व एवं समावेशी विकास, नवाचार आधारित अर्थव्यवस्था, पर्यटन एवं रचनात्मक उद्योग, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार, भविष्य के लिए तैयारी एवं रोजगार क्षमता, नीली अर्थव्यवस्था तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर युवाओं को अपने विचार रखने का अवसर मिलेगा। प्रधानमंत्री के समक्ष विचार रखने का मिलेगा अवसरः-विभिन्न चरणों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय युवा संवाद के लिए चयनित युवाओं को देश के समक्ष अपने विचार, विजन एवं नवाचार प्रस्तुत करने के साथ ही प्रधानमंत्री के समक्ष अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त होगा। जिला युवा अधिकारी, मेरा युवा भारत, सोनभद्र ने जनपद के सभी पात्र युवाओं से अपील की है कि वे 30 सितम्बर, 2026 तक 'विकसित भारत क्विज' में अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभाग कर राष्ट्र निर्माण के इस अभियान से जुड़ें तथा 'विकसित भारत @2047' के संकल्प को साकार करने में अपनी भूमिका निभाएं।

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत ऑनलाइन आवेदन 20 से 27 सितंबर तक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अंतर्गत विभिन्न परियोजनाओं में उपलब्ध अवशेष लक्ष्य के सापेक्ष जनसामान्य को योजना का लाभ प्रदान करने के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इसके लिए विभागीय पोर्टल http://fisheries.up.gov.in को पुनः 20 सितंबर 2026 से 27 सितंबर 2026 तक खोला जा रहा है। ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 27 सितंबर 2026 निर्धारित है। योजना के अंतर्गत जलाशय में 65,000 मत्स्य अंगुलिका संचय कार्यक्रम (सामान्य, महिला एवं अनुसूचित जाति), जनपद गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, संत कबीर नगर, बाराबंकी, सुल्तानपुर, बहराइच, बांदा, महोबा एवं फतेहपुर के लिए Backyard RAS की 241 यूनिट (महिला वर्ग) तथा प्रदेश के समस्त जनपदों के लिए पारंपरिक मछुआरों के परिवारों हेतु आजीविका एवं पोषण संबंधी सहायता परियोजनाओं के अंतर्गत 500 यूनिट (सामान्य, महिला एवं अनुसूचित जाति) के लिए आवेदन प्राप्त किए जाएंगे। योजनान्तर्गत परियोजनाओं का विवरण, इकाई लागत, आवेदन की प्रक्रिया, आवेदन के साथ संलग्न किए जाने वाले आवश्यक अभिलेख तथा अन्य विस्तृत जानकारी विभागीय पोर्टल http://fisheries.up.gov.in पर उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त मत्स्य विभाग के जनपदीय, मंडलीय एवं सहायक निदेशक मत्स्य के कार्यालय से किसी भी कार्य दिवस में योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। सहायक निदेशक मत्स्य शुभम कश्यप ने जनपद के मत्स्य पालकों, मत्स्ययोजना का लाभ प्रदान किया जा सके।

हिण्डालको के अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी रवि सिंह का सीबीएसई नेशनल चैंपियनशिप में नेशनल रेफरी के रूप में चयन

सोनभद्र रेणुकूट के रवि सिंह का सीबीएसई नेशनल चैंपियनशिप में नेशनल रेफरी के रूप में चयन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र/रेणुकूट। जिला सोनभद्र के रेणुकूट निवासी रवि सिंह,

पुत्र स्व0 महामाया प्रसाद सिंह, रवि सिंह जो हिण्डालको इंडस्ट्रीज लिमिटेड, रेणुकूट के विभाग ब्वायलर को-जेनरेशन में कार्यरत अंतर्राष्ट्रीय ताईक्वानडो खिलाड़ी रवि सिंह का सीबीएसई नेशनल ताईक्वानडो चैंपियनशिप-2026 में नेशनल रेफरी के रूप में चयन हुआ है। प्रतियोगिता का आयोजन 19 से 24 सितंबर 2026 तक बाल विकास प्रोग्रेसिव स्कूल जटल पानीपत हरियाणा में आयोजित किया जाएगा। रवि सिंह ने विश्व चैंपियनशिप में भारत के लिए सिल्वर मेडल हासिल कर देश और हिण्डालको रेनुकूट का गौरव बढ़ाया है। वे कई अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। खिलाड़ी के रूप में शानदार प्रदर्शन के बाद अब सीबीएसई नेशनल चैंपियनशिप में नेशनल रेफरी के रूप में उनकी नियुक्ति उनके खेल अनुभव और उपलब्धियों में एक और महत्वपूर्ण अध्याय है। रवि सिंह नेशनल रेफरी, एनआईएस कोच एवं चौथी डान ब्लैक बेल्ट हैं। वे ताईक्वानडो खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देने के साथ-साथ विद्यालयों में बालिकाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण भी प्रदान करते हैं। हिण्डालको में अपनी ड्यूटी के साथ खेल के क्षेत्र में लगातार राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियां हासिल करने वाले रवि सिंह की इस उपलब्धि पर हिण्डालको रेनुकूट, सोनभद्र एवं खेल जगत से जुड़े लोगों ने खुशी व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

जंगल, जमीन, विंध्य एक्सप्रेसवे और बिजली कटौती को लेकर एक बार फिर किसान नौजवान संघर्ष मोर्चा ने जिला मुख्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया

संयोजक संदीप मिश्रा के नेतृत्व में बड़ी संख्या में ग्रामीण जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए ज्ञापन सौंपा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। संदीप मिश्रा ने आरोप

लगाया कि जंगल और जमीन छीनकर विंध्य एक्सप्रेसवे के नाम पर किसानों का शोषण किया जा रहा है, जिसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि नगवां क्षेत्र में लगातार बिजली कटौती से ग्रामीण परेशान हैं और इसकी जिम्मेदारी बिजली विभाग के अधिकारियों पर है। प्रदर्शन के दौरान संदीप मिश्रा ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि पूर्व में आंदोलन करने के कारण उनके परिवार को प्रशासनिक कार्रवाई का सामना करना पड़ा। उनके अनुसार, उनके भाई के पेट्रोल पंप की जांच कई टीमों के साथ की गई और ऐसा व्यवहार किया गया मानो कोई बड़ा अपराध हुआ हो। उन्होंने दावा किया कि बाद में न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद पेट्रोल पंप दोबारा संचालित हुआ। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि आईजीआरएस शिकायत के आधार पर उनके घर पुलिस भेजी गई और उन्हें झूठे मामलों में फंसाने की कोशिश की जा रही है संदीप मिश्रा का कहना है हमारे उपर गाजा बेचने का आरोप जो लगा रहा है इसकी जिलाधिकारी जाँच कराए और जो दोषी पाया जाय उस पर कड़ी कार्यवाही की जाय अन्यथा आन्दोलन होग यह सब जंगल, जमीन और विंध्य एक्सप्रेसवे के आन्दोलन को कुचलने के लिए जनपद प्रशासन का कुचक्र है। आज के कार्यक्रम में प्रमुख रुप से नगेन्द्र लाकरा रामकरन गोण बैजनाथ गोण राधा धागर विन्दू खरवार दिनेश चेरो आकाश चौहान सत्रुधन बिन्द सन्जय बियार विजय चौहान सीता चेरो व सैकड़ों आदिवासी उपस्थित रहे।

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICE

ADDRESS- Naini,Prayagraj U.P-211008. PAN No. ABJPA1540R,Reg.No.03-0068604

Regd. Under Additional Director General of Police U.P. vide Reg. No. 2453
+91-7985619757,+91-7007472337

We Are Providing Security & Manpower Services in School/ University/Institute/ Hospital/Office Premises

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES:-
takes great pleasure in Providing Security arrangement and Office Staff for your Organization premises. We have with us talented and well trained Disciplined persons, each having exposure to industrial/commercial security and intelligence knowledge in their field. Our personnel's are physically fit, courageous disciplined and well trained in their field. They are bold but polite, peace loving but not coward, friendly but shrews while duty, sharp in act but very claim and affable where presence of mind is lost by the common man, ailing but smelling the red hounds, work in the common climate but vigilant and faithfully to the organization. It is on account of the above trait that our services are engaged by reputed organization which consists of Schools, University, Banks, Government, industrial Concern, Hotels, Hospitals, Educational Institutes, Housing Societies/Bungalows, Semi Government and Government Organization.

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES is registered by:-
Additional Director General of Police, (Law & Order), Deputy Labour Commissioner, Employees Provident Fund Organization, Employees State Insurance Corporation, Goods & Services Tax, MSME Registration..(Govt. of India)

FOR JOB CONTACT:- 9569430885

INDIAN SECURITY AND MANPOWER SERVICES Manpower Category:-
Assignment Manager, Housekeeping Manager, Assignment Supervisor, Housekeeping Supervisor, Accountant, Driver, Computer Operator, Electrician, Data Entry operator, Carpenter, Clerk, Office Boy, M.T.S, Sweeper, Peon, Gardner, Computer Teacher, Agriculture Labour, TGT & PGT Teacher, Quality/Technical Manpower as per your requirement

स्पोर्ट्स

पार्थिव पटेल और प्रज्ञान ओझा चीफ सिलेक्टर पद के दावेदार,अजीत अगरकर का कार्यकाल इसी महीने खत्म होगा, बीसीसीआई की एनुअल मीटिंग आज

स्पोर्ट डेस्क। बीसीसीआई के चीफ सिलेक्टर अजीत अगरकर का कार्यकाल इसी महीने खत्म हो रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, उन्हें कार्यकाल में एक्सटेंशन मिलने की संभावना कम है। अगरकर की जगह पूर्व भारतीय क्रिकेटर पार्थिव पटेल और प्रज्ञान ओझा पद के दावेदार हैं। बीसीसीआई की एनुअल जनरल मीटिंग शुक्रवार को होनी है। अगरकर बुधवार को हुई चयन बैठक की अध्यक्षता कर चुके हैं। ऐसे में यह बैठक बतौर चीफ सिलेक्टर उनकी आखिरी बैठक हो सकती है। अगरकर की अध्यक्षता वाली सिलेक्शन कमेटी ने वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली व्हाइट-बॉल सीरीज और ईरानी ट्रॉफी के लिए टीमों का ऐलान किया। इसके अलावा, अगरकर ने रेस्ट ऑफ इंडिया (आरओआई) टीम के चयन में भी भूमिका निभाई। अगरकर

के कार्यकाल में भारत ने तीन खिताब जीते-पूर्व तेज गेंदबाज अगरकर को जुलाई 2023 में टीम इंडिया की सिलेक्शन कमेटी का चेयरमैन बनाया गया था। अगरकर के कार्यकाल में टीम इंडिया 2024 में टी-20 वर्ल्ड कप और पिछले साल की शुरुआत में चैंपियंस ट्रॉफी जीती थी। इसके अलावा, टीम इंडिया 2023 के वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल में भी पहुंची थी। जहां उसे ऑस्ट्रेलिया के हाथों हार मिली थी। इसके अलावा टीम ने इस साल टी-20 वर्ल्ड कप खिताब भी डिफेंड किया। पार्थिव-प्रज्ञान तीन-तीन बार चैंपियन टीम का हिस्सा रहे-एनडीटीवी को एक सूत्र ने बताया कि पूर्व विकेटकीपर पार्थिव पटेल और पूर्व स्पिनर प्रज्ञान ओझा, अजीत अगरकर की जगह बीसीसीआई के चीफ सिलेक्टर बनने की दौड़ में सबसे आगे हैं। पार्थिव पटेल और प्रज्ञान ओझा दोनों पूर्व भारतीय क्रिकेटर हैं। पार्थिव विकेटकीपर-बल्लेबाज रहे हैं, जबकि ओझा स्पिनर थे। दोनों आईपीएल में तीन-तीन बार चैंपियन टीम का हिस्सा रह चुके हैं। पार्थिव के नाम 1700 से ज्यादा इंटरनेशनल रन-पार्थिव पटेल ने भारत के लिए 25 टेस्ट, 38 वनडे और 2 टी-20 इंटरनेशनल खेले। उन्होंने टेस्ट में 934, वनडे में 736 और टी-20 इंटरनेशनल में 36 रन बनाए। विकेटकीपर के तौर पर उन्होंने इंटरनेशनल क्रिकेट में 103 कैच और 19 स्टंपिंग कीं। प्रज्ञान ने इंटरनेशनल करियर में 140 प्लस विकेट लिए-प्रज्ञान ओझा ने भारत के लिए 24 टेस्ट, 18 वनडे और 6 टी-20 इंटरनेशनल खेले। बाएं हाथ के स्पिनर ओझा ने टेस्ट में 113, वनडे में 21 और टी-20 इंटरनेशनल में 10 विकेट लिए। टेस्ट में उनका बेस्ट परफॉर्मेंस 6/47 रहा।

बारिश में बढ़ते डेंगू-मलेरिया के केसेज,घर में इन जगहों पर छिपे हो सकते हैं मच्छर, जानें कैसे करें बचाव

मुंबई। इन दिनों डेंगू के केसेज काफी बढ़ रहे हैं। पिछले दिनों एक्ट्रेस स्वरा भास्कर, श्वेता तिवारी और अविका गोर के डेंगू पॉजिटिव होने की खबर आई थी। हर साल बारिश के मौसम में डेंगू, मलेरिया जैसी मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों के मामले तेजी से बढ़ते हैं। 'नेशनल सेंटर फॉर वेक्टर बोर्न डिजीज कंट्रोल' (एनसीवी बीडीसी) के मुताबिक, भारत में साल 2024 में डेंगू के कुल 2,33,519 केस दर्ज हुए। इनमें से 297 लोगों की मृत्यु हो गई। वहीं साल 2024 में देश में मलेरिया के 2.55 लाख से ज्यादा मामले सामने आए। इनमें करीब 86 लोगों की मौत हुई। साल 2022 में 'नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन' में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, मानसून में मच्छरों को पनपने के लिए अनुकूल माहौल मिलता है। इस कारण मच्छर जनित बीमारियों के केस बढ़ जाते हैं। इसलिए, आज 'जरूरत की खबर' में डेंगू-मलेरिया के बारे में विस्तार से बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-डेंगू-मलेरिया के लक्षण क्या हैं? इससे बचने के लिए क्या करें? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. संदीप दोशी, कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल, मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मानसून में डेंगू और मलेरिया ज्यादा क्यों फैलता है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- बारिश के दौरान जगह-जगह पानी जमा हो जाता है। जमा पानी में मच्छर तेजी से पैदा होते हैं। नमी और तापमान मच्छरों के पनपने के लिए अनुकूल माहौल बनाते हैं। पानी की खराब निकासी और आसपास जमा गंदगी संक्रमण का रिस्क बढ़ाते हैं। सवाल- किन जगहों पर इनके मच्छर पनपने का रिस्क सबसे ज्यादा है? जवाब- इन जगहों पर मच्छर पनपने का रिस्क ज्यादा होता है- 1. घर के अंदर-कूलर, एसी ट्रे और फ्रिज की ट्रे में जमा पानी। टब या खुले कंटेनर। फूलदान, गमलों की प्लेट। बाथरूम में लंबे समय तक जमा पानी। 2. आउटडोर एरिया-छत पर जमा बारिश का पानी। पुराने टायर, बोतल, डिब्बे या कबाड़। पानी के खुले टैंक। नालियां और ड्रेनेज सिस्टम, जहां पानी रुकता है। कंस्ट्रक्शन साइट्स पर जमा पानी। 3. सोसाइटी/कॉलोनी एरिया-पार्क या गार्डन में पानी भरे गड्ढे। खराब स्ट्रीट ड्रेनेज। खाली प्लॉट में जमा बारिश का पानी। कचरे के ढेर में फंसा पानी। सवाल- क्या घर के अंदर भी डेंगू और मलेरिया के मच्छर पैदा हो सकते हैं? जवाब- हां, डेंगू फैलाने वाले एडीस एजिप्टी मच्छर साफ और रुके हुए पानी में अंडे देते हैं। वहीं मलेरिया फैलाने वाले एनोफेलीज मच्छर गंदे या ठहरे पानी में पनपते हैं। घर के अंदर जमा थोड़ा-सा पानी भी इन मच्छरों के लिए पर्याप्त होता है। फ्रिज की ड्रिप ट्रे, कूलर में जमा पानी, गमलों पौधों की ट्रे, आसपास पानी की टंकी, बाथरूम, कोने खुले ड्रेनेज/ नालियां बालकनी में जमा पानी

खुले में जमा कबाड़। सवाल- डेंगू-मलेरिया के लक्षण क्या हैं? जवाब- दोनों ही मच्छरों के काटने से होने वाली बीमारियां हैं। इनके शुरुआती लक्षण अक्सर सामान्य बुखार जैसे लगते हैं। हालांकि इसमें कुछ अंतर होते हैं। डेंगूः-अचानक तेज बुखार, तेज सिरदर्द, आंखों के पीछे दर्द, जॉइंट्स, मसल्स पेन, जी मिचलाना, स्किन रैशेज, कमजोरी, थकान, प्लेटलेट्स गिरना, नाक / मसूड़ों से खून आना.मलेरियाः- ठंड के साथ बुखार, सिरदर्द, उल्टी और मतली, शरीर में दर्द, गंभीर मामलों, सांस लेने में कमजोरी, बेहोशी, तकलीफ। सवाल- डेंगू-मलेरिया का पता कैसे चलता है? जवाब- इसके लिए डॉक्टर ब्लड टेस्ट कराते हैं। हर टेस्ट बीमारी के अलग फेज और गंभीरता को समझने में मदद करता है। डेंगू के टेस्ट-एनएस1 एंटीजन टेस्टः शुरुआती 1-5 दिनों में वायरस की पहचान करता है। IgM/IgG एंटीबॉडी टेस्टः 5 दिन बाद संक्रमण की पुष्टि करता है। सीबीसी (कम्प्लीट ब्लड काउंट)ः प्लेटलेट्स और अन्य ब्लड पैरामीटर्स की जानकारी देता है। मलेरिया के टेस्ट-मलेरिया पैरासाइट टेस्टः ब्लड में मलेरिया पैरासाइट की पहचान करता है। रैपिड डायग्नोस्टिक टेस्ट (आरडीटी)ः 15-20 मिनट में रिजल्ट देता है। सीबीसी (कम्प्लीट ब्लड काउंट)ः बीमारी की गंभीरता का अंदाजा लगाने में मदद करता है। सवाल- डेंगू-मलेरिया का इलाज क्या है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- डेंगू का इलाज-इसकी कोई खास एंटीवायरल दवा नहीं होती। पैरासिटामोल से बुखार और दर्द कंट्रोल किया जाता है। पर्याप्त पानी, ओआरएस, जूस जैसे फ्लुइड देना जरूरी है। प्लेटलेट काउंट मॉनिटर किया जाता है। गंभीर मामलों में अस्पताल में भर्ती और जरूरत पड़ने पर प्लेटलेट ट्रांसफ्यूजन की जरूरत पड़ सकती है। मलेरिया का इलाज-डॉक्टर की सलाह से एंटी-मलेरियल दवाएं दी जाती हैं। बुखार और दर्द के लिए सपोर्टिव ट्रीटमेंट दिया जाता है। समय पर पूरा दवा कोर्स करना बहुत जरूरी है। गंभीर केस में अस्पताल में भर्ती होना पड़ सकता है। बारिश के मौसम में डेंगू, मलेरिया का रिस्क बढ़ जाता है। इसलिए बुखार को सामान्य समझकर इग्नोर न करें। लक्षण दिखते ही डॉक्टर से सलाह लें सही समय पर इलाज से बीमारी को गंभीर होने से रोका जा सकता है। सवाल- कब डॉक्टर को दिखाना जरूरी है? जवाब- इन स्थितियों में तुरंत डॉक्टर के पास जाएं- 1-2 दिन से ज्यादा तेज बुखार (102°F या इससे ज्यादा) रहे। ठंड के साथ बुखार आए। बुखार के साथ बेहोशी, भ्रम या ज्यादा सुस्ती लगे। लगातार उल्टी हो। कमजोरी महसूस हो या चक्कर आए। शरीर पर लाल चकत्ते दिखें। नाक या मसूड़े से खून आए। तेज पेट दर्द हो। सांस लेने में परेशानी हो। सवाल- किन लोगों को रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- डेंगू-मलेरिया किसी को भी हो सकता है, लेकिन कुछ लोगों में ये ज्यादा गंभीर हो सकता है, जैसेकि-जिनकी इम्यूनिटी कमजोर है। जिन्हें क्रॉनिक डिजीज है। जिन्हें पहले डेंगू हो चुका है। जो मच्छर-प्रभावित इलाकों में रहते हैं। बच्चे और बुजुर्ग। गर्भवती महिलाएं। सवाल- डेंगू-मलेरिया से बचने के लिए क्या करें? जवाब- थोड़ी-सी सावधानी से इन बीमारियों से काफी हद तक बचा जा सकता है। आसपास पानी न ठहरने दें। कूलर का पानी रोज बदलें। नालियां, ड्रेनेज साफ रखें। फ्रिज ट्रे साफ रखें। खिड़की-दरवाजों में जाली लगाएं। मच्छरदानी लगाकर सोएं। घर में सफाई रखें। कचरा इकट्ठा न होने दें। फुल स्लीव्स कपड़े पहनें। पानी की टंकी ढककर रखें। मॉस्किटो रिपेलेंट लगाएं। सवाल- मच्छर भगाने के घरेलू उपाय क्या हैं? जवाब- पॉइंटर्स से समझिए- नीम का धुआंः सूखी नीम की पत्तियां जलाने से मच्छर दूर भागते हैं। कपूरः कमरे में कपूर जलाने या रख देने से मच्छर कम होते हैं। नीम का तेलः स्किन पर लगाने से नेचुरल रिपेलेंट का काम करता है। लहसुन का स्प्रेः पानी में लहसुन उबालकर छिड़काव करने से मच्छर कम आते हैं। तुलसी का पौधाः घर के आसपास तुलसी लगाने से मच्छरों की संख्या कम होती है। लेमनग्रास/सिट्रोनेला ऑयलः इसकी खुशबू मच्छरों को पसंद नहीं होती है। लौंग और नींबूः नींबू में लौंग लगाकर कमरे में रखने से इसकी खुशबू से भी मच्छर दूर रहते हैं। सवाल- अगर डेंगू-मलेरिया हो जाए तो क्या करें? जवाब- ऐसी स्थिति में समय पर सही इलाज और देखभाल जरूरी है। इसलिए ग्राफिक में दी गई कुछ बातों का खास ख्याल रखें- बॉडी को आराम दें। पर्याप्त पानी पिएं। पर्याप्त नींद लें। दवा का कोर्स पूरा करें। बिल्कुल मेहनत न करें। सभी दवाएं समय पर लें। नारियल पानी, ओआरएस, जूस लें। डेंगू-मलेरिया से जुड़े कुछ कॉमन सवाल और जवाब-सवाल- क्या डेंगू-मलेरिया संक्रामक बीमारी है? जवाब-नहीं, डेंगू और मलेरिया सीधे एक व्यक्ति से दूसरे में नहीं फैलते हैं। ये बीमारियां संक्रमित मच्छर के काटने से फैलती हैं। सवाल-क्या एक बार डेंगू होने के बाद दोबारा नहीं होता? जवाब- नहीं, इसके 4 अलग-अलग प्रकार (सीरोटाइप) होते हैं। इसलिए एक बार होने के बाद भी दूसरी बार संक्रमण का रिस्क रहता है। दूसरी बार यह ज्यादा गंभीर भी हो सकता है। सवाल- डेंगू-मलेरिया होने पर क्या गलतियां नहीं करनी चाहिए? लक्षणों को इग्नोर न करें। बुखार में काम न करें। खुद से एंटीबायोटिक न लें। खुद से पेनकिलर्स न लें। ब्लड टेस्ट डिले न करें। सवाल- डेंगू-मलेरिया में क्या खाना-पीना चाहिए और क्या नहीं? जवाब- डेंगू-मलेरिया होने पर खानपान को लेकर सावधानियां बरतनी चाहिए-क्या लें? हल्का और सुपाच्य खाना (खिचड़ी, दलिया)। पानी, ओआरएस, नारियल पानी, सूप। फल जैसे पपीता, सेब, अनार। क्या न लें? तला-भुना और मसालेदार खाना। जंक फूड और पैकेज्ड ड्रिंक्स। शराब और ज्यादा कैफीन। सवाल- बच्चों और बुजुर्गों को मच्छरों से बचाने के लिए क्या अतिरिक्त सावधानी रखें? जवाब-पॉइंटर्स से समझिए- दिन और रात दोनों समय मच्छरदानी का यूज करें। फुल स्लीव कपड़े पहनाएं। मच्छर भगाने वाले सुरक्षित रिपेलेंट लगाएं। हल्के लक्षण दिखते ही तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

दोस्त स्वार्थी थे, मुझे यूज करते थे, मैंने टॉक्सिक दोस्ती तोड़ दी, लेकिन अब बहुत अकेलापन महसूस होता है, क्या करूं

नयी दिल्ली। ऐसा समय सबके जीवन में आता हैं पर इसका ये मतलब नहीं की हताश हो जाये सवाल- मेरी उम्र 33 साल है। मेरी कुछ बहुत पुरानी दोस्तियां थीं। हम सालों से साथ थे, लेकिन धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि ये रिश्ते सिर्फ उनकी

जरूरत और स्वार्थ के हैं। जब उन्हें मदद की जरूरत होती तो मैं सबसे पहले याद आता, लेकिन मेरी जरूरत के समय उनके पास हमेशा कोई-न-कोई बहाना होता था। कई बार मेरी निजी बातें भी दूसरों तक पहुंच जाती थीं। बहुत सोचने के बाद मैंने उनसे दूरी बना ली और धीरे-धीरे सारे रिश्ते खत्म कर दिए। शुरू में राहत महसूस हुई। लेकिन अब करीब छह महीने बाद मुझे बहुत अकेलापन महसूस होता है। फोन में कोई मैसेज नहीं आता। वीकेंड पर कहीं जाने के लिए कोई दोस्त नहीं होता। क्या टॉक्सिक दोस्ती खत्म करने के बाद भी अकेलापन महसूस होता है? क्या सिर्फ इस अकेलेपन से बचने के लिए पुराने टॉक्सिक रिश्तों में लौटना ठीक होगा? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। हां, टॉक्सिक दोस्ती खत्म करने के बाद भी अकेलापन महसूस हो सकता है। कई बार उस अकेलेपन के कारण पुरानी टॉक्सिक दोस्ती में लौटने की इच्छा भी हो सकती है। लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि रिश्ता खत्म करके आपने कोई गलती की। कई बार हम किसी रिश्ते से इसलिए नहीं जुड़े रहते क्योंकि हमें उसमें खुशी मिलती है। हम इसलिए जुड़े रहते हैं क्योंकि वह पुराना है, जाना-पहचाना है और हमारी जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। टॉक्सिक रिश्ते खत्म करने के बाद ऐसा हो सकता है कि बहुत अकेलापन लगे, अपने साथ रहना मुश्किल हो। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि टॉक्सिक रिश्ते को खत्म करने और उससे बाहर निकलने का फैसला गलत था। टॉक्सिक रिश्तों के साथ हम क्या खोते हैं? टॉक्सिक रिश्ता खत्म होने के बाद भी सिर्फ एक व्यक्ति नहीं जाता। उसके साथ हमारी रोज की बातचीत, वीकेंड की योजनाएं, साझी यादें और जिंदगी का एक पूरा हिस्सा भी खाली हो जाता है। इसलिए ऐसा हो सकता है कि टॉक्सिक दोस्ती खत्म करने के बाद राहत और अकेलापन, दोनों एक साथ महसूस हों। दुख रिश्ता बहुत पुराना था। गिल्ट क्या मैंने सही फैसला किया? डर अब मेरे पास कोई नहीं है। राहत टॉक्सिसिटी से बचने की खुशी। अकेलापन अब कोई दोस्त नहीं है। याद साथ में अच्छी यादें भी थीं। टॉक्सिक दोस्ती क्या है? टॉक्सिक दोस्ती का मतलब क्या है। टॉक्सिक दोस्ती कोई मेडिकल कंडीशन या मानसिक बीमारी नहीं है। इसे यूं समझिए कि- हर खराब दोस्ती टॉक्सिक नहीं होती। हर झगड़ा टॉक्सिक नहीं होता। हर असहमति भी टॉक्सिक नहीं होती। किसी दोस्ती, रिश्ते या व्यक्ति को टॉक्सिक या नुकसानदेह बताने वाली सिर्फ एक घटना नहीं होती। इसके पीछे लंबा अनुभव और बार-बार दोहराया जाने वाला एक पैटर्न होता है।

मसलन– आपकी सीमाओं का लगातार अनादर होना। आपकी निजी बातें दूसरों से साझा करना। बार-बार आपका इस्तेमाल करना। जरूरत पड़ने पर ही आपको याद करना। आपकी भावनाओं को छोटा या महत्वहीन बताना। 'न' कहने पर आपको अपराधबोध देना। आपकी दूसरी दोस्तियों से परेशानी होना। गलती के बाद जिम्मेदारी न लेना। आपको लगातार तनाव, अपराधबोध या थकान महसूस होना। किसी दोस्ती को सिर्फ इसलिए टॉक्सिक नहीं कहा जा सकता कि उसमें कभी दुख पहुंचा या मतभेद हुआ। असली सवाल यह है कि क्या टॉक्सिक व्यवहार बार-बार हो रहा है और बातचीत के बाद भी उसमें सुधार नहीं आता। हम 'टॉक्सिक' दोस्ती में क्यों लौटते हैं? यहां सबसे जरूरी सवाल ये है कि 'मैं ऐसे रिश्ते में वापस क्यों जाना चाहता हूं, जिसने मुझे चोट पहुंचाई?' इसका जवाब हमेशा यह नहीं होता कि हमें वह व्यक्ति बहुत याद आ रहा है। कई बार इसके पीछे हमारी अपनी कोई मनोवैज्ञानिक जरूरत होती है। 1. अकेलापन ज्यादा डरावना-अकेलापन डराता है। खासकर तब, जब हमें लगता है कि नए दोस्त बनाना मुश्किल है। ऐसे में पुराना दोस्त भले ही हमें दुख दे, लेकिन वह जाना-पहचाना लगता है। हमें पता है कि उससे क्या उम्मीद करनी है। हमारा दिमाग कई बार परिचित तकलीफ को अनजान स्थिति से ज्यादा सुरक्षित मान लेता है। इसलिए मन कह सकता है कि– 'जो भी था, कम-से-कम कुछ तो था। अब तो कोई भी नहीं है।' 2. आपकी पहचान 'मदद करने वाले' की कुछ रिश्तों में एक व्यक्ति हमेशा समस्या सुलझाने वाला बन जाता है। दोस्त को परेशानी हुई - आप मौजूद। उसका किसी से झगड़ा हुआ - आप सलाह देने लगे। उसे पैसे, समय या इमोशनल सहारे की जरूरत हुई - आपने मदद की। ऐसे में धीरे-धीरे मन में एक विश्वास बन सकता है कि-'उन्हें मेरी जरूरत है, इसलिए मैं महत्वपूर्ण हूं।' यहां खतरा यह है कि आप अपने महत्व को दूसरे से जोड़कर देखने लगते हैं। ऐसे में जब रिश्ता खत्म होता है तो सिर्फ दोस्त नहीं जाता, आपके महत्वपूर्ण होने का एहसास भी चला जाता है। 3. बुरे अनुभवों को ढकती अच्छे पलों की याद-किसी भी लंबे रिश्ते में सिर्फ बुरे पल ही नहीं होते।आप साथ में हंसें होंगे। घूमे होंगे। नाचे-गाए होंगे। खुश हुए होंगे। मुश्किल समय देखा होगा। निजी बातें साझा की होंगी। रिश्ता खत्म होने के बाद दिमाग अक्सर उन अच्छे पलों को याद करता है। लेकिन उन अच्छे पलों को पूरी दोस्ती का प्रमाण मत बनाइए। यह देखिए कि ज्यादातर समय वह रिश्ता आपको कैसा महसूस कराता था। असली सवाल यही है कि क्या आपकी जरूरत के समय वे मौजूद थे। इसलिए आगे बढ़ने से पहले खुद से ये छह सवाल जरूर पूछिए- खुद से पूछें 6 सवालः- क्या रिश्ता बराबरी का था? क्या मेरी बात सुनी जाती थी? क्या मदद दोतरफा होती थी? क्या वहां मेरी सीमाओं का सम्मान था? क्या मेरी निजता का सम्मान था? क्या उस दोस्ती में मुझे सुकून था? 4. पुरानी दोस्ती के साथ अपराधबोध भी जुड़ा होता है-हमारे समाज में दोस्ती को निभाने की बहुत अहमियत है। हमें सिखाया जाता है- 'मुश्किल समय में दोस्त का साथ नहीं छोड़ते।' यह बात खूबसूरत है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि दोस्ती में हम अपनी गरिमा छोड़ दें। वफादारी और आत्म-उपेक्षा एक चीज नहीं हैं। क्या आपकी दोस्ती टॉक्सिक है? करें सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट-यहां मैं आपको एक सेल्फ एसेसमेंट टेस्ट दे रहा हूं। पिछले तीन महीने को ध्यान में रखकर नीचे दिए सवालों का जवाब दें। नीचे ग्राफिक्स में कुल 10 सवाल हैं। आपको इन सवालों को 0 से 3 के स्केल पर रेट करना है। जैसेकि पहले सवाल के लिए अगर आपका जवाब 'कभी नहीं' है तो 0 नंबर दें और अगर आपका जवाब 'लगभग हमेशा' है तो 3 नंबर दें। अंत में टोटल स्कोर की एनालिसिस करें और अपना स्कोर इंटरप्रिटेशन आगे देखें। टेस्ट के सवालः-मेरी बाउंड्रीज इग्नोर की जाती है? मोटिवेट करने से ज्यादा मेरा मजाक उड़ाया जाता है? मुझे छोटा दिखाया जाता है, आलोचना की जाती है।? मैं जितनी हेल्प करता हूं, मुझे उतनी हेल्प? मेरे दूसरी सर्कल बने तो दोस्त को परेशानी होती है।? मेरे दूसरी सर्कल बने तो दोस्त को परेशानी होती है।? मेरी निजी बातें दूसरों तक पहुंच जाती हैं।? दोस्त कभी अपनी गलती स्वीकार नहीं करता है।? उसका व्यवहार कभी बहुत प्यारा, कभी बहुत ठंडा होता है।? मुझे उसके सामने बहुत संभलकर रहना पड़ता है।? उससे बात करके मैं बेचैन, थका हुआ महसूस करता हूं।? इस रिश्ते का असर मेरे काम, नींद, परिवार पर पड़ता है।? समस्या पर बात करने से स्थिति और खराब होती है।? एसेसमेंट टेस्ट का स्कोर इंटरप्रिटेशनः-0-8ः दोस्ती में

सामान्य तनाव हो सकता है। कोई स्पेसिफिक समस्या हो तो उस पर ध्यान दें। 9-17ः रिश्ते में असंतुलन है। सीमाएं तय करें, सामने वाले की प्रतिक्रिया नोटिस करें। 18-26ः लंबे समय से चल रहा नुकसानदेह पैटर्न हो सकता है। दूरी बनाना उचित है। 27-36ः मेंटल हेल्थ को गंभीर नुकसान हो सकता है। भरोसेमंद व्यक्ति से बात करें या मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट की मदद लें। नोटः यह कोई मेडिकल टेस्ट या बीमारी का निदान नहीं है।

यह सिर्फ अपने रिश्ते को समझने का एक तरीका है। अगर रिश्ते में धमकी, पीछा करना, हिंसा, यौन दबाव या आर्थिक शोषण हो, तो सिर्फ स्कोर देखकर फैसला न करें। अपनी सेफ्टी को प्राथमिकता दें।

आगे का कदम क्या हो? दोस्ती में वापस न जाकर खुद को वापस कैसे पाएं? टॉक्सिक दोस्ती को खत्म करना पहला कदम था। अब दूसरा कदम है, उस खाली जगह को हेल्दी फ्रेंडशिप से भरना। 1. अपनी फीलिंग्स को आइडेंटीफाई करें-जब भी पुराने दोस्त को फोन करने का मन करे, तो उन पुरानी घटनाओं और उसके पैटर्न को एक डायरी में लिखिए। जब आप दोस्त थे तो उसका बिहेवियर क्या होता था।

घटना- दोस्त का फोन आया, उसे हेल्प मांगी। विचार- 'अगर मैंने मदद नहीं की तो मैं स्वार्थी हूं। ' भावना- अपराधबोध महसूस हुआ। मेरा व्यवहार- अपना काम छोड़कर तुरंत मदद की। तुरंत मिला फायदा- महसूस हुआ कि मैं अच्छा और जरूरी हूं।

बाद की फीलिंग्स- बाद में गुस्सा आया, थकान महसूस हुई। 2. अपनी पुरानी धारणाओं को चुनौती दें-आप दोस्त हैं। आप किसी के इमरजेंसी सर्विस सेंटर नहीं हैं। इसलिए अगर आपका मन कहता है- 'मेरा महत्व तभी है, जब मैं दूसरों की समस्याएं हल करूं।' तो इसे बदलकर खुद से कहें-'मदद करना मेरी खूबी है। लेकिन मेरी महत्व इस बात पर निर्भर नहीं करता कि कितने लोग मुझ पर निर्भर हैं।' 3. 'नो' कहने की शुरुआत करें-सीधे बड़े बदलावों की जरूरत नहीं है। इसलिए छोटे-छोटे प्रयोग करें। इस सप्ताह ये छोटे कदम उठाएं– किसी गैरजरूरी डिमांड का जवाब तुरंत न दें। एक बार सम्मानपूर्वक 'नो' कहें। किसी दोस्त से छोटी-सी मदद मांगें। एक बार अपनी जरूरत सामने रखें। फिर देखें कि सामने वाला क्या करता है। याद रखें-एक स्वस्थ दोस्त आपकी हर बात से सहमत नहीं होगा। लेकिन वह आपकी सीमा का सम्मान करेगा। अब नए दोस्त कैसे बनेंगे? यहीं सबसे ज्यादा धैर्य की जरूरत है। अकेलेपन का इलाज पुराने खराब रिश्ते में वापस लौटना नहीं है। उसका बेहतर रास्ता है, नए और स्वस्थ सामाजिक रिश्ते बनाना। लेकिन ऐसा नहीं है कि पहली मुलाकात में ही कोई आपका अच्छा दोस्त बन जाएगा। दोस्ती अचानक नहीं बनती। वह बार-बार मिलने, बात करने, चीजें शेयर करने और साझे अनुभवों से बनती है। 2. वहां बार-बार जाएं। एक-दो बार नहीं। लगातार जाएं। 1. एक जगह चुनें। योग, वॉकिंग, बुक्स, म्यूजिक, स्पोर्ट्स,क्लास। 4. धीरे-धीरे छोटी पहल करें। 'कभी कॉफी पीने चलेंगे?' 'अगले रविवार साथ वॉक करें?' 3. हर बार बातचीत करें। 'आप यहां कब से आ रहे हैं?' 'यह किताब कैसी लगी?' 'आप भी वीकेंड पर वॉक करते हैं?' पुराने दोस्त वापस आ जाएं तो क्या करें? उनसे जुड़ा कोई फैसला सिर्फ इस आधार पर न लें कि आप अब अकेले हैं।

इसके बजाय ये सवाल पूछें–पुराने और नए वक्त में क्या बदला है?क्या उन्होंने अपने पुराने व्यवहार की जिम्मेदारी ली है? क्या उन्होंने आपकी निजता का सम्मान करना शुरू किया है? क्या वे आपकी जरूरत के समय भी मौजूद हैं?

क्या वह आपकी सीमाओं को स्वीकार करते हैं? क्या माफी मांगने के साथ उनके व्यवहार में भी बदलाव आया है? याद रखें- माफी मांगना और खुद को बदलना दो अलग चीजें हैं। प्रोफेशनल हेल्प कब जरूरी? अगर अकेलापन, चिंता, उदासी या अपराधबोध लगातार बना हुआ है और रोजमर्रा की जिंदगी को प्रभावित कर रहा है तो मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट से बात करना मददगार हो सकता है।

अंतिम बात-दोस्ती खत्म होने के बाद पैदा हुए खालीपन को तुरंत भरने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय यह समझना चाहिए कि वास्तव में किस चीज की कमी महसूस हो रही है।

अगर आप बार-बार ऐसे रिश्तों में फंसते हैं, जहां आपको अपनी जरूरतों से ज्यादा दूसरे व्यक्ति की जरूरतों की चिंता रहती है, तो इस पैटर्न को भी समझना बहुत जरूरी है।

जीवन का मकसद सिर्फ एक टॉक्सिक दोस्ती के लूप से बाहर निकलना नहीं, बल्कि ओवरऑल स्वस्थ, सुंदर रिश्ते बनाना है।

क्या शिया ईरान के खिलाफ सुन्नी गठजोड़ बनाया गया है?

तुर्किये, सऊदी अरब, पाकिस्तान के बीच मक्का में हुए समझौते को 'मुस्लिम नाटो' बताया जा रहा है। समझौते में कहा गया है कि किसी एक पर हमला तीनों पर हमले जैसा माना जाएगा। यह नाटो के अनुच्छेद-5 जैसा है, लेकिन इसमें यह स्पष्ट नहीं है कि हमले के बाद किस प्रकार की सैन्य सहायता दी जाएगी। हो सकता है यह अस्पष्टता जानबूझकर रखी गई हो। इन तीनों देशों की रणनीतिक ताकत अलग-अलग है। सऊदी अरब की ताकत धन, तेल और उसकी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति है। पाकिस्तान मुस्लिम जगत का एकमात्र परमाणु-हथियार सम्पन्न राष्ट्र है। तुर्किये के पास ताकतवर सेना और उन्नत रक्षा उद्योग है। तीनों की समझौते की वजहें भी अलग हैं। सऊदी अरब सुरक्षा का भरोसा चाहता है। पाकिस्तान रणनीतिक हैसियत में ऊंचा दर्जा चाहता है।तुर्किये रणनीतिक प्रभाव बढ़ाना चाहता है। हाल के घटनाक्रम से सऊदी अरब के लिए खतरे सामने आए हैं। ऐसे में यह समझौता उसके लिए अतिरिक्त सुरक्षा कवच जैसा है। इस समझौते से पाकिस्तान को सबसे बड़ा तात्कालिक लाभ मिलता दिखता है। सुरक्षा को लेकर उसकी सोच भारत, अफगानिस्तान, आतंकवाद और आंतरिक चुनौतियों के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है। यह समझौता उसे दक्षिण एशिया से आगे भी एक व्यापक सुरक्षा ढांचे में भूमिका प्रदान करता है। लेकिन अगर ईरान सऊदी अरब पर हमला करता है तो क्या समझौते के तहत पाकिस्तान युद्ध में शामिल होगा? सऊदी अरब और ईरान, दोनों से पाकिस्तान के हित जुड़े हैं तो उसके लिए किसी एक के खिलाफ दूसरे को चुनना आसान नहीं होगा। यानी इस समझौते से पाकिस्तान की प्रासंगिकता के साथ ही उसकी दुविधा भी बढ़ती है। तुर्किये नाटो, रूस, ईरान, खाड़ी देशों, पाकिस्तान, मध्य एशिया के साथ संबंध बनाए हुए है। लेकिन सीरिया, इराक, कॉकेशस क्षेत्र में भी उसके महत्वपूर्ण हित हैं, जहां उसका ईरान से सामंजस्य जरूरी है। अगर ईरान सऊदी अरब पर हमला करता है तो तुर्किये क्या करेगा? इंटेलिजेंस, हवाई रक्षा, नौसैनिक सहायता, लड़ाकू विमान देने जैसी मदद करेगा या ईरान के खिलाफ सीधी सैन्य कार्रवाई करेगा? वहीं यदि सीरिया या इराक को लेकर तुर्किये का ईरान से टकराव होता है तो क्या सऊदी और पाकिस्तान भी युद्ध में उतरेंगे? गठबंधन आक्रमण को तो रोकते हैं, लेकिन वे एक-दूसरे के लिए उलझन-भरी स्थिति भी पैदा कर सकते हैं। तुर्किये की नाटो सदस्यता इस समीकरण को और जटिल बना देती है। इसलिए शायद अनुच्छेद-5 जैसा प्रावधान जानबूझकर अस्पष्ट रखा गया होगा। यानी हमले के प्रति मजबूत प्रतिरोध का संकेत, लेकिन अनिवार्य तौर पर युद्ध में उतरने की बाध्यता नहीं। एक सवाल यह भी सामने आता है कि क्या यह ईरान के खिलाफ सुन्नी समझौता है? इसके सांप्रदायिक गणित को अनदेखा नहीं किया जा सकता। तीनों सुन्नी-बहुल देश हैं और ईरान एक प्रमुख शिया ताकत, फिर भी ऐसा कहना एक सरल-सा निष्कर्ष होगा। यह समझौता आधिकारिक रूप से रक्षात्मक है और सऊदी अरब ईरान के साथ संबंध सुधारने के लिए भी काम कर भी चुका है। फिर भी ईरान इस समझौते पर नजर रखने वाली सबसे महत्वपूर्ण बाहरी ताकत होगा। अमेरिका भी शायद इसे अच्छा कदम माने कि क्षेत्रीय साझेदार सुरक्षा की अधिक जिम्मेदारी खुद उठा रहे हैं। मक्का समझौता, अब्राहम समझौते को भी अनिवार्य तौर पर समाप्त नहीं करता। यह सऊदी अरब को एक और रणनीतिक विकल्प देता है और उसकी मोलभाव की ताकत को बढ़ाता है।वह अमेरिका के साथ अपने रक्षा संबंध बरकरार रखते हुए तुर्किये और पाकिस्तान के साथ रक्षा सहयोग बढ़ा सकता है और इजराइल के साथ रिश्ते सामान्य करने की संभावना भी खुली रख सकता है।मक्का समझौते के सांप्रदायिक गणित को अनदेखा नहीं किया जा सकता। सऊदी, तुर्किये और पाकिस्तान- तीनों सुन्नी-बहुल देश हैं और ईरान एक प्रमुख शिया ताकत। फिर भी ऐसा कहना शायद एक सरल-सा निष्कर्ष होगा। (ये लेखक के अपने विचार हैं,सैयद अता हसनैन)

पीड़िता को ही कठघरे में खड़ा करने की आदत हमें क्या बताती है?

2014 में तरुण तेजपाल यौन उत्पीड़न मामले के दौरान प्रकाशित एक लेख में उलटे पीड़िता पर ही लांछन लगाने के लिए 'बबलगम फेमिनिज्म' शब्द का इस्तेमाल किया गया था। वह वाक्य मेरे जेहन में रह गया। इसलिए नहीं कि उसमें कोई खास चतुराई थी। बल्कि इसलिए कि इसमें एक खास किस्म की विडम्बना थी- यह कि बुद्धिजीवियों का एक वर्ग नारीवाद को ही बबलगम कहकर खारिज कर रहा था, जबकि ऐसा करते समय खुद मानक आचरण का उदाहरण नहीं पेश कर रहा था। तरुण तेजपाल कोई गुमनाम नागरिक नहीं थे। वे तहलका के संस्थापक और प्रधान संपादक थे तथा भारत के सबसे चर्चित खोजी पत्रकारों में से एक थे। उनकी पेशेवर प्रतिष्ठा शक्तिशाली लोगों और संस्थाओं को बेनकाब करने पर बनी थी। इसलिए भी उनके खिलाफ लगे आरोपों की खासतौर पर कठोर जांच की अपेक्षा थी। लेकिन इसके बजाय, सार्वजनिक विमर्श का एक बड़ा हिस्सा उस महिला की पड़ताल में बदल गया, जिसने आरोप लगाया था। उसके मैसेजेस चेक किए गए। उसके आचरण का परीक्षण किया जाने लगा। तेजपाल और उनके परिवार से उसके संबंधों की भी तफ्तीश हुई। उसकी विश्वसनीयता को परखा गया। उसके व्यवहार में पाई गई किसी भी अस्पष्टता को उनके आरोपों की सच्चाई पर संदेह करने का अवसर बना लिया गया।इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी पीड़िता के बयान को जांच-पड़ताल से परे मान लिया जाना चाहिए। पत्रकारिता कोई एक्टिविज्म नहीं है। आरोपों की जांच होनी चाहिए। साक्ष्य मायने रखते हैं। आरोप लगाने वाले के व्यक्तित्व के विरोधाभासों का भी मुआयना किया जाता है। फिर आरोपी के भी कुछ अधिकार होते हैं और कानूनी प्रक्रियाएं महत्वपूर्ण हैं। लेकिन किसके व्यवहार पर पूछताछ की जाती है और किसकी प्रतिष्ठा की रक्षा की जाती है- यह भी अपने आप में पत्रकारिता के मूल्यों से जुड़ा सवाल है। मी-टू आंदोलन के दौरान मैंने ऐसे कई लोगों को सार्वजनिक रूप से सवालों के दायरे में रखा, जो मेरे दोस्तों में शुमार थे।

चुनाव लड़ना ज्यादा जरूरी है या देश में कोई बदलाव लाना?

क्या सीजेपी को अब एक राजनीतिक दल बन जाना चाहिए? इसके पक्ष में कई तर्क दिए जा रहे हैं। उसके साथ युवाओं का व्यापक समर्थन और लगाव दिख रहा है। वह प्रतिरोध की नई भाषा के लिए जानी जा रही है। यही नहीं, मौजूदा पीढ़ी का जिस व्यवस्था से मोहभंग है, उसके दायरे में पुराने दल भी शामिल हैं। फिर लोकतंत्र में किसी जन-संगठन को वास्तविक और वैध राजनीति से क्यों परहेज होना चाहिए? अंततः सारे बदलाव राजनीति से ही संचालित होते हैं।सतह पर ये तर्क सही दिखते हैं। लेकिन इनके प्रतितर्क भी हैं। अण्णा आंदोलन के बाद आम आदमी पार्टी लगभग इन्हीं तर्कों के साथ गठित की गई थी। जल्द ही वह अपनी क्रांतिकारी ऊर्जा गंवाकर राजनीति की यथास्थितिवादी धारा में शामिल हो गई। यानी जैसे ही आप राजनीति में उतरते हैं, आपको कई मजबूरियां घेर लेती हैं। चुनाव लड़ने के लिए धन चाहिए- तो आप पूंजीपतियों के प्रति नरम हो उठते हैं। वोट पाने के लिए लोकप्रिय नारे गढ़ने होते हैं तो अप्रचलित विचारों या क्रांतिकारी धारणाओं से आप परहेज करने लगते हैं। धीरे-धीरे आप समझौतापरस्त हो उठते हैं और आपकी सारी लड़ाई चुनाव जीतने और सरकार बनाने तक सीमित रह जाती है। आप कहीं जातिवाद का संरक्षण करते हैं तो कहीं सांप्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं। लेकिन अण्णा आंदोलन से निकली आप हो या जंतर-मंतर से निकली सीजेपी- वह अगर चुनाव नहीं लड़ेगी तो क्या होगा? अण्णा आंदोलन से आक्रोश की जो ऊर्जा फूटी, उसने राष्ट्रीय स्तर पर बीजेपी को प्रक्षेपित कर दिया। अगर आप गठित न हुई होती तो दिल्ली भी शायद उन्हीं दिनों बीजेपी की हो चुकी होती। मगर फिर वही प्रश्न है- सरकार बनाना महत्वपूर्ण है या बदलाव की बयार बनाना? लोकतंत्र को सिर्फ राजनीतिक दलों ही नहीं,

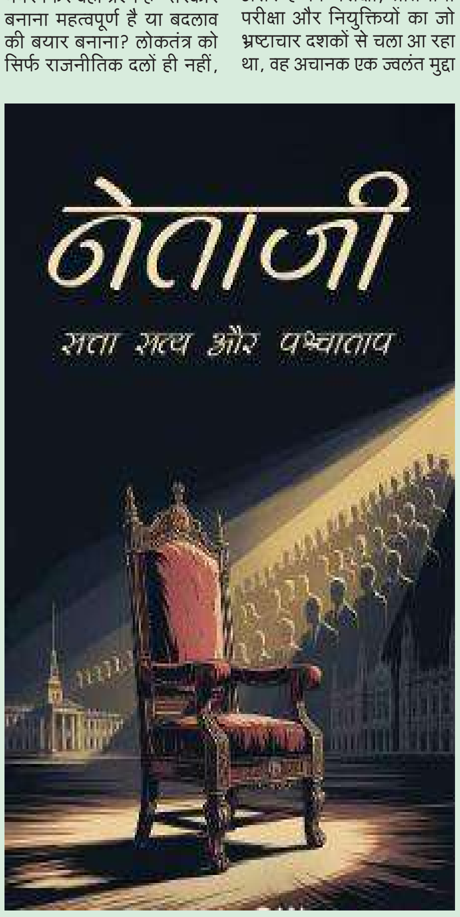

ऐसे सामाजिक संगठनों, ऐसे दबाव-समूहों की जरूरत भी पड़ती है, जो राजनीति की धारा मोड़ सकें, राजनीतिक दलों को मजबूर कर सकें कि वे उसके सुझाए मुद्दों की बात करें। यह जंतर-मंतर और झारखंड के मूलतः गैर-राजनीतिक आंदोलनों का ही असर है कि शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षा और नियुक्तियों का जो था, वह अचानक एक ज्वलंत मुद्दा बन गया। इसी तरह अचानक सभी राजनीतिक दलों को एहसास हुआ कि जेन-जी और जेन-अल्फा से जुड़ना, उनसे संवाद करना जरूरी है। देश को वैकल्पिक राजनीति की जरूरत है। लेकिन इस वैकल्पिक राजनीति के नाम पर जो दल बने, वे खुद लोकतंत्र पर बोझ ही बने। इन दिनों चिंताजनक बात यह भी है कि लोकतंत्र बिल्कुल चुनावी जीत का, संसदीय बहुमत का पर्याय बना दिया गया है, जबकि किसी भी आदर्श और स्वस्थ लोकतंत्र में बहुत सारी संवैधानिक और सामाजिक संस्थाओं की जरूरत पड़ती है।हमारे यहां भी ऐसी संस्थाएं हैं, लेकिन जैसे वे अपनी तेजस्विता, अपनी धार और संसदीय राजनीति के आगे अपनी प्रतिरोध-क्षमता खो रही हैं।बाकी सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन बिल्कुल अप्रासंगिक बन गए हैं। न लेखकों की आवाज बची है न दूसरे अनुशासनों से जुड़े बुद्धिजीवियों की। इनकी भरपाई किसी अहम मुद्दे पर फिल्मी सितारों या क्रिकेटरों की राय लेकर कर ली जाती है। तो एक बहुत बड़ा बौद्धिक शून्य है, जिसे भरे जाने के लिए राजनीतिक कम, गैर-राजनीतिक प्रयत्न ज्यादा जरूरी हैं। अच्छी बात यह है कि अभिजीत दिपके ने कहा है कि वे सीजेपी को दबाव-समूह ही बनाए रखना चाहते हैं- लेकिन इसे फिर अपना सामाजिक-बौद्धिक विस्तार भी करना होगा, तभी वह सार्थक और वास्तविक विकल्प की राह बना पाएगा- राजनीतिक दलों को मजबूर कर सकेगा कि वे जरूरी मुद्दे उठाएं और सही दिशा में बढ़ें।

लोकतंत्र को सिर्फ राजनीतिक दलों ही नहीं, ऐसे सामाजिक संगठनों, ऐसे प्रेशर-ग्रुप्स की जरूरत भी पड़ती है, जो राजनीति की धारा मोड़ सकें और राजनीतिक दलों को मजबूर कर सकें कि वे उसके सुझाए मुद्दों पर बात करें।

(ये लेखक के अपने विचार हैं,प्रियदर्शन)

डिजिटल बुद्धिमत्ता से स्वायत्त बुद्धिमत्ता तक-एक पीढ़ी, अनंत परिवर्तनः जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता से कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता तक

लेखिकाः कौशाकी सोंधी- आधुनिक समाचार नेटवर्क

कौशाकी सोंधी व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण की विशेषज्ञ हैं और वर्तमान में डीन, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट के पद पर कार्यरत हैं। वे महिला सशक्तिकरण और मानवाधिकार के क्षेत्र में सक्रिय हैं तथा अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थानों में सलाहकार एवं मार्गदर्शक के रूप में योगदान दे रही हैं। वे नीति आयोग की 'मेंटर ऑफ चेंज' भी रह चुकी हैं। शिक्षा, प्रशिक्षण और युवा मार्गदर्शन के क्षेत्र में प्राचार्य, प्रोफेसर एवं मुख्य प्रशिक्षक के रूप में उनका व्यापक अनुभव है।

जब मैं आज की तकनीकी दुनिया को देखती हूँ, तो सबसे अधिक आश्चर्य मुझे इसकी गति से होता है। एक ही पीढ़ी ने स्मार्टफोन, सामाजिक माध्यमों और क्लाउड तकनीक से लेकर जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक का सफर देख लिया है। अब हम कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता और संभावित स्वायत्त बुद्धिमत्ता की चर्चा कर रहे हैं। लेकिन मेरे लिए यह केवल तकनीकी विकास की कहानी नहीं है। यह मानव सभ्यता की एक लंबी यात्रा का अगला चरण है। मानवता ने पहले अपनी संवेदनात्मक क्षमताओं का विस्तार किया–दूर तक देखने, सुनने और संवाद करने के साधन बनाए। फिर हमने अपनी बौद्धिक क्षमताओं का विस्तार किया–कंप्यूटर, इंटरनेट और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से। इन्हीं क्षमताओं के विस्तार ने आधुनिक सभ्यता को आकार दिया। लेकिन सभ्यता केवल इस बात से नहीं बनती कि हम क्या कर सकते हैं। सभ्यता इस बात से बनती है कि हम अपनी शक्ति का उपयोग कितनी जिम्मेदारी से करते हैं। अर्थात, सभ्यता के साथ नैतिक जिम्मेदारी भी आती है। यही बात आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर भी लागू होती है। जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब लेखन, विश्लेषण, कोडिंग, तर्क और रचनात्मक कार्यों में सहायता कर रही है। सामान्य-उद्देश्यीय प्रणालियाँ हमें अनेक प्रकार के बौद्धिक कार्यों में मशीन सहयोग की ओर ले जा रही हैं। अगला संभावित चरण कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता हो सकता है–ऐसी प्रणाली जो विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से सीखने, तर्क करने और समस्याओं को हल करने में सक्षम हो। लेकिन इसके बाद प्रश्न केवल यह नहीं होगा कि मशीन कितनी बुद्धिमान है। प्रश्न यह होगा कि उसकी शक्ति पर नियंत्रण किसका है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित स्मार्ट चश्मे और अन्य पहनने योग्य उपकरण, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता को हमारे दैनिक जीवन और ज्ञान के और करीब ला रहे हैं, हमारी दुनिया को देखने, समझने और उससे संवाद करने के तरीके को बदल सकते हैं। इससे सुविधा बढ़ेगी, लेकिन गोपनीयता का प्रश्न भी उतना ही गंभीर होगा। इसीलिए शक्तिशाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए केवल तकनीकी विकास पर्याप्त नहीं है। हमें मजबूत कानून, स्वतंत्र मूल्यांकन, सुरक्षा प्रणालियाँ, मानव पर्यवेक्षण और लोकतांत्रिक जवाबदेही की आवश्यकता होगी। व्यवस्था ऐसी होनी चाहिएः-मनुष्य और लोकतांत्रिक संस्थाएँ ? कानून और नियम ? कृत्रिम बुद्धिमत्ता की निगरानी ? उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता/कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता न किः मनुष्य ? कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता ? कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता तय करे कि मनुष्य को क्या करना चाहिए। इसके साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक दूसरी कीमत भी है–ऊर्जा, पानी और पर्यावरण। विशाल डेटा केंद्रों को चलाने और ठंडा रखने के लिए बड़ी मात्रा में बिजली और प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसलिए भविष्य की बुद्धिमत्ता केवल अधिक शक्तिशाली नहीं, बल्कि ऊर्जा-कुशल और पर्यावरण-सचेत भी होनी चाहिए। आखिरकार, कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता की बहस केवल तकनीक की बहस नहीं है। यह लोकतंत्र, स्वतंत्रता, रोजगार, शिक्षा, गोपनीयता, पर्यावरण और सभ्यता के भविष्य की बहस है। हमने अपनी इंद्रियों का विस्तार किया। हमने अपनी बुद्धि का विस्तार किया। अब हमें अपनी नैतिक जिम्मेदारी का भी विस्तार करना होगा। क्योंकि भविष्य की असली दौड़ केवल मशीनों को अधिक बुद्धिमान बनाने की नहीं है। असली प्रश्न यह है कि क्या मानवता अपनी बनाई हुई बुद्धिमत्ता से पीछे न रहकर, उसके साथ जिम्मेदारी से आगे बढ़ पाएगी। और शायद इस पीढ़ी का सबसे बड़ा प्रश्न यही है– यदि हम स्वायत्त बुद्धिमत्ता बना पाए, तो क्या हम उसे मानवता, प्रकृति और सभ्यता के हित में नियंत्रित करने के लिए स्वयं पर्याप्त बुद्धिमान होंगे?डिजिटल बुद्धिमत्ता से स्वायत्त बुद्धिमत्ता तक- एक पीढ़ी, अनंत परिवर्तनः जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता से कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता तक-लेखिकाः कौशाकी सोंधी-कौशाकी सोंधी व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण की विशेषज्ञ हैं और वर्तमान में प्रशिक्षण एवं नियुक्ति की अधिष्ठाता के पद पर कार्यरत हैं। वे महिला सशक्तिकरण और मानवाधिकार के क्षेत्र में सक्रिय हैं तथा अनेक विश्वविद्यालयों और संस्थानों में सलाहकार एवं मार्गदर्शक के रूप में योगदान दे

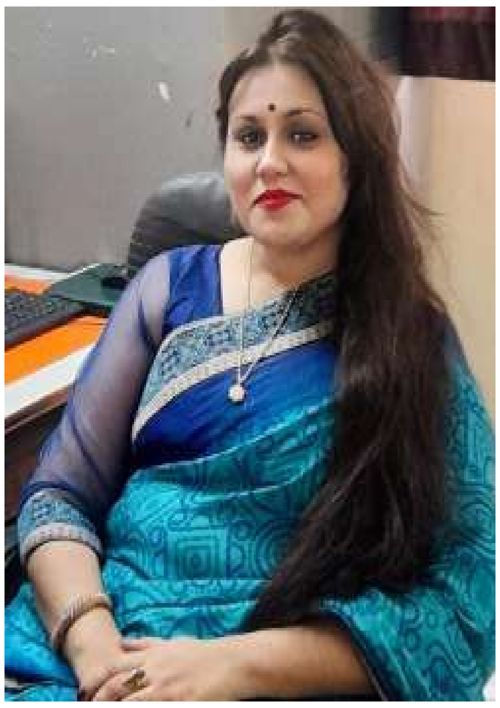

रही हैं। वे नीति आयोग की 'परिवर्तन की मार्गदर्शक' भी रह चुकी हैं। शिक्षा, प्रशिक्षण और युवा मार्गदर्शन के क्षेत्र में प्राचार्य, प्राध्यापक एवं मुख्य प्रशिक्षक के रूप में उनका व्यापक अनुभव है। कौशाकी सोंधी कहती हैं– जब मैं आज की तकनीकी दुनिया को देखती हूँ, तो सबसे अधिक आश्चर्य मुझे इसकी गति से होता है। एक ही पीढ़ी ने दूरभाष से लेकर चल-दूरभाष, सामाजिक माध्यमों और आभासी भंडारण तकनीक से लेकर सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक का सफर देख लिया है। अब हम कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता और संभावित स्वायत्त बुद्धिमत्ता की चर्चा कर रहे हैं। लेकिन मेरे लिए यह केवल तकनीकी विकास की कहानी नहीं है। यह मानव सभ्यता की एक लंबी यात्रा का अगला चरण है। मानवता ने पहले अपनी संवेदनात्मक क्षमताओं का विस्तार किया–दूर तक देखने, सुनने और संवाद करने के साधन बनाए। फिर हमने अपनी बौद्धिक क्षमताओं का विस्तार किया–संगणक, अंतरजाल और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से। इन्हीं क्षमताओं के विस्तार ने आधुनिक सभ्यता को आकार दिया। लेकिन सभ्यता केवल इस बात से नहीं बनती कि हम क्या कर सकते हैं। सभ्यता इस बात से बनती है कि हम अपनी शक्ति का उपयोग कितनी जिम्मेदारी से करते हैं। अर्थात, सभ्यता के साथ नैतिक जिम्मेदारी भी आती है। यही बात आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर भी लागू होती है। सृजनात्मक कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब लेखन, विश्लेषण, कार्यक्रम-निर्माण, तर्क और रचनात्मक कार्यों में सहायता कर रही है। सामान्य-उद्देश्यीय प्रणालियाँ हमें अनेक प्रकार के बौद्धिक कार्यों में यांत्रिक सहयोग की ओर ले जा रही हैं। अगला संभावित चरण कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता हो सकता है–ऐसी प्रणाली जो विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से सीखने, तर्क करने और समस्याओं को हल करने में सक्षम हो। लेकिन इसके बाद प्रश्न केवल यह नहीं होगा कि मशीन कितनी बुद्धिमान है। प्रश्न यह होगा कि उसकी शक्ति पर नियंत्रण किसका है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित बुद्धिमान चश्मे और अन्य पहनने योग्य उपकरण, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता को हमारे दैनिक जीवन और ज्ञान के और करीब ला रहे हैं, हमारी दुनिया को देखने, समझने और उससे संवाद करने के तरीके को बदल सकते हैं। इससे सुविधा बढ़ेगी, लेकिन निजता और व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा का प्रश्न भी उतना ही गंभीर होगा। इसीलिए शक्तिशाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए केवल तकनीकी विकास पर्याप्त नहीं है। हमें मजबूत कानून, स्वतंत्र मूल्यांकन, सुरक्षा प्रणालियाँ, मानवीय पर्यवेक्षण और लोकतांत्रिक जवाबदेही की आवश्यकता होगी। व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए– मनुष्य और लोकतांत्रिक संस्थाएँ ? कानून और नियम ? कृत्रिम बुद्धिमत्ता की निगरानी ? उन्नत कृत्रिम बुद्धिमत्ता / कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता न कि– मनुष्य ? कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता ? कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता यह तय करे कि मनुष्य को क्या करना चाहिए। इसके साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता की एक दूसरी कीमत भी है–ऊर्जा, पानी और पर्यावरण। विशाल आँकड़ा केंद्रों को चलाने और ठंडा रखने के लिए बड़ी मात्रा में बिजली और प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसलिए भविष्य की बुद्धिमत्ता केवल अधिक शक्तिशाली नहीं, बल्कि ऊर्जा-कुशल और पर्यावरण-सचेत भी होनी चाहिए। आखिरकार, कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता की बहस केवल तकनीक की बहस नहीं है। यह लोकतंत्र, स्वतंत्रता, रोजगार, शिक्षा, निजता, पर्यावरण और सभ्यता के भविष्य की बहस है। हमने अपनी इंद्रियों का विस्तार किया। हमने अपनी बुद्धि का विस्तार किया। अब हमें अपनी नैतिक जिम्मेदारी का भी विस्तार करना होगा। क्योंकि भविष्य की असली दौड़ केवल मशीनों को अधिक बुद्धिमान बनाने की नहीं है। असली प्रश्न यह है कि क्या मानवता अपनी बनाई हुई बुद्धिमत्ता से पीछे न रहकर, उसके साथ जिम्मेदारी से आगे बढ़ पाएगी। और शायद इस पीढ़ी का सबसे बड़ा प्रश्न यही है–यदि हम स्वायत्त बुद्धिमत्ता बना पाए, तो क्या हम उसे मानवता, प्रकृति और सभ्यता के हित में नियंत्रित करने के लिए स्वयं पर्याप्त बुद्धिमान होंगे?

जेन-जी को संघ के समर्थन में एक सबक है

संघ के सौ साल पूरे होने के साथ ही संघ प्रमुख मोहन भागवत भी अपनी छवि में नाटकीय परिवर्तन लाए हैं। उन्होंने अपने समर्थकों और आलोचकों को भी उलझन में डाल दिया है। कुछ लोगों को लग रहा है कि वे जो उदारवादी रुख अपना रहे हैं, उसके कारण संघ के ठोस वैचारिक आधार से किनारा किया जा रहा है। इसके कारण एक ऐसा समूह उभरा है, जो पुराने रूढ़िवाद और राष्ट्रवाद से चिपका है और मानता है कि भागवत के नेतृत्व में संघ इस विचार से अलग हो रहा है। उदारवादी जमात में कुछ ऐसे भी हैं, जिन्हें भागवत ने राहत दी है। क्या यह बदलाव की बयार है? क्या वे सरकार को चेता रहे हैं? क्या वे संघ की विश्वदृष्टि को मध्यमार्ग के करीब ला रहे हैं? यहां मैं स्पष्ट कर दूं कि संघ की मूल विचारधारा में कोई बदलाव नहीं होने जा रहा है। जो कुछ दिख रहा है, वह सत्ता के 13वें साल में राजनीतिक व्यावहारिकता का प्रदर्शन है। पिछले करीब पांच साल से, भागवत कई प्रमुख मसलों पर संघ के रुख में बदलाव को उजागर करते रहे हैं या उसके रुख को अलग तरह से प्रस्तुत करते रहे हैं। वे कई बार कह चुके हैं कि भारत (बल्कि इस पूरे उपमहादेश) के हर व्यक्ति का 'डीएनए' समान है, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह किस धर्म का है। वे यह भी

कह चुके हैं कि हरेक मस्जिद के नीचे शिवलिंग खोजना बंद कीजिए। वे, और उनके उत्तराधिकारी माने जा रहे दत्तात्रेय होसबले भी कह चुके हैं कि भारत को पाकिस्तान के साथ रिश्ता बनाए रखना चाहिए। इसे वे दोनों देशों की जनता के बीच संपर्क वाला रिश्ता कह सकते हैं, लेकिन यह सरकारी रुख से एक कदम आगे वाला रिश्ता है। यह सब बदलाव को दर्शाता है, जिसने कट्टरपंथियों को नाराज किया है, तो उदारवादियों को उत्साहित किया है। इन्हीं वजहों से पांच प्रमुख मुस्लिम हस्तियों ने 22 अगस्त 2022 को भागवत से संपर्क किया था और संवाद करने की इच्छा जाहिर की थी। अगर उदारवादी समुदाय सहायता के लिए संघ नेतृत्व की ओर देखता है तो कहा जा सकता है कि भारत ने आगे की तरफ कुछ कदम बढ़ाया है। आप इसे संशय की नजर से भी देख सकते हैं, और उम्मीद भरी नजर से भी। यह भी मुमकिन है कि जब सरकार खास तौर से मुश्किल में फंस जाए- जैसे कि जंतर-मंतर प्रकरण- तब वे अच्छे रक्षक की भूमिका में आ जाएं। जिस मंत्री को इस्तीफा दिलवाना पड़ा, वे संघ की भी प्रमुख हस्ती थे।पहले यह देखना चाहिए कि इससे पहले क्या-क्या कहा गया। भाजपा सांसद और अभिनेत्री कंगना रनौत ने जेन-जी को 'जेन गटर' बता दिया था। 30 जुलाई को संघ के संयुक्त महासचिव अतुल लिमये ने महाराष्ट्र के में अभाविप कार्यकर्ताओं को भाषण देते हुए कहा कि जंतर-मंतर पर राष्ट्र विरोधी नारे लगाए गए। उन्होंने कहा कि इस आंदोलन में वामपंथियों की वैकल्पिक राजनीति के विचार की अच्छी परीक्षा हो गई और ऐसी अराजकतावादी शक्तियां घातक हैं।जाहिर है, भागवत इस सब पर नजर रखे हुए थे और सरकार के खिलाफ युवाओं के आक्रोश को लेकर चिंतित थे। इसीलिए उन्होंने भारत के 'इंटरनेशनल मूवमेंट टु यूनाइटेड नेशन्स' की ओर से 'जेन-जी और जेन-अल्फा' के साथ सवाल-जवाब के आयोजन में भाग लेने का न्योता कबूल किया। इसमें भागवत ने सबसे पहला काम तो यह किया कि जेन-जी के आंदोलनकारियों को राष्ट्र-विरोधी बताने वाली आलोचनाओं को सिरे से खारिज कर दिया।उन्होंने कहा, मुझे जेन-जी पर पूरा भरोसा है। विरोध करना लोकतांत्रिक अधिकार है, यह राष्ट्र-विरोधी काम नहीं है।

जीएल बजाज के परिचय 2026 ने एमबीए छात्रों को उद्योग, नेतृत्व और डिजिटल भविष्य से जोड़ा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। जीएल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट में एमबीए बैच 2026-28 के लिए परिचय 2026, 21वें ओरिएंटेशन कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज द्वारा आयोजित यह दो दिवसीय कार्यक्रम 16 और 17 सितंबर 2026 को एसएचडी हॉल, एकेडमिक ब्लॉक 1 में संपन्न हुआ। 'फाइंड योर स्पार्क' थीम पर आधारित इस कार्यक्रम के साथ नए विद्यार्थियों के शैक्षणिक और व्यावसायिक सफर की शुरुआत हुई। कार्यक्रम में शिक्षाविदों, उद्योग विशेषज्ञों और विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इस दौरान नेतृत्व, प्रोफेशनल ग्रोथ, नवाचार और बदलते कारोबारी वातावरण से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार साझा किए गए। कार्यक्रम में आई-गेज से जुड़े डॉ. दीपक वोहरा की विशेष उपस्थिति रही। कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय मामलों में अपने व्यापक अनुभव के लिए जाने जाने वाले डॉ. वोहरा ने विद्यार्थियों को वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करने और पारंपरिक कक्षा-आधारित शिक्षा से आगे बढ़कर सीखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बदलते वैश्विक परिवेश में जिज्ञासा, नेतृत्व, व्यापक सोच और निरंतर सीखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। एमबीए की शुरुआत कर रहे विद्यार्थियों के लिए उनका संवाद विशेष रूप से प्रेरणादायक रहा। 'फाइंड योर स्पार्क' थीम के अनुरूप उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं और संभावनाओं को पहचानने तथा अपने प्रोफेशनल सफर को उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में श्री सी.के. सभरवाल, पूर्व मैनेजिंग डायरेक्टर, आईएसके बायोसाइंसेज ने गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में सहभागिता की। अपने लंबे कॉर्पोरेट अनुभव के आधार पर उन्होंने विद्यार्थियों के साथ प्रोफेशनल जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण अनुभव साझा किए। उन्होंने प्रोफेशनल वैल्यूज, अनुकूलन क्षमता, सकारात्मक दृष्टिकोण और निरंतर सीखने की आवश्यकता पर जोर दिया। नए बैच का स्वागत करते हुए श्री पंकज अग्रवाल, वाइस चेयरमैन, जीएल बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, ग्रेटर नोएडा/मथुरा, ने बदलते प्रोफेशनल वातावरण में प्रबंधन शिक्षा की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के लिए ऐसा शैक्षणिक वातावरण आवश्यक है, जो उन्हें ज्ञान के साथ भविष्य की प्रोफेशनल चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करे। श्री कार्तिकेय अग्रवाल, सीईओ, जीएल बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, ग्रेटर नोएडा/मथुरा, ने अकादमिक शिक्षा को उद्योग की अपेक्षाओं और उभरते प्रोफेशनल रुझानों से जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने विद्यार्थियों को नए विचारों के प्रति खुले रहने, निरंतर सीखने और अपने प्रोफेशनल विकास पर लगातार कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण 'फ्यूचर रेडी मैनेजर्सः लीडरशिप, इनोवेशन एंड डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन' विषय पर आयोजित पैनल डिस्कशन रहा। इसमें उद्योग जगत से जुड़े श्री अक्षय मेहर, सुश्री सुप्रिया शर्मा, श्री गुरप्रीत सिंह, श्री विपुल कपूर और श्री अभिषेक सिंह ने सहभागिता की। पैनल चर्चा में तेजी से बदलती तकनीक, नए बिजनेस मॉडल और कार्यस्थल की उभरती आवश्यकताओं के बीच मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स की भूमिका पर विचार-विमर्श किया गया। विशेषज्ञों ने नेतृत्व के संदर्भ में अनुकूलन क्षमता, प्रभावी संवाद, सहयोग और निर्णय लेने की क्षमता जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की। साथ ही, नवाचार को समस्याओं की पहचान कर उनके व्यावहारिक और प्रभावी समाधान विकसित करने की प्रक्रिया के रूप में रेखांकित किया गया। डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन भी चर्चा का एक प्रमुख विषय रहा। वर्तमान कारोबारी परिवेश में संगठन तेजी से डिजिटल तकनीकों और डेटा-आधारित प्रक्रियाओं को अपना रहे हैं। ऐसे में भविष्य के मैनेजर्स के लिए प्रबंधन सिद्धांतों के साथ तकनीक के प्रभाव और उसके व्यावसायिक उपयोग को समझना भी महत्वपूर्ण होता जा रहा है। पैनल चर्चा ने विद्यार्थियों को इस बदलते परिदृश्य को उद्योग विशेषज्ञों के दृष्टिकोण से समझने का अवसर दिया। एमबीए बैच 2026-28 के विद्यार्थियों के लिए यह कार्यक्रम उनके शैक्षणिक सफर की शुरुआत में उद्योग जगत की कार्यप्रणाली और प्रोफेशनल अपेक्षाओं को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बना। कार्यक्रम ने उन्हें एमबीए को केवल एक डिग्री तक सीमित न रखकर नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास, जिज्ञासा और निरंतर सीखने की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया। परिचय 2026 ने डिपार्टमेंट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के उस दृष्टिकोण को भी प्रतिबिंबित किया, जिसमें प्रबंधन शिक्षा को उद्योग की वास्तविक परिस्थितियों और प्रोफेशनल अनुभवों से जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को कक्षा में सीखी गई अवधारणाओं को वास्तविक कारोबारी परिस्थितियों के संदर्भ में समझने में सहायता करते हैं।ग्रेटर नोएडा में प्रबंधन शिक्षा प्रदान करने वाले प्रमुख संस्थानों में शामिल जीएल बजाज विद्यार्थियों को अकादमिक शिक्षा के साथ उद्योग विशेषज्ञों से संवाद, व्यावहारिक सीख और प्रोफेशनल अनुभवों से जुड़ने के अवसर प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता है। परिचय 2026 जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को संस्थान के शैक्षणिक वातावरण से परिचित कराने के साथ उनके आगामी प्रोफेशनल सफर के लिए मजबूत आधार तैयार करने में भी सहायक होते हैं। दो दिवसीय कार्यक्रम का समापन उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ। 'फाइंड योर स्पार्क' थीम के साथ एमबीए बैच 2026-28 ने जीएल बजाज में अपने नए शैक्षणिक सफर की शुरुआत की। कार्यक्रम ने विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने, नए दृष्टिकोण विकसित करने और प्रबंधन के क्षेत्र में उभरती संभावनाओं एवं चुनौतियों के लिए स्वयं को तैयार करने का संदेश दिया। जीएल बजाज परिवार ने एमबीए बैच 2026-28 का स्वागत करते हुए विद्यार्थियों को उनके आगामी शैक्षणिक सफर के लिए शुभकामनाएं दीं और सीखने, सहयोग, नवाचार तथा निरंतर विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। जीएल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के बारे में-जीएल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट (जीएलबीआईटीएम), ग्रेटर नोएडा, एआईसीटीई-अप्रूव्ड और एकेटीयू-अफिलिएटेड संस्थान है, जहां इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट और कंप्यूटर एप्लीकेशन से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। संस्थान अकादमिक शिक्षा, इंडस्ट्री इंटरैक्शन, इनोवेशन और प्रोफेशनल डेवलपमेंट के माध्यम से विद्यार्थियों को बदलते करियर अवसरों और भविष्य की प्रोफेशनल आवश्यकताओं के लिए तैयार करने की दिशा में कार्य करता है।

रिपोर्ट- ट्रम्प-जिनपिंग की मुलाकात से पहले ताइवान में सकते में, जापान-साउथ कोरिया को चिंता, चीन से डील के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति नरम न पड़ जाएं

वॉशिंगटन डीसी। ऐसे में चीन के साथ बड़ा कारोबारी समझौता ट्रम्प के लिए घरेलू राजनीति में भी अहम हो सकता है। बैठक से पहले ताइवान ने अपनी चिंता बताई-बैठक से पहले ताइवान सरकार लगातार अमेरिका के सामने अपना पक्ष रख रही है। ताइवान के सीनियर अधिकारी शेन यू-चुंग ने कहा कि उनकी उम्मीद है कि ऐसा कोई फैसला नहीं होगा जिससे ताइवान को नुकसान पहुंचे। ताइवान के विदेश मंत्री लिन चिया-लुंग ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि शी बैठक में ताइवान का मुद्दा उठाएंगे। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका कई बार साफ कर चुका है कि ताइवान को लेकर उसकी नीति में बदलाव नहीं हुआ है। अमेरिका की 'वन चाइना पॉलिसी' क्या है? ताइवान को लेकर अमेरिका की नीति को समझने के लिए 'वन चाइना पॉलिसी' को समझना जरूरी है। अमेरिका ताइवान को एक अलग देश के तौर पर आधिकारिक मान्यता नहीं देता। लेकिन वह चीन के इस दावे को भी अपनी तरफ से मंजूर नहीं करता कि ताइवान पर उसका पूरा अधिकार है। इसी नीति के तहत अमेरिका चीन के साथ अपने राजनयिक रिश्ते भी बनाए रखता है और ताइवान को अपनी सुरक्षा के लिए हथियार भी देता है। यानी अमेरिका दोनों पक्षों के बीच एक संतुलन बनाए रखने की कोशिश करता है। ट्रम्प के बयान पर इतनी नजर क्यों? अमेरिका ने अभी तक यह साफ नहीं किया है कि अगर चीन ताइवान पर हमला करता है, तो क्या अमेरिकी सेना ताइवान की मदद करने जाएगी। इसलिए ट्रम्प ताइवान को लेकर क्या कहते हैं, इस पर सबकी नजर रहती है। पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अपने कार्यकाल में कई बार कहा था कि चीन ने हमला किया तो अमेरिका ताइवान की मदद करेगा। लेकिन ट्रम्प ने इस बारे में अब तक ऐसी साफ बात नहीं कही है। जापान के दो सरकारी सूत्रों ने रॉयटर्स को बताया कि ट्रम्प का अचानक दिया गया कोई बयान भी ताइवान को लेकर चिंता बढ़ा सकता है। चीन लगातार अमेरिका से कहता रहा है कि वह ताइवान को अलग देश बनाने की बात का समर्थन न करे। ताइवान का मुद्दा दुनिया की अर्थव्यवस्था से भी जुड़ा-ताइवान का मामला सिर्फ चीन और अमेरिका के बीच सत्ता की खींचतान तक सीमित नहीं है। इसका असर दुनिया के कारोबार पर भी पड़ सकता है। ताइवान दुनिया की सबसे आधुनिक कंप्यूटर चिप्स का 90फीसदी से ज्यादा बनाता है। इन चिप्स का इस्तेमाल मोबाइल फोन, कार, कंप्यूटर से लेकर मिसाइल और दूसरे आधुनिक उपकरणों में होता है। अगर यहां बड़ा सैन्य संघर्ष होता है तो चिप्स की सप्लाई रुक सकती है।

इससे दुनिया के कई देशों में कार, इलेक्ट्रॉनिक्स और दूसरे सामानों का उत्पादन प्रभावित हो सकता है। मलेशिया के राष्ट्रीय सुरक्षा महानिदेशक राजा नुशिरवान जैनल आबिदीन ने रॉयटर्स से कहा कि ताइवान में संघर्ष हुआ तो इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ेगा।

भगवान विश्वकर्मा जी की जयन्ती के अवसर पर प्रधानमंत्री के 25 वर्षों के निरन्तर सेवा काल की जनकल्याणकारी उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। दिनांक 17 सितम्बर, 2026 को भगवान विश्वकर्मा जी की जयन्ती के अवसर पर मा0 प्रधानमंत्री जी के 25 वर्षों के निरन्तर सेवा काल की जनकल्याणकारी उपलब्धियों को जन-जन तक पहुँचाने तथा प्रत्येक नागरिक को विकसित भारत-2047 के सामूहिक राष्ट्रीय संकल्प से जोड़ने के उद्देश्य से दिनांक 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर, 2026 के मध्य सेवा संकल्प अभियान आयोजित किया गया जिसके अवसर पर संयुक्त आयुक्त उद्योग, प्रयागराज मण्डल, प्रयागराज एवं उपायुक्त उद्योग, प्रयागराज द्वारा विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजनान्तर्गत लगभग 155 लाभार्थियों को अपने कर कमलो से टूलकिट एंव प्रमाण पत्र का वितरण किया गया। उपायुक्त उद्योग द्वारा अवगत कराया गया कि प्रदेश सरकार द्वारा भगवान विश्वकर्मा जी के जयन्ती के अवसर पर मा0 मुख्यमंत्री जी द्वारा विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना-2.0 एवं विश्वकर्मा मार्जिन मनी ऋण पोर्टल का शुभारम्भ किया गया। साथ ही यह भी अवगत कराया गया कि विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना-2.0 के अन्तर्गत नये परम्परागत ट्रेड (मूर्तीकार, मालाकार, दूधवाला, भरभूजा, मछुआरा) एवं आधुनिक परम्परागत ट्रेड (मोबाइल मरम्मत, आटोमोबाइल मरम्मत, इलेक्ट्रानिक सामान की मरम्मत, विद्युत सामान की मरम्मत, प्लम्बर, कम्प्यूटर मरम्मत, सोलर इंस्टालेसन, डिजीटल फोटोग्राफी और सौन्दर्य वेलनेस) योजनान्तर्गत अब कुल 25 ट्रेड सम्मित हो गये हैं जिसमें आज मा0 मुख्यमंत्री जी द्वारा 14 नये ट्रेडों का पोर्टल के माध्यम से शुभारम्भ किया गया। साथ ही यह भी अवगत कराया गया कि उक्त योजनान्तर्गत 10 दिवसीय उत्पाद/ सेवाओं में निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करते हुए डी0बी0टी0 के माध्यम से रू0 5000/- का मानदेय प्रदान किया जाएगा, प्रशिक्षणोपरान्त लाभार्थियों को पांच वर्ष तक ब्याज मुक्त, गारन्टी मुक्त रू0 10 लाख का ऋण प्रदान करते हुए 15 प्रतिशत का अनुदान के रूप में प्रोत्साहन धनराशि प्रदान किया जाएगा।कार्यक्रम का संचालन सहायक आयुक्त उद्योग श्री पंकज कुमार मौर्य द्वारा किया गया, कार्यक्रम संचालन के दौरान उपायुक्त उद्योग श्री शरद टण्डन द्वारा संयुक्त आयुक्त उद्योग महोदय श्री अजय कुमार चौरासिया जी को पुष्पगुच्छ दे कर समानित किया गया। कार्यक्रम में सहायक आयुक्त उद्योग श्री उमेश चन्द्र वर्मा, श्रीमती सारिका सिंह एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति तथा जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के लाभार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अन्त में श्री शरद टण्डन उपायुक्त उद्योग द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की गयी।

डीएम ने सेवा संकल्प अभियान के तहत आंगनबाड़ी केंद्र गोरा बाजार में बच्चों को वितरित किए फल एवं खिलौने

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने आज आंगनबाड़ी केंद्र, प्राथमिक विद्यालय गोरा बाजार पहुंचकर बच्चों से संवाद किया तथा 35 बच्चों को फल एवं खिलौने वितरित किए। जिलाधिकारी ने बच्चों के साथ आत्मीयता से बातचीत करते हुए उनकी पढ़ाई, खान-पान एवं केंद्र पर मिलने वाली सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। जिलाधिकारी ने आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका को निर्देशित किया कि केंद्र पर आने वाले बच्चों को पोषणयुक्त आहार उपलब्ध कराने के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं प्रारंभिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पोषण और शिक्षा दोनों महत्वपूर्ण हैं। आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से बच्चों को बेहतर वातावरण एवं आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयास किए जाएं जिलाधिकारी द्वारा आंगनबाड़ी केंद्र पर उपलब्ध कलांकुर चहक पुस्तिका पिक्चर बुक आदि के उपयोग के संबंध में आंगनबाड़ी कार्यकर्ती बीना देवी से जानकारी ली गई। उन्होंने बच्चों को फल वितरित करते हुए स्वस्थ एवं पौष्टिक आहार के महत्व के बारे में भी बताया। साथ ही, बच्चों को खिलौने प्रदान कर उनके साथ समय बिताया और उनकी गतिविधियों का उत्साहवर्धन किया। जिलाधिकारी ने कहा कि सेवा संकल्प अभियान का उद्देश्य जनकल्याणकारी कार्यों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाते हुए सेवा, सहयोग और संवेदनशीलता की भावना को मजबूत करना है। इस अवसर पर जिला कार्यक्रम अधिकारी सुरेन्द्र कुमार, सीडीपीओ संजय सिंह, मुख्य सेविका संध्या श्रीवास्तव सहित आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री बीना देवी, सहायिका मीना देवी व 3-6 वर्ष के बच्चे उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत वृद्धाश्रम पहुंचे उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित 'सेवा संकल्प अभियान' के अंतर्गत मा0 राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार तथा कृषि निर्यात उ0प्र0 दिनेश प्रताप सिंह ने आज वृद्धाश्रम पहुंचकर वहां निवास कर रहे वृद्धजनों से भेंट की। उन्होंने वृद्धजनों को अंगवस्त्र एवं फल आदि वितरित कर उनका कुशलक्षेम जाना तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर मा0 मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने कहा कि आज देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस पर उन वरिष्ठ नागरिकों के बीच उपस्थित होने का अवसर मिला, जिनका आशीर्वाद हम सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।उन्होंने कहा कि वृद्धजन हमारे माता-पिता एवं अभिभावक के समान हैं तथा उनका सम्मान, सेवा और देखभाल करना हम सभी का नैतिक एवं सामाजिक दायित्व है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में माता-पिता के सम्मान एवं सेवा को सदैव सर्वोच्च स्थान दिया गया है। माता-पिता अपने बच्चों के जन्म से लेकर उनके भविष्य को संवारने तक जीवनभर कठिन परिश्रम और त्याग करते हैं। वे अपनी तपस्या का फल स्वयं के लिए नहीं, बल्कि अपने बच्चों की सफलता और सुख के लिए चाहते हैं। ऐसे में प्रत्येक संतान का दायित्व है कि वह अपने माता-पिता की सेवा करे और उन्हें सम्मान एवं स्नेह प्रदान करे। मंत्री ने कहा कि दुर्भाग्यवश कुछ परिस्थितियों में वृद्ध माता-पिता को वृद्धाश्रम में रहने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा कि ऐसे सभी बच्चों को सद्बुद्धि मिले, जिससे वे अपने माता-पिता को अपने साथ रखें, उनकी सेवा करें और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन में सफलता एवं सुख प्राप्त करें।उन्होंने कहा कि मा0 प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में सेवा, संस्कार और सामाजिक दायित्व की भावना को निरंतर मजबूती मिल रही है। उन्होंने वृद्धाश्रम में उपस्थित सभी वृद्धजनों से मा0 प्रधानमंत्री जी को अपना आशीर्वाद प्रदान करने का आग्रह किया, ताकि वे दीर्घायु एवं स्वस्थ रहें तथा इसी ऊर्जा और समर्पण के साथ देश की सेवा एवं कल्याण के लिए कार्य करते रहें। इस दौरान वृद्धाश्रम में उपस्थित वृद्धजनों ने मा0 मंत्री दिनेश प्रताप सिंह को अपना आशीर्वाद प्रदान किया तथा मा0 प्रधानमंत्री जी के स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना की।इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी वर्षा सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी आर0वी0 सिंह, अधीक्षक धनंजय सिंह, रामबली सिंह, शिव कुमार सिंह, देवेन्द्र सिंह, लखन सिंह, राकेश गुप्ता, आशीष पाठक सहित वृद्धजन उपस्थित रहे।

रायबरेली में लक्ष्य से अधिक हुआ एचपीवी टीकाकरण,40,615 के लक्ष्य के सापेक्ष 40,837 किशोरियों को लगी एचपीवी वैक्सीन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। 14 वर्ष आयु वर्ग की किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से बचाव के लिए जनपद में फरवरी माह से शुरू किए गए एचपीवी टीकाकरण अभियान में लक्ष्य से अधिक उपलब्धि हासिल की गई है। जनपद में निर्धारित 40,615 किशोरियों के लक्ष्य के सापेक्ष 40,837 किशोरियों का टीकाकरण किया जा चुका है, जो लक्ष्य का 100.5 प्रतिशत है।जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने इस उपलब्धि के लिए स्वास्थ्य विभाग की सराहना करते हुए कहा कि यह स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों एवं स्वास्थ्यकर्मियों के साथ शिक्षा, आईसीडीएस तथा अन्य विभागों के समन्वित प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि विभिन्न विभागों के बीच बेहतर समन्वय और प्रभावी कार्ययोजना को दर्शाती है। किशोरियों को एचपीवी संक्रमण से बचाव और भविष्य में सर्वाइकल कैंसर के जोखिम को कम करने की दिशा में एचपीवी टीकाकरण महत्वपूर्ण कदम है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. मनोज कुमार शुक्ला ने बताया कि निर्धारित लक्ष्य से अधिक टीकाकरण स्वास्थ्य विभाग की टीमों की सक्रिय भागीदारी का परिणाम है। स्वास्थ्यकर्मियों ने स्कूलों और स्वास्थ्य केंद्रों के माध्यम से किशोरियों तक पहुंच बनाई। आशा और एएनएम की सक्रिय भूमिका से समुदाय में टीकाकरण के प्रति जागरूकता बढ़ी और अभिभावकों का सहयोग मिला। उन्होंने कहा कि किशोरियों और अभिभावकों को एचपीवी टीके के महत्व के बारे में जागरूक करने का कार्य आगे भी जारी रहेगा।जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी डी.एस. अस्थाना ने बताया कि जनपद में कुल 5,652 टीकाकरण सत्र आयोजित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जिसके सापेक्ष 5,466 सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों के माध्यम से निर्धारित लक्ष्य का 100.5 प्रतिशत टीकाकरण पूरा किया गया। फरवरी माह में एचपीवी टीकाकरण अभियान तीन माह के लिए शुरू किया गया था। अभियान की अवधि पूरी होने के बाद अब एचपीवी वैक्सीन सभी स्वास्थ्य इकाइयों पर नियमित टीकाकरण प्लेटफॉर्म के माध्यम से उपलब्ध है। 14 वर्ष आयु वर्ग की पात्र किशोरियों को निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार यह टीका लगाया जा सकता है। एचपीवी टीकाकरण स्वैच्छिक है और टीकाकरण के दौरान निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन किया जाता है। जनपद में किए जा रहे एचपीवी टीकाकरण की निगरानी यू-विन पोर्टल के माध्यम से की जा रही है।

डीएम की अध्यक्षता में विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका की अध्यक्षता में पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय रायबरेली के पुस्तकालय में विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक सम्पन्न हुई। इससे पूर्व जिलाधिकारी ने नवनिर्मित वोकेशनल लैब का उद्घाटन कर समिति के सदस्यों के साथ लैब भ्रमण किया। जिलाधिकारी ने लैब में उपलब्ध विभिन्न उपकरणों की जानकारी शिक्षक आशुतोष मिश्र एवं अनुराग यादव से प्राप्त की तथा तकनीकी क्षेत्र में विद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। बैठक में प्राचार्य संजय कुमार श्रीवास्तव ने प्राचार्य द्वारा विद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया, गत सत्र के सीबीएसई बोर्ड परीक्षा परिणाम तथा पीएमश्री योजना के अंतर्गत कराए गए कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई। विद्यालय की कक्षा 12वीं का सीबीएसई बोर्ड परीक्षा परिणाम दोनों पालियों में शत-प्रतिशत रहने पर जिलाधिकारी एवं समिति के सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विद्यालय परिवार की सराहना की। बैठक में पीएमश्री योजनांतर्गत आगामी कार्यों की कार्ययोजना एवं सत्र 2026-27 के प्रस्तावित बजट को अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया गया, जिसे समिति के सदस्यों ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया।

'पहरेदार' लिखने के कारण पहले ठुकराई थी 'हनुमान अंश', फिर दोबारा आया बुलावाः शशांक सिंह तोमर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मुंबई। फिल्म 'हनुमान अंश' की

सफलता के बीच फिल्म से जुड़ी एक दिलचस्प कहानी फिल्ममेकर शशांक सिंह तोमर की भी है। फिल्म में सेकंड असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर काम करने वाले शशांक को दरअसल शुरुआत में 'हनुमान अंश' में फर्स्ट असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर जुड़ने का प्रस्ताव मिला था। लेकिन उस समय शशांक अपनी फिल्म 'पहरेदार' लिख रहे थे। अपनी फिल्म की कहानी और स्क्रीनप्ले पर पूरा ध्यान देने के कारण उन्होंने 'हनुमान अंश' का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। शशांक बताते हैं, 'उस समय मैं 'पहरेदार' लिख रहा था और मेरा पूरा ध्यान उसी फिल्म पर था। इसलिए जब 'हनुमान अंश' में फर्स्ट एडी के तौर पर जुड़ने की बात आई, तो मैंने मना कर दिया। मुझे बिल्कुल नहीं पता था कि कुछ समय बाद यही फिल्म दोबारा मेरे पास आएगी।' कुछ समय बाद जब 'पहरेदार' लेखन से आगे बढ़कर तैयारी और रेकी के दौर में पहुंच चुकी थी, तभी शशांक के पास 'हनुमान अंश' की टीम से दोबारा फोन आया। फिल्म में सेकंड असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर जुड़े शोभिनव सत्या को जब नीम करौली बाबा की भूमिका निभानी पड़ी, तो टीम को सेट पर एक अनुभवी असिस्टेंट डायरेक्टर की जरूरत थी। शशांक याद करते हैं, 'मुझे कहा गया–'शशांक, हमें पता है कि तुम फर्स्ट एडी के तौर पर काम करते हो, लेकिन हमारा सेकंड एडी अब फिल्म में अभिनय कर रहा है। हमें किसी अनुभवी व्यक्ति की जरूरत है, क्या तुम आ सकते हो?' उस वक्त मैं 'पहरेदार' की रेकी कर रहा था। मैंने कहा कि विशाल सर के लिए मैं जरूर आऊंगा।' इसके बाद शशांक 'हनुमान अंश' से सेकंड असिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में जुड़ गए। उनके मुताबिक यह अनुभव उनके लिए केवल एक फिल्म की शूटिंग तक सीमित नहीं रहा। 'सेट पर कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिन्हें मैं आज भी पूरी तरह समझा नहीं सकता। मैंने वहां कुछ ऐसे अनुभव किए जिन्हें मेरे लिए सिर्फ संयोग मान लेना मुश्किल है। मैं फिल्म में अपना काम करने गया था, लेकिन वहां से मेरे अंदर बाबा को लेकर एक अलग विश्वास लेकर लौटा।' सबसे दिलचस्प संयोग शशांक के लिए उनकी अपनी फिल्म 'पहरेदार' चुका है और फिल्म पोस्ट-प्रोडक्शन के दौर से गुजर चुकी है। वहीं 'हनुमान अंश' को दर्शकों से मिले प्यार को देखकर शशांक इस पूरी यात्रा को एक खूबसूरत संयोग की तरह देखते हैं। 'पहली बार मैंने फिल्म को मना किया था क्योंकि मैं अपनी फिल्म लिख रहा था। दूसरी बार जब फोन आया, तब मैं उसी फिल्म की रेकी कर रहा था। फिर मैं

रही। 'जिस 'पहरेदार' को लिखने के कारण मैंने पहली बार 'हनुमान अंश' करने से मना किया था, उसी फिल्म से जुड़ी कई चीजें बाद में मेरे लिए बनती चली गईं। मैं इसे किसी चमत्कार के दावे की तरह नहीं कहना चाहता, लेकिन जो मैंने व्यक्तिगत रूप से महसूस किया, उसे मैं कभी भूल नहीं सकता।' आज 'पहरेदार' का निर्माण पूरा हो 'हनुमान अंश' का हिस्सा बना। आज पीछे मुड़कर देखता हूं तो लगता है कि शायद कुछ यात्राएं हम तय नहीं करते, वे खुद हमें अपने साथ ले जाती हैं।' शशांक के लिए 'हनुमान अंश' इसलिए केवल एक फिल्मी क्रेडिट नहीं, बल्कि उनके अपने निर्देशन की यात्रा और 'पहरेदार' से भी गहराई से जुड़ी एक याद बन चुकी है।

तीन स्कूली बच्चे नदी में बह गए,बारिश में बच्चों को स्कूल भेजने की सेफ्टी गाइडलाइंस, बरतें ये 8 जरूरी सावधानियां

चंडीगढ़। हाल ही में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्कूल से घर लौट रहे तीन बच्चे घोंघा नदी के तेज बहाव में बह गए। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, तीनों बच्चों की मौत हो गई। वहीं दिल्ली के जसोला में 15 साल का एक लड़का खुले नाले में बह गया। इन दिनों देश के कई राज्यों में तेज बारिश हो रही है और आए दिन ऐसी घटनाएं सुनने को मिल रही हैं। ऐसे में बारिश के मौसम में स्कूली बच्चों की सुरक्षा को लेकर खास सावधानी बरतना जरूरी है। दरसअल, बारिश के मौसम में जलभराव, खुले नाले और फिसलन भरे रास्ते बच्चों के लिए हादसे का कारण बनते हैं। इतना ही नहीं, बारिश में भीगने और गंदे पानी के संपर्क से सर्दी-खांसी, वायरल फीवर और पेट के संक्रमण जैसी समस्याओं का रिस्क भी बढ़ जाता है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में बारिश में स्कूली बच्चों की सेफ्टी पर बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-मानसून में बच्चों को स्कूल भेजते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? बच्चों के स्कूल बैग में कौन-सी जरूरी चीजें रखनी चाहिए? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. भरत जैन, सीनियर कंसल्टेंट, पीडियाट्रिक्स एंड नियोनेटोलॉजी, कोकून हॉस्पिटल, चंडीगढ़ जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- बारिश में बच्चों को स्कूल भेजते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? जवाब- इस दौरान उनकी स्वास्थ्य और सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए बातों का खास ख्याल रखें- ट्रैवल सेफ्टी का इंतजाम करें। रेनकोट/छाता जरूर दें। अतिरिक्त कपड़े, मोजे रखें। बैग पर वॉटरप्रूफ कवर लगाएं। एंटी-स्लिप जूते / सैंडल पहनाएं। ताजा और पौष्टिक भोजन दें। साफ पानी की बोतल दें। बारिश के सेफ्टी टिप्स सिखाएं, जैसेकि- पानी में भीगो नहीं। जलभराव से दूर रहो। गंदे पानी में मत चलो। बिजली के खंभे से दूर रहो। एआई जनरेटेड सुरक्षित छांव में खड़े हो। सवाल- बारिश में बच्चों का स्कूल बैग कैसा होना चाहिए? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- वॉटरप्रूफ या वॉटर-रेसिस्टेंट बैग हो। बैग पर रेन कवर लगा हो। चौड़ी और आरामदायक स्ट्रैप्स हों। वजन बच्चे की उम्र के अनुसार हो। जिप और सिलाई मजबूत हो। रिफ्लेक्टिव स्ट्रिप्स लगी हों ताकि कम रोशनी में भी दिखे। अतिरिक्त मोजे, छाता और रेनकोट रखने की जगह हो। सवाल- बारिश में बच्चों के स्कूल यूनिफॉर्म से जुड़ी क्या तैयारी करनी चाहिए? जवाब- इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखें- बारिश के दिनों में 2-3 सेट यूनिफॉर्म तैयार रखें। घर से निकलते समय यूनिफॉर्म को बारिश से बचाने के लिए रेनकोट पहनाएं। बैग में एक जोड़ी सूखे मोजे और नैपकिन रखें। ये भीगने पर काम आएगा। स्कूल से लौटने के बाद यूनिफॉर्म तुरंत सुखाएं। यूनिफॉर्म को अलमारी में रखने से पहले पूरी तरह सूखा लें, ताकि उसमें स्मेल या फंगस न लगे। जूते भीगने की स्थिति में एक अतिरिक्त जोड़ी का इंतजाम रखें। सवाल- बारिश में बच्चों के लिए कौन-से फुटवेयर बेहतर होते हैं? जवाब- जो फुटवेयर जल्दी फिसलन से बचाएं और जल्दी सूख जाएं वे बच्चों के लिए

बेहतर होते हैं, जैसेकि- एंटी-स्लिप स्कूल शूज वॉटर-रेसिस्टेंट स्पोर्ट्स शूज- रबर सैंडल, क्रॉक्स-स्टाइल फुटवेयर,क्विक-ड्राई फुटवेयर, सवाल- क्या बच्चों को बारिश में भीगने देना ठीक है? जवाब- नहीं, इससे सर्दी, खांसी और संक्रमण का रिस्क बढ़ता है। अगर वे भीग जाएं तो तुरंत कपड़े बदलकर शरीर को अच्छी तरह सुखाएं। सवाल- बारिश में बच्चों में कौन-सी बीमारियों का रिस्क बढ़ता है? जवाब- बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर हाती है, इसलिए उनमें बीमारियों का रिस्क ज्यादा होता है। नमी और दूषित पानी इस रिस्क को बढ़ा देते हैं। वायरल फीवर, सर्दी-खांसी, डेंगू-मलेरिया, फंगल इन्फेक्शन, पेट का संक्रमण, टाइफाइड,फ्लू, कंजंक्टिवाइटिस (आंखों का संक्रमण) सवाल- बारिश में बच्चों को टिफिन में क्या देना चाहिए और क्या नहीं? जवाब- बच्चों के टिफिन में ताजा, अच्छी तरह पका और आसानी से पचने वाला खाना दें, जैसेकि- क्या दें? घर का बना ताजा खाना। ताजा बना पराठा, रोटी या पूरी। अच्छी तरह पकी हुई सब्जियां। इडली, उपमा या पोहा। मूंग दाल की खिचड़ी। मौसमी फल (कटे हुए नहीं)। सूखे मेवे और भुने चने। क्या न दें? रात का बचा हुआ खाना। मेयोनीज या क्रीम वाली चीजें। बहुत ज्यादा तला-भुना और ऑयली खाना। जल्दी खराब होने वाले डेयरी प्रोडक्ट्स। क्रीम वाली बेकरी आइटम्स। सवाल- क्या बारिश में बच्चों की इम्यूनिटी कमजोर हो जाती है?जवाब- नहीं, बारिश का मौसम सीधे बच्चों की इम्यूनिटी को कमजोर नहीं करता। लेकिन इस मौसम में संक्रमण फैलाने वाले वायरस और बैक्टीरिया ज्यादा एक्टिव होते हैं। इससे बच्चों के बीमारी का रिस्क बढ़ जाता है। सवाल- अगर बच्चा पैदल स्कूल जाता है तो उसे सड़क सुरक्षा से जुड़ी कौन सी बातें बतानी चाहिए? जवाब- बारिश में पैदल स्कूल जाने वाले बच्चों को सड़क सुरक्षा के नियम अच्छी तरह समझाना जरूरी है। बच्चा पैदल स्कूल जाता हैं तो- हमेशा फुटपाथ पर चलो। ट्रैफिक नियमों का पालन करो। दौड़कर सड़क क्रॉस न करो। दाएं-बाएं देखकर सड़क क्रॉस करो। जहां पानी भरा हो, वहां न जाओ। बिजली के खंभों, तारों से दूर रहो। फिसलन वाले रास्तों से दूर रहो। खुले मेनहोल गड्ढों से सावधान रहो। इमरजेंसी नंबर हमेशा पास रखो। सवाल- बारिश में आकाशीय बिजली से सुरक्षा के लिए बच्चों को क्या जरूरी बातें बतानी चाहिए? जवाब- बारिश के दौरान आकाशीय बिजली का रिस्क बढ़ जाता है। खुले स्थान परन खड़े हों। पेड़ों के नीचे न खड़े हों। घर/स्कूल के अंदर रहें। सेफ इमारत में शरण लें। मेटल की चीजें न छुएं। खिड़की, दरवाजों से दूर रहें। सवाल- बारिश में बच्चों के लिए रेनकोट बेहतर है या छाता? जवाब- छोटे बच्चों के लिए रेनकोट ज्यादा सेफ और सुविधाजनक होता है, क्योंकि इसमें दोनों हाथ खुले रहते हैं। बड़े बच्चे छाता इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन तेज हवा या भारी बारिश में रेनकोट ज्यादा उपयोगी होता है। सवाल- बच्चों के स्कूल बैग में कौन-सी जरूरी चीजें रखनी चाहिए? जवाब- इसमें कुछ बुनियादी चीजें रखनी जरूरी हैं। सवाल- क्या बारिश में रोज बच्चों के बाल धोना जरूरी है? जवाब- नहीं, रोज बाल धोना जरूरी नहीं है। बालों में पसीना, गंदगी या नमी ज्यादा हो तो धो सकते हैं। बारिश में बालों को ज्यादा देर गीला न रखें, उन्हें जल्द-से जल्द अच्छी तरह सुखाएं। सवाल- बारिश के मौसम में बच्चों की स्किन और पैरों की केयर कैसे करें? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- भीगने के बाद गीले कपड़े तुरंत बदलें। स्किन को अच्छी तरह सुखाएं। पैरों को रोज साफ पानी से धोएं। पैरों को हमेशा सूखा रखने की कोशिश करें। हल्का मॉइस्चराइजर लगाएं। गीले मोजे लंबे समय तक न पहनने दें। साफ और सूखे जूते-मोजे पहनाएं। नाखून साफ और छोटे रखें। तौलिया, मोजे और जूते शेयर न करने दें। स्किन पर खुजली या रैशेज दिखें तो डॉक्टर से सलाह लें। सवाल- अगर बच्चा बारिश में भीगकर घर आए तो क्या करें? जवाब- ऐसी स्थिति में तुरंत कुछ जरूरी कदम उठाएं, ताकि सर्दी, संक्रमण या अन्य समस्याओं का रिस्क न हो। इन बच्चा भीग जाए तो करें ये काम- तुरंत गीले शरीर, बाल कपड़े बदलें अच्छे से सुखाएं। साफ, सूखे कपड़े पहनाएं। गुनगुना पानी / वार्म ड्रिंक दें। कुछ देर आराम करने दें। पौष्टिक भोजन दें। गीले जूते, मोजे बदलें। दिक्कत हो तो डॉक्टर से मिलें। सवाल- बारिश में बच्चों को हाइजीन की कौन-सी आदतें सिखानी चाहिए? जवाब- बारिश के मौसम में संक्रमण का रिस्क बढ़ जाता है। इसलिए बच्चों को अच्छी हाइजीन की आदतें सिखाना जरूरी है। खाने से पहले हाथ धोएं। बाहर से आकर हाथ-पैर धोएं। गीले कपड़े तुरंत बदलें। रोज नहाने की आदत डालें नाखून साफ और छोटे रखें। साफ / फिल्टर्ड पानी पिएं। खांसते- छींकते समय मुंह ढकें। तौलिया, कपड़े, बोतल शेयर न करें। गीले जूते-मोजे देर तक न पहनें।

अपना कमरा साफ रखें। सवाल- बारिश में स्कूल बंद होने की जानकारी या मौसम का अपडेट कहां से लें? जवाब- इसके लिए आधिकारिक सोर्सेज से जानकारी लें, जैसेकि- स्कूल के ऑफिशियल मैसेज से। स्कूल एप या वॉट्सएप ग्रुप से। स्थानीय मौसम विभाग के अलर्ट्स से।

सवाल- किन स्थितियों में बच्चे को स्कूल नहीं भेजना चाहिए? जवाब- कुछ स्थितियों में बच्चे को स्कूल भेजना परेशानी खड़ी कर सकता है, जैसेकि- बच्चे को बुखार हो।

लगातार खांसी या सांस लेने में परेशानी हो। उल्टी या दस्त की शिकायत हो। आंखों में संक्रमण (आई फ्लू) हो। भारी बारिश या जलभराव से स्कूल पहुंचना असुरक्षित हो।

रिश्ते सलाह से नहीं, साथ देने से संभलते हैं,मुश्किल में फंसे व्यक्ति को तुरंत समाधान न बताएं, उसे सुनें-समझें, यही उसके लिए मदद है

वॉशिंगटन। किसी अपने को दुख, तनाव या असफलता से

जूझते देखकर हमारी पहली प्रतिक्रिया सलाह देने की होती है। लेकिन मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि यह सही नहीं है। सही मदद का मतलब समस्या का हल बताना नहीं, बल्कि उसे यह एहसास दिलाना है कि वह अकेला नहीं है। जब व्यक्ति महसूस करता है कि उसकी बात सुनी और समझी गई है, तभी वह बेहतर फैसला लेने की स्थिति में आता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, संकट के दौर से गुजर रहे व्यक्ति को सबसे पहले भावनात्मक सुरक्षा चाहिए। उसे तुरंत सलाह देने के बजाय पहले उसकी भावनाओं को स्वीकार करना और बिना निर्णय के सुनना अधिक असरदार होता है। इससे भरोसा बढ़ता है और व्यक्ति खुद समाधान तक पहुंचने में सक्षम बनता है। टेनेसी की मनोचिकित्सक एली स्पॉट्स-डीलाजर कहती हैं कि सलाह तब असर करती है, जब व्यक्ति पहले यह महसूस कर ले कि उसकी बात सचमुच सुनी गई है। इसलिए 'यह बहुत कठिन होगा' या 'मैं तुम्हारे साथ हूं' जैसी छोटी बातें ज्यादा प्रभावी साबित होते हैं। लॉस एंजेलिस की विवाह एवं परिवार विशेषज्ञ शेरिल ग्रॉसकोफ के मुताबिक, सलाह देने की जल्दबाजी कई बार सामने वाले से ज्यादा हमारी अपनी बेचैनी को शांत करने की कोशिश होती है। हर समस्या का तुरंत समाधान संभव नहीं होता। ऐसे में अनिश्चितता को स्वीकार करने में मदद करना ज्यादा उपयोगी है। सवाल पूछें, आदेश न दें-वर्जीनिया की क्लीनिकल सोशल वर्कर मैरी मैकलॉफलिन कहती हैं कि व्यक्ति अपनी जिंदगी का सबसे बड़ा विशेषज्ञ खुद होता है। इसलिए 'तुम्हें ऐसा करना चाहिए', कहने के बजाय 'तुम्हें क्या सही लगता है?' या 'तुम्हें सबसे बड़ी चिंता किस बात की है?' जैसे सवाल व्यक्ति को अपने उत्तर खोजने में मदद करते हैं। इससे उसका आत्मविश्वास भी बना रहता है। न्यूयॉर्क की मनोवैज्ञानिक मेलिसा ग्लक बताती हैं कि सीधे पूछ लें- 'तुम्हें अभी मेरी किस तरह की मदद चाहिए? सिर्फ सुनूं या कोई सुझाव दूं?' इससे अनचाही सलाह देने की गलती नहीं होती।सवाल पूछें, बच्चों की देखभाल या छोटे कामों में मदद करें-विशेषज्ञों के अनुसार, बातचीत के दौरान कुछ पल का शांत विराम भी मददगार होता है।

मनोविज्ञान में इसे को-रेगुलेशन कहा जाता है, जिसमें शांत व्यवहार सामने वाले के तनाव को कम करने में मदद करता है। इसके विपरीत, जरूरत से ज्यादा घबराहट दिखाना उसकी चिंता और बढ़ा सकता है। अच्छी भावनात्मक मदद के 5 तरीके-1. पहले सुनें, बाद में सलाह दें। 2. व्यक्ति की भावनाओं को सही ठहराएं, उन्हें कमतर न आंकें। 3. 'मैं क्या करूं?' पूछकर उसकी जरूरत समझें। 4. सलाह देने के बजाय खुले सवाल पूछें। 5. जरूरत हो तो भोजन, बच्चों की देखभाल या छोटे कामों जैसी व्यावहारिक मदद भी कर सकते हैं।

स्वरा बोलीं- 'राम जन्मभूमि फैसले से दुखी हुई थी':आमिर, शाहरुख और सलमान खान को मैसेज कर मांगी थी माफी

मुंबई। एक्ट्रेस स्वरा भास्कर ने हाल ही में कहा कि साल 2019 के अयोध्या राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद वो बहुत दुखी थीं। स्वरा ने बताया कि फैसले के बाद उन्होंने अपने मोबाइल पर मौजूद मुस्लिम कॉन्टेक्ट्स को मैसेज कर माफी मांगी थी। दरअसल, द मिडनाइट आवर को दिए इंटरव्यू में स्वरा भास्कर और फहाद अहमद ने अपनी लव स्टोरी पर बात की। दोनों की लव स्टोरी की शुरुआत एक प्रोटेस्ट से हुई थी, जहां दोनों पहली बार मिले थे। इसके बाद दोनों लगातार सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर साथ काम करने लगे। स्वरा ने बताया कि फहाद का काम करने का तरीका उन्हें काफी पसंद आया। इंटरव्यू में स्वरा भास्कर ने कहा, 'और फिर राम जन्मभूमि का मुद्दा आया। जब इस मामले में फैसला आया था। मुझे लगता है कि वह भी एक बहुत बड़ा मुद्दा था। उस फैसले से मैं बहुत दुखी थी। मैं सोच रही थी कि यह कैसा देश है और ऐसा फैसला कैसे आ सकता है?' उन्होंने आगे कहा, 'मैं उस फैसले से बहुत परेशान थी, क्योंकि मुझे लगा कि यह बहुत गलत और अन्यायपूर्ण था। इसलिए मैंने अपने फोनबुक पर मौजूद अपने सभी मुस्लिम लोगों को मैसेज किया। आमिर खान, शाहरुख खान और सलमान सर से लेकर फहाद अहमद तक, मैंने सभी को मैसेज किया।

मंदाकिनी ने दाऊद इब्राहिम संग तस्वीरों पर दी सफाई,एक्ट्रेस बोलीं- उन्होंने शारजाह में क्रिकेट मैच के लिए नहीं बुलाया था

मुंबई। एक्ट्रेस मंदाकिनी ने दाऊद इब्राहिम के साथ वायरल हुई अपनी 80-90 के दशक की पुरानी तस्वीर पर सफाई दी है। उन्होंने कहा कि दाऊद ने उन्हें शारजाह क्रिकेट मैच के लिए नहीं बुलाया था। मंदाकिनी के मुताबिक, वह एक शो के लिए दुबई गई थीं। इसके बाद क्रिकेट मैच देखने पहुंचीं, जहां यह तस्वीर ली गई थी। उस समय उन्हें नहीं पता था कि तस्वीर विवाद का कारण बनेगी। मंदाकिनी ने एएनआई को दिए इंटरव्यू में कहा कि तस्वीर को लेकर हुई अटकलों और खबरों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं था। एक्ट्रेस ने कहा कि एक कलाकार कई लोगों से मिलता है। कलाकार किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। उन्होंने कहा, 'लोग जो लिखना या कहना चाहते हैं, उस पर हमारा नियंत्रण नहीं होता। एक कलाकार को हजारों लोगों से मिलना पड़ता है और सभी उसके लिए बराबर होते हैं।' मंदाकिनी ने कहा, 'हमारे साथ बहुत सारे लोग थे। ऐसे में किसे चुनें और किसे न चुनें? हम वहां एक शो के लिए गए थे। मुझे दाऊद ने नहीं बुलाया था। मैं दुबई में एक शो के लिए गई थी और फिर मैच देखने पहुंची। उस समय मुझे इसका अंदाजा नहीं था।' मंदाकिनी ने बताया कि बाद में यह तस्वीर विवाद का विषय बन गई। इसे लेकर बड़े स्तर पर अटकलें लगाई गईं। उन्होंने कहा, 'इस विवाद से बहुत नुकसान हुआ। बाद में मुझे पता चला कि इन सभी चीजों को संभालने के लिए एक टीम होनी चाहिए। मैंने हर जगह इन अफवाहों का खंडन किया।' 80 और 90 के दशक में दाऊद दुबई से अपना नेटवर्क चला रहा था। वहां वह अक्सर बॉलीवुड सितारों के लिए आलीशान पार्टियां रखता था। मंदाकिनी के अलावा एक्टर अनिल कपूर की भी शारजाह स्टेडियम की एक पुरानी तस्वीर इंटरनेट पर मौजूद है, जिसमें उनके बगल में दाऊद इब्राहिम दिखाई दे रहा है। हालांकि, इस तस्वीर को लेकर अनिल कपूर की बेटी सोनम कपूर ने सोशल मीडिया पर सफाई दी थी कि उनके पिता वहां राज कपूर और कृष्णा कपूर के साथ सिर्फ क्रिकेट मैच देखने गए थे और उन्हें जानकारी नहीं थी कि उनके पास कौन बैठा है। वहीं, ऋषि कपूर ने खुद स्वीकार किया था कि वे दुबई

में दाऊद से 2 बार मिले थे। मंदाकिनी ने बताया 'राम तेरी गंगा मैली' के चर्चित सीन का सच-मंदाकिनी ने फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' से डेब्यू किया था। इसमें उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई थी। राज कपूर के निर्देशन में बनी यह फिल्म बड़ी हिट रही। हालांकि, फिल्म के कई सीन बाद में चर्चा और विवाद का विषय बने। मंदाकिनी ने गाने 'तुझे बुलाएं ये मेरी बहनें' में सफेद साड़ी में फिल्माए गए झरने वाले सीन और बहस में रहे स्तनपान वाले सीन पर बात की। उन्होंने कहा कि इन दृश्यों का उद्देश्य फिल्म में मासूमियत और पवित्रता को दिखाना था। एएनआई को दिए इंटरव्यू में मंदाकिनी ने बताया कि जब उन्होंने फिल्म की शूटिंग शुरू की, तब वह सिर्फ 16 साल की थीं और उन्हें पूरी तरह अंदाजा नहीं था कि बाद में इन सीन को किस तरह देखा जाएगा। झरने वाले सीन के बारे में मंदाकिनी ने कहा कि राज कपूर ने उन्हें सीन समझाया था।

उनके मुताबिक, इसका उद्देश्य अश्लीलता दिखाना नहीं था, बल्कि फिल्म की कहानी और गंगा के किरदार की पवित्रता को सामने रखना था। एक्ट्रेस ने कहा, 'उनका तरीका ऐसा था कि आप उनसे कोई सवाल ही नहीं करते थे। इतना प्यार से, इतना जेंटल, जैसे आपका फैमिली मेंबर आपसे करवा रहा हो। मुझे कहीं से कोई अश्लीलता महसूस नहीं हुई। कोई खराब या घिनौना एहसास नहीं था। पूरी फिल्म यही थी कि गंगा को अपवित्र करना चाहते थे, लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाए।

आईफा अवॉर्ड्स 2027 अबू धाबी में होगा,सलमान खान, करीना कपूर समेत कई सितारे होंगे शामिल

मुंबई। इंटरनेशनल इंडियन फिल्म एकेडमी अवॉर्ड्स का 27वां संस्करण 22-23 जनवरी 2027 को अबू धाबी में होगा। सलमान खान, करीना कपूर खान और शाहिद कपूर समेत कई सितारे इसमें शामिल होंगे। करण जौहर, वरुण धवन, जाह्नवी कपूर, पंकज त्रिपाठी और अली फजल भी कार्यक्रम का हिस्सा होंगे। दो दिन के इस इवेंट में कलाकार, फिल्ममेकर और म्यूजिक आर्टिस्ट शामिल होंगे। आईफा 2027 का आयोजन अबू धाबी के यास आइलैंड स्थित एतिहाद एरिना में होगा। अबू धाबी में आईफा का यह चौथा आयोजन होगा। कार्यक्रम डिपार्टमेंट ऑफ

कल्चर एंड टूरिज्म अबू धाबी और मिराल के साथ साझेदारी में होगा। दो दिन के इस कार्यक्रम में सितारों की परफॉर्मेंस और अवॉर्ड्स सेरेमनी होगी। 27वां संस्करण 2027 में यास आइलैंड के एतिहाद एरिना, अबू धाबी में आयोजित किया जाएगा। 2025 में 'लापता लेडीज' ने 10 अवॉर्ड्स जीते थे-बता दें कि पहले योजना थी कि आईफा 2026 को अगस्त-सितंबर के महीने में साउथ-ईस्ट एशिया में आयोजित किया जाएगा, लेकिन बड़े स्तर पर तैयारियों और अंतरराष्ट्रीय तारीखों के तालमेल के कारण आयोजकों ने इसे आगे बढ़ाकर अब 2027 की शुरुआत में आयोजित करने का फैसला किया।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।